श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ का वार्षिक मुखपत्र

माणिभद्र

महावीर जन्म वाचना दिवस

भादवा सूद एकम्, मंगलवार

दिनांक 6 सितम्बर, 1994

36 वाँ पुष्प

वि. सं. 2051

कार्यालय :

आत्मानन्द जैन सभा भवन

घी वालों का रास्ता

जयपुर

□ फोन : 563260

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ, जयपुर
की
स्थायी प्रवृत्तियाँ

1 श्री सुमति नाथ भगवान का तपागच्छ मन्दिर
घीवालो का रास्ता, जयपुर।

2 श्री सीमधर स्वामी मन्दिर
पाँच भाइयो की कोठी, जनता कॉलोनी, जयपुर।

3 श्री रिखब देव स्वामी मन्दिर
ग्राम बरखेडा (जयपुर)

4 श्री शान्ति नाथ स्वामी मन्दिर
ग्राम चन्दलाई (जयपुर)

5 श्री जैन चित्रकला दीर्घा एव भगवान महावीर के जीवन चरित्र का भित्ती चित्रो मे सुन्दरतम चित्रण, सुमति नाथ भगवान का तपागच्छ मन्दिर, घीवालो का रास्ता, जयपुर

6 श्री आत्मानन्द सभा भवन, घीवालो का रास्ता, जयपुर

7 श्री जैन श्वेताम्वर तपागच्छ उपाश्रय, मारूजी का चौक, जयपुर

8 श्री वर्धमान आयम्बिल शाला, आत्मानन्द जैन सभा भवन, जयपुर

9 श्री जैन श्वे भोजनशाला, आत्मानन्द जैन सभा भवन, जयपुर

10 श्री आत्मानन्द जैन धार्मिक पाठशाला

11 श्री जैन श्वे मित्र मण्डल पुस्तकालय एव सुमति ज्ञान भण्डार

12 श्री समुद्र-इन्द्रदिन्न साधर्मी सेवा कोष

13 स्वरोजगार प्रशिक्षण, उद्योग शाला, सिलाई शाला

14 जैन उपकरण भण्डार, घीवालो का रास्ता, जयपुर

15 "माणिभद्र" वार्षिक मुख पत्र

ऐतिहासिक तीर्थ

श्री अद्भुतजी, कैलाशपुरी, उदयपुर (राजस्थान)

16वें तीर्थंकर भगवान श्री शांतिनाथ जी
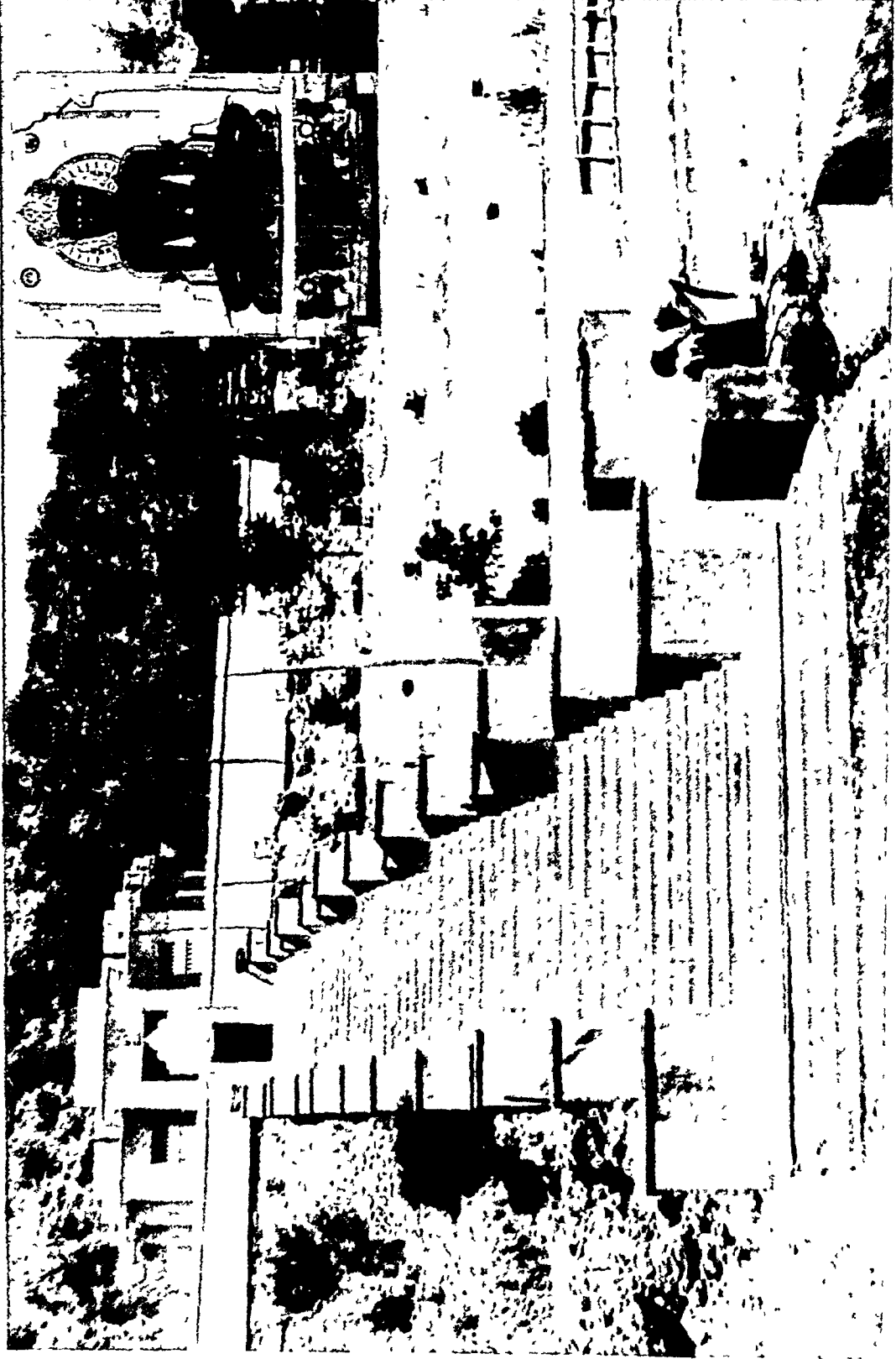
सौजन्य:

हीराभाई मंगलचंदजी चौधरी परिवार

मंगलचंद ग्रुप

"माणिभद्र" स्मारिका का 36वां अक पूर्ववत् यथा समय श्री संघ की सेवा में प्रस्तुत करते हुए हार्दिक प्रसन्नता है। श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ, जयपुर के लिए यह आत्म-सन्तोष एवं गौरव का विषय है कि 36 वर्ष पूर्व प्रारम्भ की गई यह गतिविधि निर्बाध रूप से जारी है।

महासमिति के वर्ष 1994-96 के लिए चुनाव सम्पन्न हुए तथा 17 अप्रेल, 94 को नव-निर्वाचित महासमिति ने कार्य भार सम्भाला। इसके तत्काल पश्चात् आचार्य श्री पद्मसागरसूरीजी म. सा. एवं आचार्य श्री जनकचन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. का जयपुर में शुभागमन हुआ। दोनों के ही जयपुर प्रवास के समय हुए विविध कार्यक्रमों का विवरण इसमें सम्मिलित किया गया है।

इस वर्ष भी पूज्य मुनिराज एवं साध्वीजी म. सा. दोनों का चातुर्मास श्री संघ में हो रहा है। आ. श्री पद्मसागरसूरीजी म. सा. के शिष्यरत्न मुनिराज **श्री निर्मलसागरजी म. सा.** आदि ठाणा-3 एवं आ. श्री नीतिसूरीजी म. सा. की समुदायवर्ती साध्वी श्री आनन्दश्रीजी म. सा. की सुशिष्या **सा. श्री सरस्वतीश्रीजी म.** आदि ठाणा-2 चातुर्मास हेतु यहाँ विराजित हैं और आपकी निश्रा में विविध धार्मिक अनुष्ठान एवं कार्यक्रम सम्पन्न हो रहे है। पूज्य **मुनि श्री उदयसागरजी म. सा. ने अपने तीसरे मास क्षमण की तपस्या यहीं पर पूर्ण की** तथा दि. 4 अगस्त, 94 को आपका मास क्षमण का पारणा हुआ है।

उदयपुर से 22 कि. मी. दूर स्थित कैलाशपुरी तालाब के निकट स्थित अद्भुतजी तीर्थ के नाम से प्रख्यात जिनालय में विराजित भगवान श्री शान्तिनाथ स्वामी का चित्र मय संक्षिप्त इतिहास के प्रकाशित किया जा रहा है। चित्र श्री हीराभाई चौधरी, मंगलचन्द ग्रुप के सौजन्य से प्रसारण हेतु प्राप्त हुआ है।

इस अंक को प्रकाशित करने में पूर्ववत् रचनाकारों ने अपनी कलम से इसको पठनीय एवं संग्रहणीय बनाने में योगदान किया है जिसके लिए सम्पादक-मण्डल उनका आभारी है। विज्ञापनदाताओं का सहयोग भी उदारमना प्राप्त हुआ ही है जिसके लिए सभी का धन्यवाद।

रचनाएं प्रकाशित करते समय इस बात का पूरा प्रयास किया गया है कि कोई भी ऐसी सामग्री न प्रकाशित हो जाय जो किसी की भावना को ठेस पहुंचाये अथवा वाद-विवाद का कारण बने, फिर भी लेखकों के विचार एवं मान्यताएँ उनकी अपनी हैं और वे ही इसके लिए उत्तरदायी हैं। असावधानीवश रही हुई त्रुटियों के लिए सम्पादक-मण्डल अग्रिम रूप से क्षमाप्रार्थी है।

आशा है यह अंक भी धर्मप्रेमी एवं जिज्ञासु पाठकों के लिए उपयोगी एवं सग्रहणीय सिद्ध होगा, इसी आशा एवं शुभकामनाओं सहित,

6 सितम्बर, 1994

—सम्पादक मण्डल

अनुक्रमणिका

(चित्र परिचय)

श्री अद्भुतजी

कैलाशपुरी, उदयपुर का ऐतिहासिक जैन तीर्थ

राष्ट्रीय राजमार्ग न 8 पर उदयपुर मे 22 कि मी पर कैलाशपुरी के पास तालाब के किनारे अरावली की सुरम्य पहाडियो की तलहटी मे नागदा के प्राचीन जैन तीर्थ जीर्ण अवस्था मे अपनी आखिरी घडियाँ गिन रहे थे। कुछ वर्षों पूर्व सडक से श्री शान्तिनाथजी के मन्दिर तक पक्की सीढियाँ बनाई गई तथा बाद मे यहाँ मलबा हटाकर जीर्णोद्धार एव सफाई का कार्य प्रारम्भ किया गया जो आज भी चल रहा है। कही कही प्राचीन मन्दिरो का 5 से 7 फुट भाग मलवे मे दबा हुआ है। मलबा हटाने, परकोटा बनाने, पानी की व्यवस्था तथा प्राचीन बहुमूल्य बिखरे पत्थरो को इकट्ठा करने मे करीब 3-4 लाख रुपया खर्च हो चुका है, काम चल रहा है।

卐 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि—उपलब्ध इतिहास के अनुसार नागहृद या नागद्रह प्राचीन समय मे मेवाड की पाटनगरी एव राजधानी रही थी। सैकडो वर्षो तक इस स्थान की जाहो जलाली रही थी, माडवगढ के भारतीय भवन विशाल विद्यालय के सस्थापक आचार्य भट्ट गोविंद जी को यह स्थान राजा भोज ने बक्शीस मे दिया था। दिल्ली के सुल्तान शमसुद्दीन, सल्तमस ने मेवाड पर चढाई की। भयकर सघर्ष हुआ, धार्मिक स्थानो को तोडा गया, धीरे धीरे काल चक्र के थपेडो ने इस ऐतिहासिक स्थान को वीरान स्थल के रूप मे लाकर खडा कर दिया, पर जैनियो ने आज भी इस स्थान को एक तीर्थ के नाम से कायम रखा है तथा आगे भी रहेगा।

卐 इस तीर्थ को किसने बनाया, कब बना इसका इतिहास नही मिला, पर श्री मुनि सुदर सूरीजी द्वारा रचित "नागहृद तीर्थ स्तोत्र" मे यह उल्लेख है कि सप्रति राजा ने इस तीर्थ का निर्माण कराया, जिसका उल्लेख इस प्रकार है—

> न सप्रति त नृपति स्तवीति क, मुखाकृता येन जगजाना सदा।
> पाश्र्व विश्वे हित शुभदायक त्वत्तीर्थ कल्पद्रुम रोपणा दिह ॥
> खोमाण भू भृत कुल जस्त तोऽभूत्, समुद्रसूरी स्ववश गुरुर्य ।
> चकार नागहृद पार्श्व तीर्थ, विद्याम्बुधिदिग्वसनान् विजित्य ॥

श्री समुद्रसूरि जी की पट्टावली का समय पाँचवी शताब्दी माना गया है और यह तीर्थ इससे पूर्व का है। यहाँ तालाब के किनारे पहाडी की तलहटी मे एक पार्श्वनाथ जी

का मन्दिर जीर्ण अवस्था में है जिसका शिखर पाषाण का बना हुआ अच्छी हालत में है, श्री अबड़ पार्श्वनाथ जी का है मूर्ति नहीं है, पर पभाषण पर 1192 का लेख है जिसमे पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिष्ठा का विवरण है। पास ही एक पद्मावती जी का मन्दिर भी है।

卐 पूज्य मुनिराज श्री हिमांशु विजय जी म. सा. के अनुसार—प्राचीन लेखन के आधार पर इस स्थान का नाम 'नागहृद' था। हृद का अर्थ जलाशय अथवा तालाब से है। प्राचीन शिलालेखों में इसका नाम 'नागद्रह्' भी पाया जाता है, धीरे धीरे साधारण भाषा में उच्चारण मे द्रह् शब्द के स्थान पर 'दा' बोला जाने लग गया, इस प्रकार 'नागद्रह्' का नागदा हो गया। यहाँ पर वर्तमान में एक मात्र मन्दिर अच्छी अवस्था में है जिसमें श्री शान्तिनाथ भगवान की श्याम वर्ण की पद्मासन युक्त विशालकाय मनोहर अलौकिक प्रतिमाजी विराजमान हैं। पव्वासन में खुदे हुए लेख में इस स्थान का नाम 'देवकुल पाटण' लिखा हुआ है। इससे यह मालूम होता है कि किसी समय यह गांव देलवाड़ा तक फैला हुआ था। वि. सं. 1494 में राणा कुम्भा के समय मे इस सम्पूर्ण स्थान का नाम 'देवकुल पाठक' था। महाराणा मोकल एवं उनके पुत्र महाराणा कुंभा के समय तक यह एक समृद्धिशाली जाहोजलाली प्राप्त, अनेक मन्दिरो, तालाबों, बावड़ियों, भवनों से परिपूर्ण रहा, राणाओं ने मुसलमान बादशाहों से समय-समय पर खूब संघर्ष किया। इस स्थान के उत्तर दिशा में 6 कि: मी. पर देलवाड़ा गाँव बसा हुआ है जहाँ आज भी चार अति प्राचीन एवं ऐतिहासिक जिनालय विद्यमान है। मेवाड धर्म प्रधान प्रान्त रहा है। यहाँ के राणाओं ने सदा धर्म की रक्षा की। इस कारण 1300 वर्षो तक शिशोदिया वंश के राणाओं के हाथ में शासन की बागडोर रही। किसी समय यहाँ पर 250 झालरे मन्दिरों में बजती थीं। सन्ध्या के समय हजारों धर्म प्रेमी लोग देव मूर्तियों के दर्शन कर भाव विभोर हो उठते थे।

卐 श्री जिनतिलक सूरि तीर्थ माला के अनुसार श्री नेमिनाथ भगवान का मन्दिर एवं श्री सोमतिलक सूरिजी के स्त्रोत के अनुसार श्री पेथडशाह ने इस स्थान पर नेमिनाथ भगवान का मन्दिर बनवाया जिसका आज कोई पता नहीं है। आज केवल श्री शान्तिनाथ भगवान का मन्दिर विद्यमान है जिसमें श्याम वर्ण की पद्मासन युक्त श्री शान्तिनाथ भगवान की प्रतिमा जी विद्यमान है जिसकी पद्मासन से ऊँचाई 131 इन्च है। परिकर होने का भी विवरण है पर आज परिकर नहीं है। पद्मासन के ऊपर एक लेख है जिसके अनुसार—

1494 में माघ सुदी 11, गुरुवार को देवकुल पाटण नगर में राणा मोकल के पुत्र कुभकरण के राज्य में श्रेष्ठिवर्य सारंग द्वारा इस मूर्ति को भरा, आचार्य श्री जिनसागर सूरि से प्रतिष्ठा कराई। जिस समय नागदा नगर जर्जरित होकर टूटा उस समय यह नगर क्षैत्र देवकुल पाटण का एक विभाग रहा था। प्रतिमाजी में विशेषता होने से आज अद्भुत जी के नाम से विख्यात है।

मन्दिर जी के सभा मण्डप मे खम्भो पर 1879 का लेख है, परीकरयुक्त श्याम वण की श्री आदिनाथ भगवान की एक प्रतिमा जी जिस पर 1021 के वर्ष का लेख है खुदाई से प्राप्त हुई है।

समय-समय पर इस मन्दिर का जीर्णोद्धार होता रहा, आखिरी जीर्णोद्धार सेठ लल्लूभाई पाटणवाला द्वारा कराया गया। उसके बाद श्री मेवाड मन्दिर जीर्णोद्धार कमेटी, उदयपुर द्वारा सडक से मन्दिरजी तक पक्की सीढी बनाई गई। शा. तेजपाल गोकुलचन्दजी राजनगर वाला निवासी उदयपुर द्वारा भी जीर्णोद्धार का कार्य कराया गया। इस प्रकार इस वीरान जगल मे भी समय-समय पर जीर्णोद्धार कार्य करा इस तीर्थ को आज भी जीवित रखा है।

मुख्य मन्दिर के दाहिनी तरफ एक विशाल टूटा फूटा खण्डहर के रूप मे श्री केशरियाजी के मन्दिर के आकार का एक मन्दिर विद्यमान है जिसमे मूर्तियाँ नही हैं। इसके आगे अति प्राचीन एक और कलात्मक खण्डहर मन्दिर है जिसकी बनावट एव शिल्प सिरोही के पास के मीरपुर के मन्दिरो के समान है। इस क्षेत्र की एक किलोमीटर की परिधि मे स्थान-स्थान पर कई मन्दिरो के अवशेष नजर आते है, स्थान-स्थान पर लोगो ने जमीनो पर परकोटे बनाकर खेती करना प्रारम्भ कर दिया है। खेतो के चारो तरफ बनाये गये परकोटो मे आज भी सैकडो कलात्मक पत्थर मन्दिरो के अवशेष चुने हुए दिखाई दे रहे हैं।

जनवरी 1988 से यहाँ पर जीर्णोद्धार का कार्य प्रारम्भ किया गया है एव आज भी कार्य चल रहा है। ठहरने के लिये तीन चार कमरे, शौचालय, फुलवारियाँ तथा पानी की व्यवस्था के लिये ट्यूबवेल बनाया गया। नियमित रूप से पूजा पाठ होता है।

भोजनशाला एव धर्मशाला निर्माण करने के लिये 3 बीघा जमीन खरीदी जा चुकी है। भोजनशाला, धर्मशाला एव जीर्णोद्धार के लिये धन की आवश्यकता है।

आप भी अपना अमूल्य समय निकाल कर एक बार अवश्य इस अति प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर रूपी तीर्थ मे दर्शन करने सपरिवार इष्ट मित्रो सहित पधारने का कष्ट करावें ऐसा हमारा आग्रह है।

इस महान एव प्राचीनतम तीर्थ के जीर्णोद्धार मे अधिक से अधिक सहयोग राशि भिजवा कर महापुण्य के भागी बने। यही हमारा आपश्री से निवेदन है।

सपर्क सूत्र
के एल जैन
18, गणेश घाटी
उदयपुर (राज)–313 001

निवेदक
श्री जैन श्वेताम्बर अद्‌भुतजी तीर्थ ट्रस्ट

श्री माणिभद्र वीर, आगलोड तीर्थ
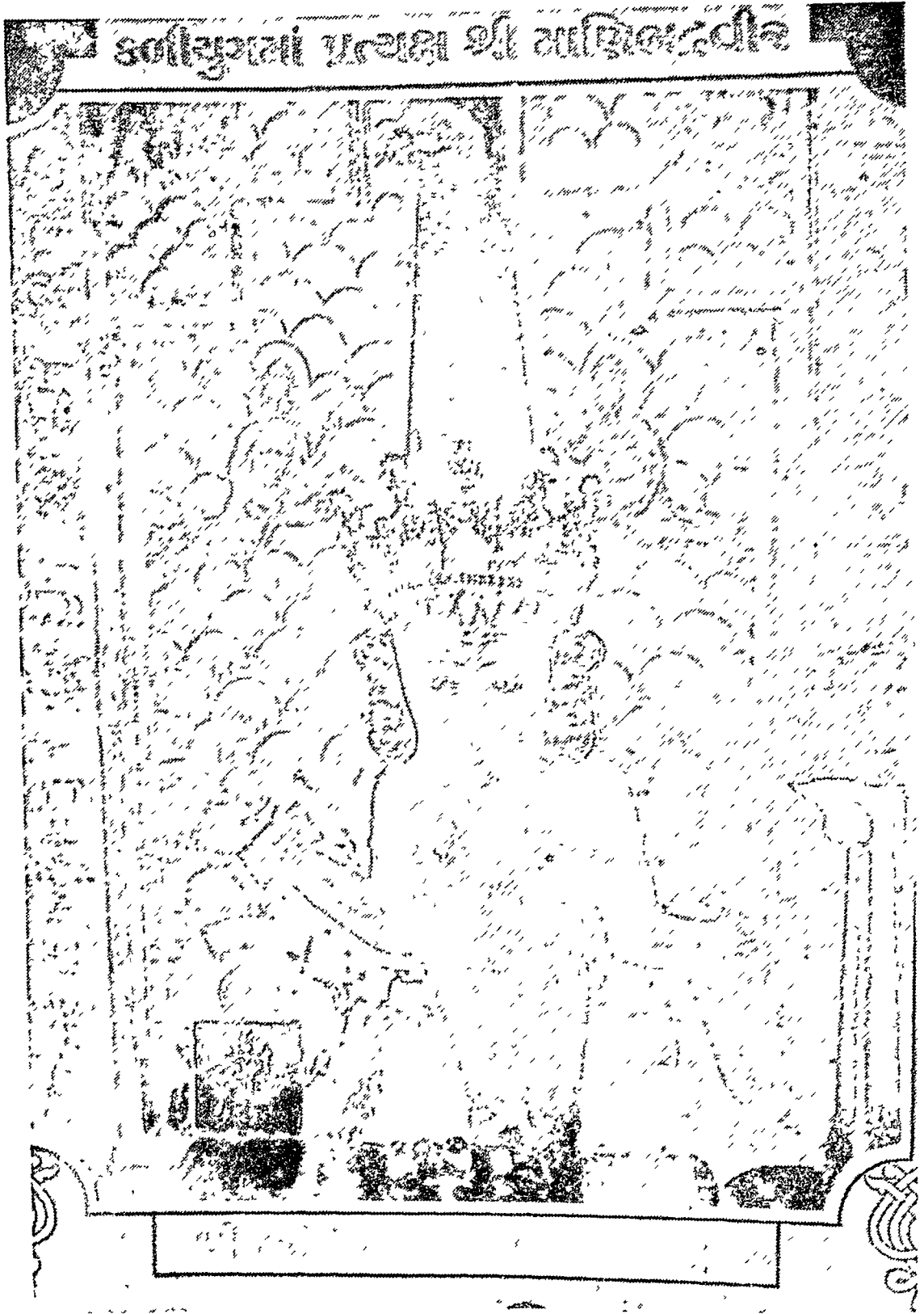
श्री जैन श्वेताम्बर, तपागच्छ संघ, जयपुर की स्मारिका "माणिभद्र" के
36वें अंक में प्रसारण हेतु मोहन लाल दोसी परिवार, जयपुर, के सौजन्य से प्राप्त

मुनिराज श्री निर्मल सागर जी म. सा.

आपका जन्म दिनांक 24-6-64 को राजकोट में हुआ। आपके सांसारिक पिता नटवरलाल मेहता तथा गुणवति बहन माताजी थे। आपकी दीक्षा माघ सुदी दशम 2034 के दिन आचार्य श्री पद्म सागर सूरीजी म. सा. की पावन निश्रा में 14 वर्ष की अल्प आयु में हुई। 30 वर्ष की आयु मे से 16 वर्ष का दीक्षा पर्याय हो चुका है। अब तक आपके छः चातुर्मास स्वतंत्र रूप से हो चुके हैं।

वर्ष 1994 का यह चातुर्मास जयपुर मे आपकी पावन निश्रा में सम्पन्न हो रहा है।

□ सम्यक दर्शन प्राप्ति के लिए सर्वप्रथम नम्रता चाहिए। धर्म क्रिया में, जीवन की साधना में जिसे पूर्ण विश्वास माना गया वह है परमात्मा में पूर्ण विश्वास। परमात्मा के विचारों के प्रति पूर्ण विश्वास, मैं उसे भाव पूर्वक ग्रहण करूं। सम्यक दर्शन का मतलब है परमात्मा के वचनों को श्रद्धापूर्वक स्वीकार करना। जहां स्वीकार होगा वहीं समर्पण आएगा। जहां स्वीकार का अभाव है वहां समर्पण में पूर्णता कभी नहीं मिलेगी। समर्पण में वह प्रचण्ड शक्ति है कि व्यक्ति जीवन का रक्षण वहीं प्राप्त करता है।

समर्पण से ही सम्यक दर्शन की प्राप्ति

आचार्य श्री पद्मसागरसूरीजी म. सा.

(जयपुर प्रवास के समय दिए गए प्रवचनों में सउद्धृत अंश)

प्रस्तोता—**मोतीलाल भड़कतिया**

सम्यक दर्शन प्राप्ति के लिए सर्व प्रथम नम्रता चाहिए। आप नल के पास पानी भरने जावे और यदि उसके ऊपर अपना घड़ा रखें तो एक बून्द पानी नहीं आएगा। प्राप्ति के लिए सबसे पहले नम्रता चाहिए। यही घड़ा जब आप नल के नीचे रखते है तो वह भर जाता है। कुए में आप पानी भरने जावे और बाल्टी को यदि नमायें नही तो बाल्टी कभी भरने वाली नही। आपका सारा प्रयास निष्फल जाएगा। आप रेल में यात्रा पर जाते हैं आपने देखा होगा कि जब तक सिग्नल खड़ा रहेगा कोई ट्रेन स्टेशन के अन्दर जा नही सकती लेकिन जैसे ही सिग्नल डाउन हुआ, वह नम्र बना, नमस्कार किया ट्रेन अन्दर आ गई। जहां तक आपका माथा खड़ा हुआ है, यह माथा-रूपी सिग्नल खड़ा हुआ है वहां तक धर्म कभी प्रवेश करने वाला नहीं है। यदि माथे में नम्रता और लघुता आ जाय तो सारे धर्मो का प्रवेश सहजता से हो जावेगा। हर व्यक्ति अपने जीवन में अहंकार से घिरा हुआ है और हर तरीके से हम उसे प्रगट करते है। ज्ञान का अजीर्ण, तप का अजीर्ण या कोई शुभ कार्य किया हो, आप देखेगे कि उसको प्रगट करने के लिए लोग अलग-अलग तरीके अपना लेते है। यदि मेरे जीवन में अशुभ कर्म का ऐसा उदय चलता हो, ऐसा कोई कारण बन जाय कि मैं अपना अहम् प्रगट करूं तो आपका तरीका अलग होगा, मेरा तरीका अलग होगा। व्यक्तियों के

तरीके अलग-अलग परन्तु किसी न किसी प्रकार अपने अहम् को प्रगट तो करेंगे ही। मैं यदि आपसे कहू कि इस ससार मे सबसे सुन्दर व्यक्ति कौन तो कहेगे कि मैं। सबसे बडा व्यक्ति मैं हूँ, सबसे महान मैं हूँ। मैं बडी आसानी से सिद्ध करके बता दूँ और आपको स्वीकार करना पडेगा।

यह वर्तमान दुनिया, यह ससार का भूगोल आपने देखा होगा, पढा होगा। पच्चीस हजार माइल की यह दुनिया नॉथ पोल से साउथ पोल तक है। सातो ही महाद्वीप इसमे है। वृत्त आठ हजार माइल का है नॉर्थ से साउथ पोल तक। इस भौतिक ससार के अन्दर यदि मैं पूछूं कि इस विश्व मे सबसे सुन्दर देश कौन सा है तो आप गर्व से कहेग कि हमारी आर्य भूमि भारत देश। यह ऋषि मुनियो को जन्म देने वाली पवित्र भूमि। सारा ही देश हमारे लिए पवित्र है, तीथ तुल्य है। अपने देश का गौरव सभी को होता है। वह तुरन्त स्वीकार करेगा कि मेरा यह देश भारत सबसे सुन्दर है दुनिया मे। पच्चीस हजार माइल की दुनिया से निकल कर आप भारत मे आ गए। अब मैं पूछू कि सारे भारत के अन्दर सबसे सुन्दर प्रात कौन सा है तो कहेगे कि राजस्थान। वीरो की भूमि, दानियो की भूमि, महान कम भूमि जहाँ बडे-बडे महान पुरुष पैदा हुए। अब आगे मैं आपसे पूछूं कि राजस्थान मे सबसे सुन्दर शहर कौन सा है तो सहज मे बोलेगे कि सारे विश्व मे प्रख्यात शहर– जयपुर। अब जयपुर मे सबसे सुन्दर एरिया कौन सा तो जौहरी बाजार। हार्ट ऑफ दी सिटी, व्यापार का मुख्य केन्द्र। जयपुर मे आने वाले सभी इस एरिया मे आयेंगे। आगे यदि मैं आपसे पूछू कि जौहरी बाजार मे सबसे सुन्दर जगह कौनसी? आप कहेगे कि यह धर्म स्थान जहा पर धर्म क्रियाये चलती हैं। यहा पर साधु मुनिराज रहते हैं और अब मैं आपसे पूछूंगा कि इस धर्म स्थान मे सबसे सुन्दर कौन तो क्या कहेगे? मैं हूँ ना, मैं स्वय मौजूद हूँ। बडी आसानी से मैंने अपने अहम् को सिद्ध कर लिया कि सारी दुनिया मे सबसे महान व्यक्ति मैं हूँ और आप कबूल भी कर गए कि बात सही है। तो किसी न किसी रूप मे व्यक्ति अपने अहम् को प्रगट कर लेता है, अहम् की वकालत कर लेता है परन्तु यह नही सोचता कि इसके द्वारा मैं अपने भविष्य को हार रहा हूँ। मैं अपने वर्तमान मे भविष्य को अन्धकारमय बना रहा हूँ। मेरी सारी साधना मलीन हो गई। मेरा महा मूल्यवान सम्यक दर्शन इसके कारण मूर्छित बना।

धम क्रिया मे, जीवन की साधना मे जिसे पूण विश्वास माना गया वह है परमात्मा मे पूर्ण विश्वास। परमात्मा के विचारो के प्रति पूर्ण विश्वास, मैं उसे भाव-पूर्वक ग्रहण करू। सम्यक दर्शन का मतलब है परमात्मा के वचनो को श्रद्धापूर्वक स्वीकार करना। जहा स्वीकार होगा वही समर्पण आएगा। जहा स्वीकार का अभाव है वहा समपण मे पूर्णता कभी नही मिलेगी। समपण मे वह प्रचण्ड शक्ति है कि व्यक्ति जीवन का रक्षण वही प्राप्त करता है। समपण मे ही स्व-रक्षण है। कबीरदासजी के आश्रम के सामने से किसी मरे हुए व्यक्ति की अर्थी ले जा रहे थे। मरने वाला व्यक्ति युवान था। सन्त कबीर की आंखो मे आँसू आ गए। आनन्दघनजी महाराज उसी रास्ते से जा रहे थे। उन्होने कहा कि सन्त कबीर जी आपकी आँखो मे आँसू किस बात के। किस दर्द के आँसू हैं। कबीर ने अपनी भाषा मे कहा

चलती चक्की देख कर दिया कबीरा रोय ।
दो पाटन के बीच में साबुत बचा न कोय ।।

संसार की क्रूरता देख कर मेरे अन्दर की करुणा आँखों से बाहर आ गई। आनन्दघन-जी महाराज ने कहा कि तुम्हारे रोने से ससार का क्रम बदलने वाला नहीं है, शाश्वत व्यवस्था में कोई परिवर्तन होने वाला नही है। परन्तु तुम्हारे समाधान के लिए एक उपाय बताता हूँ :

चक्की चलती है तो चलने दे,
तू कबीरा क्यों रोय ।
कीली से जा लगे तो बाल न बांका होय ।।

घर के अन्दर चक्की चलती है, अनाज पिसता है। आपने देखा होगा कि दो चार दाने कीली के अन्दर चले जाते हैं। जो अन्दर चले गए, समर्पण स्वीकार कर लिया उनका पूर्ण रक्षण हो जाता है, उनका बाल भी बांका नहीं होता। परन्तु जो दाने बीच में आ गए साफ हो गए। संसार की चक्की में अच्छे-अच्छे व्यक्ति पिस जाते है परन्तु जिन्होंने परमात्मा का शरण ले लिया, समर्पित हो गए उनका रक्षण हो गया, वहां कर्मो का आक्रमण होता नहीं, वहां मृत्यु की परम्परा जीवित रहती नही। हमारी सारी साधना मौत को मारने के लिए है।

सम्यक दर्शन की शुद्धि के लिए, सम्यक-दर्शन की प्राप्ति के लिए सर्वप्रथम अपने विचारों को शुद्ध करना पड़ेगा। संसार पर विश्वास है परन्तु परमात्मा पर विश्वास नहीं, परमात्मा के विचारों पर विश्वास का अभाव है। कभी रोगी हो गए, डॉक्टर के पास गए और उसने जो कुछ कह दिया उस पर कोई तर्क नही करते। डॉक्टर जो कुछ कहेगा हम बराबर मानेगे। इस शरीर के आरोग्य के लिए आपको तर्क से ऊपर जाना पड़ेगा, जाना पड़ता है लेकिन जब साधना का प्रसंग आ जाय तो तर्क को साथ लेकर आयेंगे—होगा या नहीं। पहले से ही डाउट-फुल। श्री कृष्ण ने गीता में बड़ी सुन्दर बात बताई—जो आत्मा संशय लेकर मेरे पास आएगा, अर्जुन याद रखो सर्वनाश लेकर जाएगा। विश्वासपूर्वक परमात्मा के कथन को स्वीकार करना सम्यक दर्शन है, वही राइट फेथ है, सम्पूर्ण विश्वास है। चाहे कैसा भी प्रसंग आ जाय, जीवन में कितना भी बड़ा कष्ट आ जाय जरा भी अपनी प्रतिज्ञा से भ्रष्ट नहीं बनेंगे, विचलित नहीं होंगे। सैल्फ कांफिडेंस अपने में क्रियेट करना है तभी साधना में प्राण आते हैं, सम्यक दर्शन की प्राप्ति होती है।

साधु जीवन एवं अभिनन्दन समारोह

साधु जीवन के विषय में ऐसी व्यवस्था परमात्मा ने बताई जो अभूतपूर्व है। यदि साधु साधना में मगन रहे तो अपूर्व स्वाद का अनुभव करे, अमृत का पान करे और यदि साधु मर्यादा से विपरीत आचरण करे तो कवि ने कहा :

साधु जीवन कठिन है, चढ़ना पेड खजूर ।
चढ़े तो रस भरपूर है, गिरे तो चकनाचूर ।।

यदि संयम श्रेणी के अन्दर, आत्मा के विकास के अन्दर साधना के द्वारा यदि सफलता प्राप्त करले तो अमृत का पान करे, अपूर्वता आ जाय परन्तु यदि संसार की प्रसिद्धि मे, प्रशंसा में अपने जीवन का पतन कर लिया तो ज्ञानियों ने कहा कि चकना-चूर। सारे जीवन का सर्वनाश कर ले। साधु जीवन में यह सारी बाते बहुत महत्त्व-पूर्ण है। जहर का कैसे प्रयोग किया जाता

है। यह तो जगत है बहुत बडी प्रशसा करेंगे लेकिन वह पचे नही तो साधु का पतन निश्चित है। इसीलिए हमारे गुरु भगवन्त कहा करते थे कि ससार की प्रसिद्धि और प्रशसा से बच कर रहना, यह बडे घातक तत्त्व है। फिर भी जगत का स्वभाव है। यह जो भी अभिनन्दन आदि आप करते हो यह तो साधु जीवन का अभिनन्दन हुआ करता है। यह जो भी आप करते है यह सब गुरु की कृपा है, जगत का व्यवहार है। सघ की भावना का आदर करने के लिए कई बार उपेक्षा भी करते हैं। चलो भाई, इनकी भावना है।

मेरे पास काफी वर्षो से जयपुर सघ का आमत्रण था। प्रथम श्री हीराचन्दजी वैद मेरे परिचय मे आए। आज से वीस वर्ष पहले उन्होने बम्बई मे मुझ से कहा कि इस तरह से वहा पर सामाजिक धार्मिक कार्यो मे हमारा सघ भाग लेता है। उनका कई बार मुझसे आग्रह रहा और यहा के सघ के भाइयो से भी मेरा परिचय हुआ। इसी कारण से मेरा यहा आना हुआ दिल्ली जाते हुए। बीकानेर नागौर आदि कई सघो का आग्रह था कि आप इधर से दिल्ली जाइये। मैंने कहा कि जयपुर वालो का कई वर्षो से आग्रह है। सारी दुनिया जयपुर आती है तो मैं क्यो वचित रहूँ। लोगो का प्रेम है। प्रेम एसी चीज है जो कभी ठुकराया नही जाता। साधु हमेशा भावना के भूखे होते है। आपके अतर की भावना को देख कर ही साधु आते है, बिना आमत्रण आते हैं। उसी भावना और प्रेम को लेकर मैं यहाँ आया और जब यहाँ आकर देखा तो मुझे बडा आत्म सतोष मिला। निमित्त तो मालवीया नगर मे प्रतिष्ठा का भी है। खास उद्देश्य तो यही था लेकिन यहा पर अलग-अलग सघो को, अलग-अलग सोसायटी और कोलोनीज सब को लाभ मिले इस दृष्टिकोण से हमारे सघ के भाइयो ने और हमारे हीराभाई चौधरी ने मिल कर हमारा कार्यक्रम निश्चित किया। जहा तक मैं पहुँच सकता था मैंने हर एक के घर जाने का प्रयास किया परन्तु फिर भी सीमा है। मैंने सोचा कि किसी के घर जाने से सबसे बडा सरल रास्ता है कि लोगो के दिलो तक चला जाऊ। हर एक के घर पर तो नही पहुँच सकता, मेरी भी लाचारी है परन्तु जहा तक हो सका मैंने लोगो की भावना को पूर्ण करने का प्रयास किया है।

जयपुर सघ ने जो प्रेम दिया वह तो मेरी स्मृति मे कायम रहेगा। अभिनन्दन मे बहुत सारे भाइयो ने अपनी भावना व्यक्त की उस पर भी मैं ध्यान रखूगा। हमारे राजस्थान के मुख्यमत्री भैरोंसिहजी शेखावत 20-25 वर्षो से हमारे परिचय मे हैं। कई बार उनका आना होता है। बेंगलोर, मद्रास जहा भी मैं रहा प्रसन्नता से आए और सहज रूप मे मेरे पास ही रहे। एक दिन तो मेरे पास ही सोये। कहा कि आज तो मुझे आपके पास ही सोना है, मैंने कहा सो जाइये। उन्होने कई बार कहा कि आप जयपुर आइये और आज तो उन्होने अपनी भावना को व्यक्त कर दिया तो मैंने सोचा कि हमारे यहाँ कोबा मे तो काफी बडा काम हो रहा है परन्तु कई चीजे ऐसी हैं जिनकी हमे अब आवश्यकता नही है। हमारे यहा उसकी पूर्ति हो गई तो अब कही न कही एक ब्राच अपने को बनानी है ताकि और ज्यादा विकास हो, और ज्यादा हमे सुविधा मिले। आज कुदरती उन्होने कह दिया और मेरे मन मे भी आ गया कि मुझे यह काय करना है। जयपुर एक बडा केन्द्र है, समृद्ध

नगरी है। भावना से भी समृद्ध है अर्थ से भी समृद्ध है और विचारों से भी समृद्ध है। मैंने सोचा कि यहां पर केन्द्र बना दिया जाय तो अपने कार्य में भी सरलता होगी, लोगों को लाभ भी मिलेगा और जयपुर में केन्द्र होने से अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र से बाहर से आने वाले लोग भी इससे लाभ उठा सकेंगे। अहमदाबाद में बनाने का मेरा उद्देश्य भी यही था। आज काफी लोग उसका लाभ ले रहे हैं। मैंने विचार तो कर लिया है, अब आगे आप सब लोगों का सहयोग मिलेगा तो आशा करता हूँ कि जरूर सफलता मिलेगी। कार्य देख कर लोग देंगे। यहाँ दो चार दिन में एक छोटी मीटिंग बुला कर किस तरह इसका आयोजन किया जावे इस पर विचार करूंगा। मैंने के. एल. जैन साहब से बात की है, लूणियाजी से बात की है, और भी कई हमारे परिचय में है उनको बुलाऊंगा, उसकी रूपरेखा तैयार करूंगा। बीज डाला है वह वृक्ष बन सके इसका प्रयास करूंगा। ●

ताना-बाना

□ शशी बावेल

रे मन बैरी क्यों तू चंचल।
फिसल-फिसल करता है हल-चल ।।

त्राही-त्राही तू ही मचवाता।
शांती को हमें तरसाता ।।

बुनता मोह का ताना-बाना।
रुक ना पाता आना-जाना ।।

कुकर्मो की खेती बोता।
मानव-जीवन यों ही खोता ।।

कर्म खपाना आसान नही।
ये कोई मेहमान नहीं ।।

कुकर्मो का लेखा-जोखा।
है युद्ध क्षैत्र का पराक्रमी योद्धा ।।

तप का चलाए तीक्ष्ण बाण।
समता का हो तीर कमान ।।

संयम चरित्र अनोखा अस्त्र।
सम्यगदर्शन वज्र सा शस्त्र ।।

धराशायी होवे यह योद्धा।
सत कर्मो से हो समझौता ।।

तीनों ज्ञान हमें हो जावे।
आगे की मंजिल पा जावे ।।

—279, सुभाष कॉलोनी, शास्त्री नगर, जयपुर

महिमामय महामंत्र नवकार

□ मुनि श्री निर्मलसागरजी म०

अच्छे बीज को जमीन मे विधिपूर्वक बोया जाय तो उसका वृक्ष के रूप मे रूपान्तरण होता है, उसी तरह से विधिपूर्वक शुद्ध भाव से यदि नवकार महामन्त्र का स्मरण किया जाय तो व्यक्ति स्वयं भगवान बनता है।

नवकार मन्त्र के स्मरण मात्र से अनेक जन्मो मे किए हुए कर्म नष्ट हो जाते हैं लेकिन यदि इसी मन्त्र की विधिपूर्वक आराधना की जाय तो इस लोक और परलोक मे भी यह सुख शान्ति देने वाला बनता है।

मन्त्र शक्ति अचिन्त्य है। जिस प्रकार से शान्त संगीत सुनने से व्यक्ति शान्त हो जाता है मृत्यु के समय की धुन सुनकर व्यक्ति गम्भीर बन जाता है, उत्तेजक संगीत श्रवण कर व्यक्ति उत्तेजना को प्राप्त करता है। उसी तरह से स्वास्थ्य व सौम्य मन्त्र का जाप करने से व्यक्ति सौम्य व शान्त बनता है। रौद्र व अनिष्टकर मन्त्र का जाप करने से व्यक्ति अशान्त व क्रूर बन जाता है। मन्त्र शक्ति अपार है जिसका प्रयोग अच्छे और बुरे दोनो ही कामों मे किया जा सकता है। अच्छे कार्यों के प्रचार मे मानव का भला किया जा सकता है वहीं बुरे मन्त्र प्रयोग से व्यक्ति दूसरो का अनिष्ट भी कर सकता है। लेकिन जो व्यक्ति अनिष्टकारक मन्त्र का प्रयोग करता है वह सर्वप्रथम स्वयं का ही अनिष्ट कर बैठता है। उसकी शक्ति धीरे-धीरे नष्ट हो जाती है। जो सौम्य मन्त्र का प्रयोग करता है वह दिव्य और शुभ शक्ति को प्राप्त करता है।

नमस्कार महामन्त्र सभी प्रकार के सौम्य मन्त्रो मे सर्वश्रेष्ठ है और इसीलिए इसे महामन्त्र कहते हैं। विश्व के अन्य मन्त्रो मे देवता उस मन्त्र के स्वामी होते हैं तथा उस मन्त्र की आराधना करने वाले साधक को कृपा आशीर्वाद देते है। पर नमस्कार महामन्त्र की यह विशेषता है कि उसका कोई स्वामी नही है अपितु विश्व के सभी सम्यग्दृष्टि देव नवकार मन्त्र के सेवक हैं। जो व्यक्ति नवकार मन्त्र की साधना करता है, नवकार मन्त्र के सेवक देव उस साधक के भी सेवक बनते है। विश्व के अन्य मन्त्रो से सिर्फ भौतिक या सामान्य प्रकार से आध्यात्मिक लाभ मिलता है पर यह नवकार मन्त्र की साधना से भौतिक, आध्यात्मिक लाभ के साथ-साथ व्यक्ति स्वयं पंचपरमेष्ठि मे पूज्य स्थान को प्राप्त करता है।

इस महामंत्र की सर्वोत्कृष्ट विशेषता यह है कि इस मंत्र का स्मरण करने वाला स्वयं तीर्थंकर भगवान बनने की योग्यता को भी प्राप्त कर सकता है। यह मंत्र याद करने तथा उच्चारण में अत्यन्त सरल है। श्री महानिशीथ सूत्र में नवकार मंत्र के नवपद, आठ सम्पदा तथा अडसठ अक्षर बताये हैं। इस मंत्र का दूसरा नाम "श्री पंच मंगल महाश्रुत स्कन्ध" है।

महामंत्र का ध्यान

नमो अरिहंताणं : अरिहन्त परमात्मा को मेरा नमस्कार हो। अरिहन्त परमात्मा कैसे हैं? वो कहते हैं कि 18 प्रकार के दोष से रहित, अष्ट महप्रातिहार्य से युक्त, चारों प्रकार के देव, मनुष्य प्राणी आदि जिनकी सेवा करते है ऐसे समोसरण में भव्य जीवों का देशना के द्वारा कल्याण करते है। ऐसे सर्वज्ञ-सर्वदर्शी और अनन्त शक्तिमान प्रभु श्री अरिहन्तदेव है। ऐसे श्री अरिहन्तदेव का "नमो अरिहंताणं" इस पद के द्वारा ध्यान करना चाहिए। इस पद का स्फटिक रत्न, मोती और दूध जैसे उज्ज्वल तथा बिजली जैसे चमकते अक्षरों की कल्पना करके स्मरण करना चाहिए।

नमो सिद्धाणं : सिद्ध भगवान को मेरा नमस्कार हो। जो शरीर रहित ज्योति पुज के समान हैं। रोग, शोक, वियोग, आधि, व्याधि प्रमुख सकल दुखों से मुक्त है। इन्द्रादि समस्त देव तथा चक्रवर्ती के सुख भी जिनके सुख के सामने तुच्छ है ऐसे आश्वस्त सुख के भोक्ता सिद्ध भगवान है। "नमो सिद्धाण" यह पद का उगते हुए सूर्य, अनार का फूल और परवाला रत्न जैसे लाल रंग के अक्षरों की कल्पना करके ध्यान करना चाहिए।

नमो आयरियाणं : आचार्य भगवान को मे । नमस्कार हो। पाँच प्रकार के आचार का पालन करने वाले, राग-द्वेष को नष्ट करने वाले, सिद्धान्त के अर्थ को जानने वाले, दम्भ से रहित, भवभीरू तथा छत्तीस गुणों से युक्त, भव्य जीवों को प्रतिबोध देने वाले ऐसे आचार्य भगवन्त का "नमो आयरियाणं" इस पद से तपाए हुए सोने जैसा तथा हल्दी जैसे पीले चमकते रंग की कल्पना करके ध्यान करना चाहिए।

नमो उवज्झायाणं : उपाध्याय भगवन्त को मेरा नमस्कार हो। ग्यारह अंग, बारह उपांग, दस पयन्ना, चार मूल तथा छः छेद सूत्र आदि परमात्मा के उपदेश का श्रद्धा के के साथ अध्ययन करने वाले, शिष्यों को अभ्यास कराने वाले तथा आचार्य बनने की पात्रता को प्राप्त उपाध्याय भगवन्त होते हैं। "नमो उवज्झायाण" इस पद का बसन्त ऋतु में उद्यान का जैसा रंग होता है वैसे चमकते नीले रंग के अक्षरों की कल्पना करके ध्यान करना चाहिए।

नमो लोए सव्वसाहूणं : इस लोक में जितने साधुगण है उन सभी महात्माओं को मेरा नमस्कार हो। संसार से विरक्त, इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने वाले, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग-द्वेष आदि का अपशमन व क्षय करने वाले, परिषह व कष्ट सहने वाले साधु होते है। "नमो लोए सव्वसाहूणं" इस पद का काजल, कसौटी पत्थर और पानी से भरे हुए बादल जैसे श्याम रंग की कल्पना करके ध्यान करना चाहिए।

ऐसोपचनमुक्कारो ये पाच परम इष्ट को किया हुआ नमस्कार है। इस पद का ध्यान लाल पीले रग मे करना चाहिए।

सव्वपावप्पणासणो जन्म जन्मान्तर मे किए ज्ञात अज्ञात सभी प्रकार के पापो का तथा कर्मों का नाश करता है। इस पद का ध्यान पीले नीले रग की कल्पना करके करना चाहिए।

मगलाणच सव्वेसि पढम हवइ मगल दुष्कर्म का नाश जिससे हो उसे मगल कहते हैं। सभी प्रकार के मगलो मे सवश्रेष्ठ यह प्रथम मगल है। इन दो पदो का काले लाल रग की कल्पना करके ध्यान करना चाहिए।

इस नमस्कार महामत्र का जो व्यक्ति चिन्तन, मनन, स्मरण, ध्यान करता है, निरन्तर आराधना करता है वह जो विचार करता है उस वस्तु को प्राप्त करता है।

इस महामत्र के प्रभाव से भूत, प्रेत, पिशाच, खराब दृष्टि, डाकिनी, शाकिनी आदि का उपद्रव शान्त होता है। दुख, दुर्भाग्य, दारिद्रय का नाश होता है तथा समस्त भोग, सम्पत्ति और सुख प्राप्त होता है। इस महामत्र के उत्कृष्ट फल रुप मे तीर्थंकर का पद प्राप्त होता है।

श्री नवकार महामंत्र के विशिष्ट मंत्र प्रयोग

(1) चद्र व शुक्र ग्रह की पीडा निवारण के लिए मत्र

ओं ह्रीं नमो अरिहताण

(2) सूर्य व मगल ग्रह की पीडा निवारण के लिए मत्र

ओं ह्रीं नमो सिद्धाण

(3) गुर ग्रह की पीडा निवारण के लिए मत्र

ओं ह्रीं नमो आयरियाण

(4) बुध ग्रह की पीडा निवारण के लिए मत्र

ओं ह्रीं नमो उवज्झायाण

(5) शनि, राहु, केतु ग्रहो के निवारण के लिए मत्र

ओं ह्रीं नमो लोए सव्वसाहूण

(6) **प्रभाव वृद्धि मत्र**

ओं नमो अरिहताण ओं नम
ओं नमो सिद्धाण ओं नम
ओं नमो आयरियाण ओं नम
ओं नमो उवज्झायाण ओं नम
ओ नमो लोए सव्वसाहूण ओं नम

(7) **लक्ष्मी प्राप्ति मत्र**

ऐं नमो लोए सव्वसाहूण
ऐं नमो उवज्झायाण
ऐं नमो आयरियाण
ऐं नमो सिद्धाण
ऐं नमो अरिहताण

(8) **अपहृत अथवा निर्दोष होते हुए भी जेल मे बन्द हो जावे तो छुडाने वाला मत्र**

ब्लूं नमो लोए सव्वसाहूण ह्रीं नम
ब्लूं नमो उवज्झायाण ह्रीं नम
ब्लूं नमो आयरियाण ह्रीं नम
ब्लूं नमो सिद्धाण ह्रीं नम
ब्लूं नमो अरिहताण ह्रीं नम

मास क्षमण के तपस्वी

मुनिराज श्री उदय सागरजी म. सा.
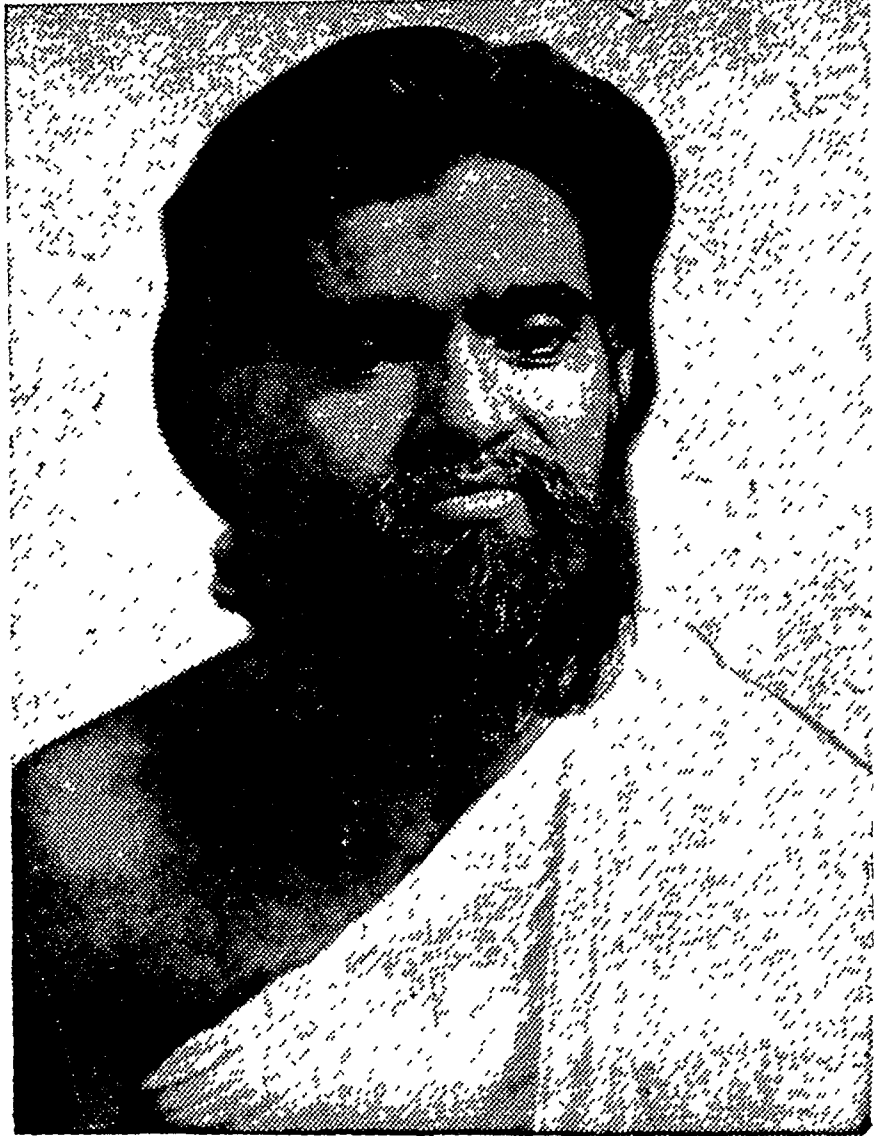
आप पूज्य मुनिराज श्री निर्मल सागरजी म. सा. के ही सांसारिक बड़े भ्राता हैं। आपकी दीक्षा 11 दिसम्बर 84 को आचार्य श्री पदम सागर सूरीजी म. सा. के पास पाली में हुई थी। आपने B Sc. पास किया है। अब तक आप दो मास क्षमण, छट्ठ से वर्षी तप आदि विविध तपस्यायें कर चुके हैं।

आपका तीसरा मास क्षमण इस चातुर्मास काल में जयपुर में सम्पन्न हुआ है जिसका पारणा दिनांक 4-8-94 को हुआ।

कल्प-पुष्प

☐ आचार्य श्रीमद् विजय नित्यानन्द सूरिजी म. सा.

धर्म कल्प पुष्प है। अहिंसा, संयम और तप इसकी तीन पंखड़ियां है। इसकी सुगन्ध है—नित्यानन्द। प्रभु जिनेश्वर की कृपा से यह पुष्प सबकी मानस-क्यारी में खिल सकता है। देखिये! यह पुष्प कैसा है :-

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो।
देवावि तं नमंसन्ति, जस्स धम्मे सया मणो।
(दशवै: अ-1. गा-1)

(धर्म सर्वश्रेष्ठ मंगल है। अहिंसा, संयम और तप रूप धर्म। जिस मनुष्य का मन उक्त धर्म में सदा संलग्न रहता है, उसे देवता भी नमस्कार करते हैं।)

धर्म स्वभाव है। अहिंसा, संयम और तप स्वभाव में लौटने की विधियां है। अहिंसा धर्म की आत्मा है। संयम अर्थात् सदाचार शरीर है; तप प्राण है। अहिसा प्राणिमात्र के प्रति प्रेम-भाव विकसित करती है। संयम तन को तथा तप मन को वश में रखता है। इससे ममता का विसर्जन होता है। संयम और तप अहिंसा की परम पावन प्रेमधारा में नहाकर शान्तरस सागर में विलीन हो जाते हैं।

अहिंसा अन्तर्यात्रा की प्रेरणा है।
संयम अन्तर्यात्रा की तैयारी है।
तप अन्तर्यात्रा के लिए प्रस्थान है।

तप दो प्रकार के होते है: 1. बाह्य, 2. आभ्यन्तर। प्रत्येक के छह प्रकार है। बाह्य तप है: अनशन, ऊणोदरी, वृत्तिसंक्षेप, रस परित्याग, कायक्लेश और संलीनता।

आभ्यन्तर तप के छह भेद हैं: प्रायश्चित, विनय, वैयावृत्य (सेवा), स्वाध्याय, ध्यान और व्युत्सर्ग (सर्वथा त्याग अर्थात् ममता से मुक्ति)।

अन्तर्यात्रा में बाह्य तप की क्या उपादेयता है? शरीर को साधना के अनुकूल बनाने के लिए बाह्य तप का विशेष महत्त्व है। शरीरमाद्यं खलु धर्म साधनम्-साधना की अन्तर धारा आभ्यन्तर तप है। अन्तर धारा में क्षमा, सन्तोष आदि भावों की ऊर्मियां नाचती है।

1. बाह्यतप—अनशन का अर्थ है—भोजन का त्याग। भोजन के प्रति जो आसक्ति है, उसे दूर करने के लिए अनशन का विधान है। ऊणोदरी अर्थात् आवश्यकता से कम भोजन करना। स्वास्थ्य की दृष्टि से ऊणोदरी की विशेष उपयोगिता है। कम भोजन करने वाला दीर्घायु और स्वस्थ रहता है। अधिक भोजन करने वाला पेटू अनेक रोगों का शिकार होता है।

इसीलिए लोकोक्ति है: कम खाना, गम खाना, नम जाना। अधिक भोजन करने वाला पेटू अनेकानेक मानसिक रोगों एवं विकारों से ग्रस्त रहता है। वृत्ति संक्षेप का तात्पर्य है—वस्तुओं को सीमित करना। इच्छाओं का अन्त नहीं है—इच्छा हु आगासासमा अणंतिया।' इच्छाओं को समेट लो। वृत्तियों और वासनाओं को समेटना वृत्तिसंक्षेप है। जब इच्छाएँ सीमित हो जाती है तव आवश्यकताये स्वत: कम हो जाती हैं। रस परित्याग-का मतलब है—रस के प्रति अनाकर्षण। इसे अस्वाद भाव कहते हैं। जो भी

प्रपच है, वह रस लोलुपता के कारण है। अस्वाद भाव आने पर कोई टटा नही रहता। काय क्लेश अर्थात् काया को कष्ट देना। इससे दु ख की प्रतीति होती है। दु ख से मुक्त होने के लिए दु खानुभूति आवश्यक है। इससे सवेदना, करुणा और प्राणिमैत्री का विकास होता है। करुणा अहिंसा की प्राणवायु है। सलीनता का तात्पर्य है अपने मे लीन होना। सलीनता मे हम सुखासन मे वैठकर अपने को अन्तर्दृष्टि से देखते हैं। यह आत्मावलोकन है। आत्मावलोकन से अपने दोपो का पता लग जाता है। दोपो पर दृष्टि पडते ही आत्मग्लानि होती है, दु ख होता है।

2 आभ्यन्तर तप—फिर हम प्रायश्चित करने लगते है। दु खानुभूति से प्रायश्चित का सहज प्रादुर्भाव हो जाता है। भीतर के दोपो को दूर करने के लिए प्रायश्चित परमौपधि है। हमारी जीवनधारा बदल जाती है। अहकार के स्थान पर विनय के फूल खिल जाते है, लोभ के स्थान पर सन्तोष की सुमन्द वायु वहने लगती है। स्वार्थ के बदले सेवा का अमृत झरने लगता है। अत प्रायश्चित जागरण का मगल प्रभात है, ग्रीष्म मे शीतल जलधारा के समान है। प्रायश्चित से अहकार का नाश होता है। अहकार की अधेरी रात्रि के वीतने पर विनय का अरुणोदय होता है। विनय से अभेद दृष्टि खुलती है। विनय है धर्म वृक्ष की जड। सेवा इसका सुगन्धित फूल है। सेवा का अमृत फल है—चित्त की प्रसन्नता। प्रसन्नता के लिए मनुष्य देश-विदेश की यात्रा करता है, आकाश मे उडता है, समुद्र मे तैरता है। प्रकृति मे विहार करता है, झरनो के कल-कल नाद सुनता है, सगीत-समारोहो मे जाता है, स्वरुचि भोजो मे मनमोहक व्यजन खाता है, नृत्य-उत्सवो मे सम्मिलित होता है। नाटक, टी वी, खेलकूद आदि से मनोरजन करता है। परन्तु प्रसन्नता हाट-बाजार मे नही मिलती। प्रसन्नता सन्तोष के स्वर्ण-रत्न जडित सिंहासन पर सेवा महारानी के रूप मे विराजमान है। सेवा निष्काम भाव से अमित फलदायिनी होती है। सेवामृत पीने वाला स्वाध्याय की ओर उन्मुख होता है। स्वाध्याय दो शब्दो से बना है। स्व अर्थात् स्वय अध्याय का अर्थ है—अध्ययन। तात्पर्य है—स्वरूप का अध्ययन। स्वरूप का ध्यान रखने वाला अन्तर्मुखी हो जाता है। श्री उत्तराध्ययन सूत्र मे उल्लेख है—"सज्झाएवा निउत्तेण स्व्वदुक्ख विमोक्खणे"—स्वाध्याय करते रहने से समस्त दु खो से मुक्ति मिलती है। स्वाध्याय या आत्मदृष्टि ध्यान की ओर ले जाती है। ध्यान का अर्थ है स्वभाव मे ठहर जाना। शरीर की सारी गति ठहर जाय, उसका नाम ध्यान है। चेतना की धारा को स्वरूप की ओर प्रवाहित करना ध्यान है। परमात्म-भाव मे रमण करना ध्यान है। ध्यान तनाव की स्थिति मे नही हो सकता। शान्त चित्त मे ही ध्यान सम्भव है। एकाग्रता, ध्यान की प्रमुख भूमिका है। जव तन-मन वश मे हो जाते हैं, तव सहज ध्यान होता है। सहज ध्यान खिले हुए फूल के समान है। रवि रश्मियो से जैसे पुष्पकली खिल जाती है, वैसे ही सहज ध्यान से आत्मकली खिल जाती है। ध्यान के पश्चात् व्युत्सर्ग अर्थात् पूर्ण समर्पण अवस्था आती है। इसे सहज समाधि कहते हैं। समाधि का अर्थ है—"मैं मुक्त हो जाना।" यही है स्वभाव मे लौटना, यही है ब्रह्मदर्शन। इसे कहते है पूर्णानन्द-नित्यानन्द अथवा कैवल्य।

□ □ □

आत्मशंसा है आत्महत्या

□ **मुनि श्री विमलसागरजी म० सा०**

प्रशंसा जहर है
प्रगति के पथ पर।
जिन्हें आगे बढ़ना है
उन्हें खोजना होगा अमृत।
जहर पर जीना असम्भव है।
आलोचना किसी को पसन्द नहीं है,
प्रशंसा प्रिय है सबको।
प्रशंसक लगता है अपना अनन्य,
आलोचक शत्रु प्रतीत होता है।
वस्तुतः प्रशंसकों से घिरे रहना
निद्रधीनता है।
यह एक सुखद भ्रान्ति है।
आलोचकों के बीच जीने वाला
अपेक्षाकृत अधिक जागृत होता है।
प्रशंसा सृजनशीलता को सुस्त बनाती है
प्रगति में प्रमाद जन्म लेता है इसी विन्दु से।
प्रमाद अधोगति है।
प्रशंसा जन्मदात्री है अहंकार की।
त्यागियों और योगियों का
सुदीर्घ अनुभव भी
इस काले अभिशाप की लपेट में
आ जाता है कभी-कभार।
इसी अर्थ में
आत्मशंसा आत्महत्या है।

शासन का मूल मत्र है—महामत्र नवकार। महा यानी बडा, और मत्र अर्थात् मत्रित कर दे ऐसा। अनादि काल से आत्म-सत्ता को कर्मचक्र ने अपनी प्रभुसत्ता के नीचे दबा रखा है। इस भ्रमजाल से ग्रसित आत्मा महामत्र के बल पर उस सत्ता के सामने विजय प्राप्त कर सकती है। सुज्ञ जीवात्मा महामत्र नवकार के बल पर कर्म चक्र का छेदन भेदन करके सर्वत्र जय-विजय प्राप्त कर सकता है।

महामंत्र नवकार, अन्तर निरीक्षण

□ आचार्य श्री जयतसेन सूरिजी म० सा० (मद्रास)

अनादि है यह जगत एव प्रवाह से अनादि है यह जैन शासन। जिनेश्वर भगवतो द्वारा सस्थापित है यह पावनतम शासन। विस्थापितो को अपने स्थान पर सस्थापित करने का निर्मल निरुपम क्रम अनादि काल से चल रहा है इस शासन का।

वृत्त मे था, वर्तमान मे है और भविष्य-मान मे रहेगा यह शासन। इसलिए कि जीवमात्र के कल्याण का, हित एव उत्थान का उद्देश्य, उपदेश एव सदेश रहा है इस शासन का।

इसी शासन का मूल मत्र है—महामत्र नवकार। महा यानी बडा और मत्र अर्थात् मत्रित कर दे ऐसा। अनादि काल से आत्म-सत्ता को कर्मचक्र ने अपनी प्रभुसत्ता के नीचे दबा रखा है। इतना ही नही उसने धर्मचक्र और सिद्धचक्र से इसे दूर रखने का सारा नाटकीय ढग रचा रखा है। इस भ्रमजाल से ग्रसित आत्मा महामत्र के बल पर उस सत्ता के सामने विजय प्राप्त कर सकती है। सुज्ञ जीवात्मा महामत्र नवकार के बल पर कर्म का छेदन-भेदन करके सर्वत्र जय-विजय प्राप्त कर सकती है।

जिनशासन मे नवकार महामत्र का स्थान अद्वितीय एव सर्वोपरि है। मत्रो मे यह सर्वोत्कृष्ट मत्र है। इसका वर्ण विन्यास व शब्द गठन सरल, सुवाच्य, अर्थगभीर, भावोत्कृष्टता पूर्ण तथा उत्तमोत्तम गुण पारिणामिक है। अत इसकी आराधना बडे भक्ति भाव से की जाती है।

महामत्र नवकार हमारे अज्ञान को नष्ट कर सकता है और सुज्ञता तथा प्रज्ञता प्रकट कर हमारे जीवन मे प्रकाश ला सकता है। आज तक हम इस महामत्र से दूर रहे, इसलिए विषय कषायो ने हम पर अधिकार जमा लिया। हमारे मन पटल पर नवकार मत्र प्रतिष्ठित न होने के कारण ही आज तक हम अपने अभावो के लिए—दुखो के लिए दूसरो को दोष देते रहे। 'मोटो नवकार है, खोटो ससार है'—इस तथ्य की प्रतीति हमे अब तक हुई ही नही। किन्तु अब समय आ गया है नवकार मत्र

को धारण करने का। इस महामंत्र को धारण करते ही मनुष्य अपनी कमजोरियों और भूलों को समझने लगता है। जब तक मनुष्य इस महामंत्र से दूर रहता है; तब तक वह आत्मप्रशंसा और परनिंदा में लीन रहता है। पर नवकार का सान्निध्य पाते ही वह अपनी भूलों का प्रायश्चित करने लगता है और सदा सावधान रहने लगता है। इस प्रकार नवकार हमें अज्ञभाव को दूर करने की प्रेरणा देता है और सही राह दिखाता है।

नवकार सर्व संग्राहक है। इसमें नागरी लिपि के समस्त वर्ण—स्वर और व्यंजन आ जाते है। इसमें पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश का इतना सुन्दर संगम उपस्थित हुआ है कि यह हमारे शरीर से स्वयं ही मूलवद्ध हो गया है। ॐकार इसका सूत्र रूप है। अरिहन्त का 'अ', अशरीरी (सिद्ध परमात्मा) का 'अ', आचार्य का 'आ', उपाध्याय का 'उ' और मुनि (साधु) का 'म्' ये सब मिलकर ओम् (ॐ) बन जाते हैं।

'ॐ' एक ऐसा चमत्कारिक नाद है, जो शरीर के रग रेशे को लय संगीत प्रदान करता है। जब अ सि आ उ सा, ॐ वा इस संपूर्ण मंत्र का हम ध्यान करते हैं, तब हम आध्यात्मिक उत्थान की सीढियों पर एक के वाद एक पाँव रखते जाते हैं—गुणस्थान क्रमारोहण होने लगता है। साधु संभावना है। संभावना ही संस्कार और अध्ययन से सिद्धि की ओर बढ़ती है। विज्ञान के क्षेत्र में संभावनाओं से ही सिद्धि का सफर शुरू होता है। जैन धर्म संभावनाओं में से सिद्धि उपलब्ध करने कराने का अध्यात्म शिल्प है। वह स्वयं एक विज्ञान है, जिसका दूसरा नाम है—भेद विज्ञान।

शरीर को एक पवित्र प्रयोगशाला बना कर जब हम नवकार द्वारा इसे आत्मा से भिन्न जानते हैं; तब हमें महसूस होता है कि मंत्राधिराज नवकार में कितनी शक्ति है। हम थक सकते है एक बार किन्तु नवकार नहीं थकता। यह अपराजित मंत्र है। संप्रदायातीत वैश्विक होने के कारण इसमें जो ऊर्जा है वह इतनी प्रहारक, प्रखर और सशक्त है कि हम उसका किसी भी क्षण अचूक उपयोग कर सकते है।

नवकार मंत्र में पंच परमेष्ठी भगवंतों को नमस्कार किया गया है; अतः इसे नमस्कार मंत्र भी कहते है। शास्त्रीय भाषा मे इसे पंचमंगल महा श्रुतस्कंध भी कहते हैं। यह नवकार मंत्र चौदह पूर्वो का—समस्त जिनशासन का सार है। कहा भी है—

जिणसासणस्स सारो,
चउद्दस पुव्वाण जो समुद्धारो।
जस्स मणे नवकारो,
संसारो तस्स किं कुणइ ॥1॥

नवकार मोटा (महान) है और संसार खोटा है; तभी तो नवकार आराधक का संसार कुछ भी नही बिगाड़ सकता। नवकार मंत्र में रही हुई परमेष्ठी, भगवन्तों के प्रति रही हुई नमनपूर्वक सम्पूर्ण समर्पण की भावना को यदि हम ध्यान में ले, तो हमें यह प्रतीत होगा कि नवकार के समान मंगलकारक अन्य कोई है ही नहीं। यह महामंगल है। यह सब प्रकार के पापों का नाश करने वाला, सब अमगलों को दूर करने वाला प्रथम मंगल है।

एसो पंच नमुक्कारो, सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसि, पढमं हवइ मंगलं ॥

जब ऐसा है, तब फिर आज तक हम इसे क्यो नही पा सके ? कारण स्पष्ट है—हम नवकार के इर्द गिर्द ही चक्कर लगाते रहे। नवकार के भीतर कभी हमने प्रवेश ही नही किया। जो कुछ है, सो नवकार के भीतर है, बाहर कुछ भी नही है और हम हैं जो केवल बाहर ही ढूढते है, भीतर प्रवेश ही नही करते। फिर हम पायें कैसे ? नवकार को पाने के लिए हमे भीतर तक जाना होगा। जितनी गहराई तक हम जायेगे, उपलब्धि उतनी ही हमारे नजदीक होगी।

नवकार मत्र शिरोमणि है। मत्र जीवन मे आने वाले सकट दूर करता है, पर यह मत्राधिराज तो सकट के मूल कारण पाप को ही समूल नष्ट कर देता है। यह 'सव्व पापप्पणासणो' जो है। यह नवपदात्मक या मात्र अडसठ अक्षरात्मक होते हुए भी—छोटा सा होते हुए भी महान् है। यह जीवन के समस्त अभाव दूर करने वाला है और आत्मतत्त्व तथा परमात्म तत्त्व का ज्ञान करानेवाला है। ऐसा कोई रोग नही है, जो इससे दूर न हो। यह आधि, व्याधि और उपाधिजन्य समस्त सतापो का नाश करता है। यह भवरोग विनाशक है।

नवकार हमे जीवन बोध कराता है। यह परमात्मा तक पहुँचने की दूरी कम करके हमारा सम्बन्ध परमात्मा से जोडता है। यह जगत् भाव से दूर ले जाकर हमे आत्म-भाव से जोडता है और लक्ष्य बोध द्वारा हमे लक्ष्य तक पहुँचाता है। यह हमे भटकने से बचाता है, हमारे चालचलन मे सुधार लाता है और हमारे जीवन का स्पष्ट लेखा जोखा हमारे सामने रख देता है।

अरिहत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु ये पाँचो परम इष्ट हैं। इष्ट और परम इष्ट मे फर्क है। हमारे अन्य इष्ट जन—ससारी सबधी हमे धोखा दे सकते हैं, पर ये परम इष्ट पच परमेष्ठी कभी धोखा नही देते। ये हमारे आत्मविश्वास को जागृत करके हमारा आत्म बल बढाते हैं। ये हमारा कायाकल्प कर सकते हैं।

हमारा स्थान निश्चित कहाँ है ? हम जहाँ हैं, अस्थिर हैं। हम मान लेते हैं कि हमे स्थान मिल गया है, पर है यह हमारा भ्रम। हमारा स्थान स्थायी नही है। इस ससार मे किसी का भी स्थान स्थायी नही है। सभी अस्थिर है। भले ही घर का मालिक या देश का मालिक कोई बन गया हो, पर वह वहाँ स्थायी रूप से दिखाई नही देता।

किसी का भी स्थान स्थायी नही है। घर मे रहने वाला घर छोडता है, भागा-भागा बाजार जाता है। बाजार मे गया हुआ भागा-भागा घर लौटता है। उसका सही स्थान कहाँ है ? दुकान है या घर है ? कोई घर से परदेस जाता है, तो कोई परदेस से घर आता है। है कहाँ ठिकाना ? जरा इन सबसे पूछो तो सही ?

इस ससार मे जहाँ देखो वहाँ सब प्राणी भटकते नजर आ रहे हैं, क्योकि उन्हे अभी तक अपना अधिकृत स्थान नही मिला। अपना स्थान मिल जाये, तो आवागमन और गमनागमन रुक सकता है। पर हम हैं कि बिना पते के आगे बढ रहे हैं। हमे गतव्य की जानकारी ही नही है। न पता है और न मुकाम।

अपना पता लगाने के लिए और मुकाम पाने के लिए हमे इन परमेष्ठी भगवतो के

निकट पहुँच कर इनका आलंबन लेना होगा। परमेष्ठी भगवंतों के निकट जाना अपने सही और स्थायी स्थान को पाना है; क्योंकि उनका स्थान निश्चित है। उनके निकट जाते ही हमारे भटकाव का अन्त हो जायेगा। जो परमेष्ठियों से दूर रहे, वे संसार में भटक गये और जो परमेष्ठियों के निकट पहुँच गये, वे अपना भटकाव भूल गये।

संसार एक चक्की है। पुण्य और पाप इस चक्की के दो पाट हैं। परमेष्ठि भगवंतों से जो दूर हुआ, वह पाप-पुण्य के इन दो पाटों के बीच पिस जायेगा। उसका संसार भ्रमण जारी रहेगा। परमेष्ठियों के सान्निध्य में रहने वाला संसार भ्रमण से बच जायेगा, क्योंकि वह पुण्य और पाप से परे हो जायेगा।

आटे की चक्की आपने देखी है? उसमे दो पाट होते हैं। बीच में एक कील होती है। ऊपर से अनाज डाला जाता है। चक्की घूमती है और अनाज पिस जाता है। आपको मालूम होगा कि चक्की में डाले जाने के बावजूद भी कुछ दाने सुरक्षित रह जाते है। वे पिसते नही हैं। ऐसा क्यों होता है? इसलिए कि वे दाने कील के बिल्कुल निकट रहते हैं। कील के निकट रहने वाले दाने बच जाते है। तो जो कील के निकट रहता है, उसकी रक्षा होती है और जो कील से दूर रहता है, वह पीसा जाता है। परमेष्ठी भगवत इस संसार की चक्की के दो पाटों के बीच की कील तुल्य है। हम भी यदि उनकी शरण ले लें, तो फिर संसार की चक्की चाहे जितनी चले, हम उसमें पीसे नहीं जायेंगे। जल्दी ही हमारे भवभ्रमण का अन्त हो जायेगा।

नवकार मंत्र का प्रारंभ 'नमो' से होता है। पहले 'नमो' है, फिर 'अरिहंताणं' है। ऐसा क्यों है? कारण अरिहंत तक पहुँचने के लिए नमो आवश्यक है। बिना 'नमो' अरिहंत परमात्मा प्राप्त नहीं होंगे। किसी भी वस्तु को पाने के लिए झुकना पड़ता है। जमीन पर यदि कुछ गिर गया है, तो उसे पाने के लिए झुकना पड़ता है; फिर अरिहत परमात्मा जैसे परम इष्ट झुके बिना—नमे बिना कैसे प्राप्त होगे? कभी प्राप्त नहीं होगे। इसीलिए 'नमो अरिहंताणं' कहा गया है। 'अरिहंताणं' के पहले नमो चाहिये ही।

अरिहंत भगवान संसार के समस्त बंधनों से मुक्त हो चुके हैं। उन्होंने चारों घाती कर्मो का क्षय कर लिया है। आत्मा के मूल गुणों का—अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनत वीर्य और अनंत सुख का जो घात करता है; वह घाती कर्म है। ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तराय ये चारों आत्मा के मूल गुणों का घात करते है, इसलिए इन्हें घाती कर्म कहते हैं। अरिहंत परमात्मा ने इन चारों घाती कर्मो का नाश कर दिया है; इसलिए वे अनन्त चतुष्ट्य से युक्त हैं।

इन घाती कर्मो का नाश उन्होने कैसे किया? तीर्थंकर पद प्राप्त करने के पहले विगत जन्म में उन्होंने दर्शन विशुद्धि, विनय संपन्नता आदि सोलह कारणों की साधना की थी। उन्होंने स्वयं अपने जीवन में 'नमो' पद की साधना की थी। परमात्मा जब गृहस्थ धर्म को त्याग कर साधु धर्म अंगीकार करते है और महाव्रत ग्रहण करते हैं, तब 'नमो सिद्धाण' बोलते हैं। यह 'नमो' शब्द बड़ा जानदार है। 'नमो' के विना कोई कार्य

सिद्ध नही होता। 'नमो' का भाव जब तक जीवन मे नही आता, तब तक ससार का चक्कर अटल है।

जीवन मे यदि नमन का भाव नही आया, तो जीवन निरर्थक हो जायेगा। 'नमो' हमे जीवन मे हर जगह नमना सिखाता है। 'महाबल देखा जरा सीस के झुकाने मे'—यह बात बिल्कुल सच है जिसने सिर झुका लिया, उसने सब कुछ जीत लिया। झुकने वाला बच जाता है और अकडने वाला टूट जाता है। जब आधी आती है, तब बडे-बडे पेड चरमराकर टूट जाते हैं, पर घास के तिनके बच जाते हैं। ऐसा क्यों होता है? इसलिए कि पेड अकडे रहते है, टूट जाते हैं और तिनके झुक जाते हैं, बच जाते हैं। झुकने से रक्षा हो सकती है। इसलिए 'नमो' व्यवहार मे भी जीवन का आधार है।

हम रोज 'नमो' 'नमो' रटते हैं, पर जब नमने का मौका आता है तब अकड जाते हैं। जीवन मे हम नमते नही है। यथावसर अवश्य नमना चाहिये। जीवन का पहला पाठ है—अकड कर मत चल। नम कर रह। जो नम नही सका, उसने 'नमो' सीखा ही नही। 'नमो' शब्द हमे विनम्र बनने का सन्देश देता है और विनम्र बनने की प्रक्रिया समझाता है। यदि अरिहत को पाना है, प्रकाश को पाना है, सत्य को और अमरत्व को पाना है तो विनीत बनना होगा। विनम्रता से ही अरिहत परमात्मा का सामीप्य होगा।

इस महामत्र मे शासन, अनुशासन एव आत्मानुशासन का सम्यग्दर्शन विद्यमान हैं। दृष्टा यदि समीचीन दृष्टि से देखेगा, तो उसे जैन शासन के इस मूल मत्र की मौलिकता की अनुभूति होगी और इसमे समाहित विभुतियो का दर्शन भी होगा।

यह महामत्र निष्पक्षता का दर्शन कराता है। यह व्यक्ति निरपेक्ष तथा गुण सापेक्ष है। इसमे व्यक्ति की नही गुणो की उपासना है। अन्य धर्म दर्शनो मे अपने अपने नामाभिधानयुक्त मत्र मिलेंगे जबकि यह मत्र समस्त विश्व का विधायक महामत्र है।

इस महामत्र मे गुणो का अलकरण है एव गुणो का सकलन है। गुण-गुणी का प्रतिष्ठान इस महामत्र मे है। इसमे व्यक्ति नही, व्यक्तित्व का अधिष्ठान है। इसे महामत्र और मत्राधिराज भी कहते हैं, इसलिए कि यह सभी मत्रो मे आद्य है और सभी मत्रो का साध्य भी है।

इसकी उपादेयता अधिकतम इसलिए सिद्ध है कि इसे आबालवृद्ध सभी अपने हृदय मदिर मे बिठा सकते हैं, सहज अपना सकते हैं और किसी भी प्रकार की कठिनाई के बिना शुद्ध उच्चारणपूर्वक जप कर सकते है। इसलिए मुझे यह कहना पडता है—

मैंने देखा यह नवकार, अनुपम जग मे।
सबका है तारणहार, जपो क्षण क्षण मे।
जिसने उर धारा, है पार उतारा।
इसके जपन से, अधम उद्धारा।
इसकी शरण मे, शाति अपारा।
अलौकिक यह श्रीकार।
जपो क्षण क्षण मे॥

• • •
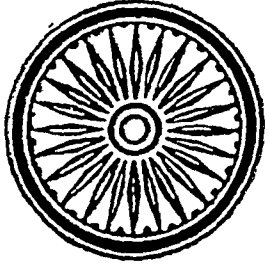
सफलता का आधार स्तम्भ—सहनशीलता

□ मुनि श्री रत्नसेन विजयजी म. सा.

'जीवन की सफलता का आधार-स्तम्भ क्या है ?'

सहनशीलता ।

जो प्रसन्नता और विवेकपूर्वक सहन कर सकता है—वही व्यक्ति अपने जीवन में सफलता हासिल कर सकता है ।

मन्दिर के बाहर चमड़े के बूट ने शिकायत करते हुए कहा—'मेरे साथ इतना अन्याय क्यों ? ढोल-नगाड़े भी चमड़े के हैं और मैं भी चमड़े का हूँ, फिर यह भेदभाव क्यों ? मेरा स्थान मन्दिर के बाहर और नगाड़े का स्थान मन्दिर के भीतर क्यों ?'

बूट के आक्रोश भरे शब्दों को सुनकर उस ढोल ने यही जवाब दिया—भाई ! तू थोड़ा धैर्य रख । तेरे इस सवाल का जवाब सन्ध्याकालीन आरती के समय मिल जाएगा ।

वह बूट इन्तजारी करने लगा । सन्ध्या का समय हुआ और मन्दिर में लोगों की भीड़ उमड़ने लगी । थोड़ी ही देर बाद पुजारी ने आरती प्रगटाई और उसके साथ ही मन्दिर में जोरों से घंट बजने लगे और उसके साथ ही ढोल व नगाड़े भी बजने लगे ।

बूट ने देखा, एक भाई हाथ में लम्बी दंडियों को लेकर उस ढोल को जोर-जोर से पीट रहा है...........जैसे ही उसने यह दृश्य देखा, उस ढोल ने उसे कहा—'तुम्हारे सवाल का जवाब मिल गया न ?' बूट इशारे में समझ गया । उसके बाद कभी यह शिकायत नहीं की ।

मन्दिर की सीढ़ियों पर जड़े हुए सगमरमर के पत्थर और मन्दिर में प्रतिष्ठित परमात्मा की प्रतिमा, दोनों एक ही खान के पाषाण से बनी हुई होने पर भी एक पाषाण पर लोग बूट व चप्पल रगड़ते है और दूसरे पाषाण की पूजा होती है । इसके पीछे भी सहनशीलता का ही रहस्य रहा हुआ है । खान के पाषाण को मूर्ति बनने के पूर्व छैनी व हथोड़े की मार को ठीक-ठीक प्रमाण में सहन करना पड़ता है । बस, उस सहनशीलता के कारण ही वह पाषाण आदरणीय स्थान प्राप्त करता है ।

वैशाख की लू को सहन करने के बाद ही आम में माधुर्य पैदा होता है और उसकी कीमत बढती है ।

बस, प्रकृति के इस साम्राज्य पर नजर करने से भी पता चल जाता है कि जो सहन करता है, उसका स्थान ऊँचा होता है ।

जीवन के हर क्षेत्र में सफलता के लिए सहनशीलता अनिवार्य है, हाँ, उस सहनशीलता में विवेक अवश्य होना चाहिये ।

बांसुरी के स्वर में मधुरता होती है, परन्तु उसके देह की ओर नजर की जाय तो अनेक छेद ही मिलेंगे । बांसुरी ने छेद की पीड़ा सहन की है इसी कारण उसके स्वर में मिठास है ।

व्यापार के क्षेत्र मे भी जो व्यक्ति ग्राहकों के साथ सौम्य और मधुर व्यवहार कर, ग्राहक के दो कटु शब्द भी प्रेम से सुन लेता है, वही सफलता हासिल करता है।

आज भी हिन्दुस्तान के एक गाँव में एक ऐसा परिवार है जहाँ 200 व्यक्तियो का खाना बनता है। वह परिवार अखडित है क्योंकि परिवार के सदस्यो मे सहनशीलता का गुण रहा हुआ है।

आज परिवार विभाजित हो रहे हैं। कारण ? सहनशीलता का अभाव।

सहनशीलता के द्वारा ही शिष्य, गुरु के हृदय मे अपना स्थान प्राप्त कर सकता है।

सासारिक क्षेत्र मे भी सफलता पाने के लिए 'सहनशीलता' अनिवार्य है, तब आध्यात्मिक क्षेत्र मे सफलता पाने के लिए सहनशीलता का पूछना ही क्या ?

जो विवेक व प्रसन्नतापूर्वक, कर्म के उदय जन्य कष्टो को समतापूर्वक सहन कर लेता है, वही व्यक्ति आध्यात्मिक जगत् मे सफलता पा सकता है।

भगवान महावीर ने कितने भयकर कष्ट सहन किए।

खधक मुनि ने कैसी भयकर पीडा सहन की ?

गजसुकुमाल ने अगारो की कैसी भयकर पीडा सहन की थी ?

ऐसे सहनशील महापुरुषो के नाम इतिहास के पृष्ठो पर स्वर्णाक्षरो मे अकित हैं और इतिहास इस बात का भी साक्षी है कि जिन्होने कुछ भी सहन नहीं किया अथवा सहन करने मे आनाकानी की अथवा अनिच्छा से या आवेश मे आकर सहन किया उन आत्माओ की कैसी भयकर हानि हुई !

कंडरीक मुनि सहनशीलता से घबराये तो मरकर सातवी नरक मे चले गये।

सम्भूति मुनि को स्त्री-रत्न की प्राप्ति मे सुख का आभास हुआ और उन्हे सयम कष्टप्रद लगा तो उनकी आत्मा का भी अध पतन हो गया।

हाँ ! सहनशीलता मे विवेक अवश्य होना चाहिए। सहनशीलता कोई कायरता नही है। सहनशीलता का अर्थ यह भी नही है कि कायरतापूर्वक अन्याय को सहन करना।

सहनशीलता के साथ विवेक अनिवार्य है। शील व धर्म के रक्षण के लिए अन्याय का प्रतिकार भी करने का है। परन्तु कर्म के उदयजन्य प्रतिकूलता, अशाता आदि को तो प्रसन्नता व विवेकपूर्वक सहन ही करना चाहिए।

अनिच्छा व अप्रसन्नतापूर्वक तो पशु योनि ने भी खूब-खूब सहन किया है। सर्कस मे काम करने वाले हाथी, घोडे, रीछ, भालू आदि को क्या कम सहन करना पडता है ? सहन तो वे खूब करते हैं, परन्तु उनकी सहनशीलता का आध्यात्मिक क्षेत्र मे कोई मूल्य नही है, क्योंकि वहाँ जो कुछ भी सहन किया जाता है, उसके पीछे पराधीनता ही मुख्य कारण है।

प्रिय चेतन !

आध्यात्मिक विकास मार्ग मे आगे बढने के लिए महान् पुण्योदय से यह मानव भव प्राप्त हुआ है। इस भव मे ही हम चाहे जितना आत्म विकास कर सकते हैं।

प्रमाद का त्याग कर आत्म-विकास के मार्ग मे आगे बढने के लिए 'सहनशीलता' गुण को जीवन मे उतारने का पूरा प्रयत्न करोगे तो अवश्य ही जीवन मे सफलता प्राप्त कर सकोगे। ●

प्रभु-प्रार्थना

☐ शान्तिदेवी लोढ़ा

है मोक्ष नगर का वासी जो हम गीत उसी के गाते हैं,
हम तो प्रभु तेरे सेवक हैं तेरी ही महिमा गाते हैं।

तेरी मनमोहक सूरत ये नयनों की प्यास बुझाती है,
अज्ञान तिमिर उर का हरती मुक्ति की राह दिखाती है।
ऐसे प्रभु के शरणागत बन हम फूले नही समाते हैं,
हम तो प्रभु तेरे सेवक है तेरी ही महिमा गाते है ।।

मस्तक पर मुकुट सुशोभित हैं कानों में कुण्डल दमक रहे,
मोती की माला गले मध्य हाथों में श्रीफल चमक रहे।
फूलों की आंगी सजा सजा हम फूले नही समाते है,
हम तो प्रभु तेरे सेवक हैं तेरी ही महिमा गाते है ।।

पूजा की सामग्री लेकर चरणों में तेरे चढ़ा रहे,
केशर चन्दन अरु वर्क लगा हम निज कर्मों को खपा रहे।
भव-सागर में डूबी नैया हम नहीं किनारा पाते है,
हम तो प्रभु तेरे सेवक हैं तेरी ही महिमा गाते हैं ।।

ले लो प्रभु अपनी शरण आज पापों से मुक्त करो हमको,
इस जन्म-मरण के बन्धन से प्रभु आज छुड़ा दो तुम हमको।
मिल जाये भक्ति का दान हमें हम यही भावना भाते है,
हम तो प्रभु तेरे सेवक हैं तेरी ही महिमा गाते है ।।

मानव जन्म-कल्प वृक्ष

☐ साध्वी श्री जितयशा श्रीजी म

नारदजी स्वर्ग लोक मे जा रहे थे। तब एक व्यक्ति ने विनती की "एक बार मुझे भी साथ ले चलो।" नारदजी बोले "स्वर्ग मे जाने के लिए योग्यता चाहिये।" जब वह व्यक्ति कहता है "आपको तो सब लोग पहचानते हैं, आपको कौन रोकने वाला है।" जब वह बहुत पीछे पडा तब नारदजी उसे साथ ले गये। स्वर्ग लोक के नन्दन वन मे एक पेड के नीचे उसे बिठाया और कहा "मैं अलकापुरी मे जाकर वापस आता हूँ, इन्द्र-महाराजा से तुम्हारे प्रवेश की आज्ञा लेकर शीघ्र ही आता हूँ। तुम यहाँ आराम करो।"

नारदजी गये, वह व्यक्ति पेड के नीचे सो गया, मन मे सोचता है आज तो पाव दद करते हैं, शरीर थक गया, कोई हाथ-पैर दबाने वाला मिले तो अच्छा हो जाये। मन मे जैसे ही यह सोचा उसी वक्त स्वग की अप्सरायें आकर उसकी सेवा करने लगी। भाई साहब तो बहुत खुश हो गये। सुन्दर अप्सराओ का सग, कोमल स्पर्श उसे बहुत ही अच्छा लगा। उस समय उसे विचार आया "यदि मेरी पत्नी यह देखेगी तो भाड लेकर मुझे पीटने आयेगी।" उसी वक्त उसकी पत्नी दौडती आयी और उसकी बुरी तरह से पिटाई की। स्वर्गवासी जनता सब वहाँ एकत्रित हो गई और जोर-जोर से हँसने लगी। नारदजी वहाँ आये और उन्होंने परिस्थिति का अवलोकन किया। उन्होंने बिगडी बाजी सम्भाल ली। उस भाई साहब को कहते हैं—"तुम जो भी मनोकामना करो अच्छी करो, बुरे विचार ना करो? तुम जानते नही हो तुमको मैंने कल्पवृक्ष के नीचे बिठाया है।"

मनुष्य भव कल्पवृक्ष समान है, लेकिन मानव सकल्प भूठे करता है तो दुखी हो जाता है। ज्ञानी भगवतो ने मनुष्य जन्म को कल्पवृक्ष की उपमा दी है। कल्पवृक्ष के नीचे बैठा मानव जो इच्छा करता है उसे प्राप्त करता है। वस्त्र, पात्र, आभूषण, खुराक जो भी इच्छा करता है उसे प्राप्त करता है। कल्पवृक्ष जैसा मनुष्य भव है, वह भी इच्छित फल को देता है। मनुष्य भव मे मानव चाहे तो स्वर्ग को प्राप्त कर सकता है और दुष्ट आचरण से नरक मे जाता है। इस तरह कल्पवृक्ष समान मनुष्य भव भी इच्छित वस्तु देता है। मानव जन्म पाकर कौनसी दिशा मे पुरुषार्थ करना वह हम सबको सोचना है।

मानव जन्म मुक्ति महल मे प्रवेश कराने वाला मेन गेट है।

मानव जन्म, जन्म और मृत्यु की अच्छी तरह ऑपरेशन करने वाली दिव्य हॉस्पिटल, मानव जन्म जीव-अजीव नवतत्त्वो का ज्ञान देने वाली कॉलेज, मानव जन्म असार समुद्र को पार कराने वाली स्टीमर, मानव जन्म एक ही समय मे लाखो योजन दूर ऐसे शिव-पुरी मे ले जाने वाला एरोप्लेन है। हम भी इस मानव भव को कल्पवृक्ष जैसा हरा-भरा बनाकर अनत सुख के सहभागी बनें।

यही मगल कामना।

□ स्नात्र शब्द 'स्नाति' शब्द से बना है जिसका भाव शुद्ध करने वाला, पवित्र करने वाला, प्रसन्नता उत्पन्न करने वाला अर्थ में ग्रहण किया गया है। इसलिए जब भी कोई मांगलिक कार्य होता है उस समय स्नात्र पूजा अवश्य पढ़ाई जाती है।

स्नात्र - पूजा

□ श्री धनरूपमल नागोरी

पूजा का आविर्भाव आदि काल से है। इसके लिए एक समय निश्चित किया जा सकना कठिन है। जहाँ परमात्मा का अस्तित्व स्वीकृत है, वहाँ पूजा, भक्ति, दर्शन, वन्दन आदि सब कुछ है। इसलिए प्रत्येक काल में भक्तों ने पूजाओं की रचना की, जिनमें गेय-तत्त्वों की प्रधानता रही, क्योंकि गेय तत्त्व ऐसा है, जिसके माध्यम से भक्ति का अनूठा आनन्द प्राप्त किया जा सकता है। इसलिए पूजाएँ ऐसी राग-रागनियों में रची गई कि जिन्हें देखकर आश्चर्य होता है कि रचयिता को कैसी अद्‌भुत विशिष्ट जानकारी इन राग-रागनियों की थी। वर्तमान काल में जो पूजाएँ प्रचलित है, उनमे स्नात्र-पूजा का विशिष्ट स्थान है। स्नात्र पूजाएँ जो विशेष प्रचलित है, उनमें देवचन्द्र जी कृत, वीरविजयजी कृत, आत्मारामजी कृत, कवि देवपाल विरचित आदि प्रमुख हैं। यों तो लगभग सात स्नात्र पूजाएँ प्रकाशित है जो अलग-अलग आचार्यो और कवियों द्वारा लिखी गई है।

प्राचीनता की दृष्टि से वीरविजयजी, एवं देवचन्द्रजी कृत स्नात्र पूजाएँ है। दोनों ही परम गीतार्थी थे। दोनों पूजाएँ विशिष्ट भावों से अभिभूत है। स्नात्र शब्द 'स्नाति' शब्द से बना है जिसका भाव शुद्ध करने वाला, पवित्र करने वाला, प्रसन्नता उत्पन्न करने वाला अर्थ में ग्रहण किया गया है। इसलिए जब भी कोई मांगलिक कार्य होता है उस समय स्नात्र पूजा अवश्य पढ़ाई जाती है। प्रतिष्ठा, अंजनशलाका, प्रवेश, अठ्ठाई महोत्सव, लग्न प्रसंग आदि पर स्नात्र-पूजा पढ़ाने का विशेष प्रचलन है। हर मन्दिर, हर गाँव, नगर, शहर, में इसे पढ़ाया जाता है। ऐसा क्यों है? जब इसे पढ़ाते है तो इसके भावों को सुनकर विशिष्ट भावोल्लास होता है, मन प्रसन्नता से भर जाता है। शब्दों को सुनकर हृदय गद्‌गद् हो जाता है, एक बार तो व्यक्ति उसमें खो जाता है। इसलिए विविध पूजाओं में इस पूजा का स्थान सर्वोपरि है और सबसे अधिक इसका प्रचलन भी है।

इस पूजा में देवता लोग परमात्मा की भक्ति कैसे किया करते है, इसका हूबहू चित्रण है। प्रारम्भ में पाँच या सात भगवंतो को कुसुमांजलि मंत्रोच्चार पूर्वक चढ़ाई जाती है। कुसुमांजलि के लिए लिखा है कि 'देवा कुसुमांजलि दित्ति' देवों ने चरणों में कुसुमां-

छव्विह आवस्सयम्मि उज्जुत्ता होइ पइ-दिवस, अर्थात् प्रतिदिन छ आवश्यक करो। छ आवश्यको का समावेश प्रतिक्रमण की क्रिया मे है, जो निम्न छ है—(संख्या 4 से 9 तक)

(4) सामायिक करना—चित्त को समभाव मे लाना।

इसके लिए आत्मा मे तल्लीन होना पडेगा। सामायिक के काल मे निर्मल वातावरण, स्थिर आसन, अनानुपूर्वी का गिनना, नवकार मत्र का जाप करते हुए पच परमेष्ठी के गुणो का चिन्तन, स्वाध्याय, कायोत्सर्ग, ध्यान साधन हैं। यदि शुद्ध भाव से एव सामायिक के 32 दोषो से दूर रहकर सामायिक की जावे, तो सब जीवो के प्रति मैत्री भावना उत्पन्न होती है एव चारो कषायो से मुक्ति मिलती है।

(5) लोगस्स —

हमको लोगस्स के कायोत्सर्ग एव उच्चारण द्वारा चौवीस तीर्थंकरो का स्मरण करते हुए उनके गुणो का कीर्तन करना चाहिए।

(6) सुगुरु का वन्दन —

सुगुरु वन्दना एव इच्छामिखमासमणो (अढाइज्जेसु) का उच्चारण करते हुए हमको मुनि वन्दन करना चाहिए।

(7) प्रतिक्रमण —

इसमे आत्मा द्वारा किए गए अकार्यो की निन्दा की जाती है, जो आलोयणा सूत्र, सात लाख सूत्र, अठारह पाप स्थानक सूत्र, सव्वसव्वि सूत्र, इच्छामि पडिक्कमिउ सूत्र, वदित्तु सूत्र, अब्भुट्ठियोमि सूत्र एव आयरिय उवज्झाय सूत्र द्वारा किया जाता है। इन सूत्रो का अर्थ समझते हुए हमको इनका उच्चारण करना चाहिए ताकि हमको ज्ञात हो कि हमने किन अकार्यो की निन्दा की है, ताकि हम भविष्य मे ये अकार्य न करें। यदि हम प्रतिक्रमण की क्रिया तो करते रहे, किन्तु साथ ही अकार्य भी करते जाए तो हमको कोई लाभ नही मिलेगा।

(8) कायोत्सर्ग —

इस क्रिया मे हमको काया का ममत्व छोडकर, एक मुद्रा मे स्थिर रहकर, मौन रहते हुए, पच परमेष्ठी को नमस्कार करते हुए उनके गुणो का ध्यान करना चाहिए अथवा लोगस्स द्वारा चौवीस तीर्थंकरो का ध्यान करना चाहिए अथवा नाणम्मि दसणम्मि का जाप करते हुए श्रावक के पाँच आचरणो की ओर अपना ध्यान जाना चाहिए अथवा तप चिन्तन के लिए भगवान महावीर द्वारा किए गए तप का चिन्तन करते हुए हमको निर्णय लेना चाहिए कि हमको आज कौन सा तप करना है।

(9) पच्चक्खाण —

प्रत्येक श्रावक को कम से कम नवकारसी एव तेविहार अथवा चउविहार अवश्य करना चाहिए एव शक्ति को छुपाए बिना छ प्रकार के बाह्य तपो मे से कोई एक प्रकार का तप करना चाहिए और यदि यह न हो सके तो छ विगइयो मे से अधिक से अधिक विगइयो का त्याग करना चाहिए। साथ ही छ आतरिक तपो का सेवन करने का भी ध्यान रखना चाहिए।

(10) पव्वेसु पोसह वय-पोषध व्रत करो।

पर्व के दिनो मे हमको साधु जैसी चर्या का आचरण करना चाहिए ताकि हमको

साधु के समान जीवन जीने की शिक्षा मिले। पोसह-धारी श्रावकों एवं साधुओं द्वारा सही प्रकार पोसह करने के लिये उपाश्रय के पास एक बाड़ा होना चाहिये जहां वे लघु एवं दीर्घ शंका से निवृत्त हो सकें। आजकल यह कार्य गटर में किया जाता है जिससे हम पाप का बन्धन करते है।

(11) **दाणं–दान दो—**

दान देना सबसे बड़ा उपकार है क्योंकि इससे जरूरतमन्द व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। अभयदान और सुपात्र दान से मोक्ष की प्राप्ति होती है। रात्रि भोजन न करने, अभक्ष्य भक्षण न करने, दूब पर न चलने, ब्रह्मचर्य का पालन करने, चूहे, मच्छर, कीड़े, मकोड़े इत्यादि नष्ट करने के साधन उपयोग में न लेने इत्यादि से हम जीवों को अभयदान दे सकते है। इस ओर हमको पूरा ध्यान देना चाहिए।

(12) **सीलं–शील पालो, सदाचारी बनो—**

हमको अपना आचरण शुद्ध रखना चाहिए जिसके लिए सादा जीवन एवं उच्च विचार रखना चाहिए। विकार उत्पन्न हों, ऐसे कार्यो से दूर रहना चाहिए जैसे टी. वी., सिनेमा नहीं देखना, स्त्रियों के सम्पर्क में कम से कम आना।

(13) **तवोअ–तपस्या करो—**

बारह प्रकार के तप करने से हमारे देह और मन की शुद्धि होती है।

(14) **भावोअ–मैत्री आदि उत्तम भावना रक्खो—**

हमको सोलह प्रकार की भावनाओं का प्रतिदिन चिन्तन करना चाहिए ताकि हमारा जीवन निर्मल बने एवं शुभ भाव हों। इससे हमारी सद्गति होगी।

(15) **सज्झाय–स्वाध्याय करो—**

स्वाध्याय उत्तम तप है क्योंकि यह शुद्ध धार्मिक जीवन जीने की प्रेरणा देता है। हमको सूत्रों को याद करना चाहिए एव उनका अर्थ जानना चाहिए।

(16) **नमुक्कारो–नमस्कार मंत्र की गणना करो—**

हमको प्रातः उठते हुए एवं रात को सोते हुए नवकार मंत्र का जाप करना चाहिये एवं जब कभी हम कोई अन्य कार्य न करते हों, उस समय नवकार मंत्र का जाप चलता रहना चाहिये।

(17) **परोवयारो–परोपकार करो—**

दूसरों की सहायता करना एवं उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करना हमारा परम कर्तव्य है।

(18) **जयणा—**

प्रत्येक कार्य करने में सावधानी रक्खो ताकि जीव-हिंसा न हो।

(19) **जिनपूआ–श्री जिनेश्वर की पूजा करो**

हमको जिनेश्वर की अंग पूजा चन्दन से करनी चाहिये। केशर की शुद्धता का कोई भरोसा नहीं। अतः केशर पूजा करना उचित नहीं। पुष्पों का उपयोग हमें तभी करना चाहिये जब इनको तोड़कर या गन्दे हाथों से न लाया गया हो एवं उन्हें छेद कर अथवा उनकी पंखुड़ियां तोड़ कर भगवान को अर्पण नहीं करना चाहिये क्योंकि इससे

हिंसा होती है। वरक के बनाने की विधि हिंसक है। अत इन्हे उपयोग मे नही लेना चाहिये। विविध पूजाओ के समय फूल, फल, नैवेद्य अल्प मात्रा मे ही समर्पित किये जाने चाहिये, वहुत अधिक नही। भगवान के सम्मुख दीपक ढका हुआ रखना चाहिए, वरना जीवो की हिंसा होती है। मन्दिर मे विजली का उपयोग नही करना चाहिये क्योकि इससे अनन्त जीवो की हिंसा होती है। भगवान के सम्मुख चावल, फल और विशेषत नैवेद्य चढाने के बाद इन वस्तुओ को शीघ्र वहाँ से हटा देना चाहिये वरना वहाँ कीड-मकोडे आ जाते हैं, जो पाँव के नीचे आने से मरते है एव हम हिंसा के दोषी होते हैं। पूजा के समय पुरुषो को केवल मात्र धोती एव दुपट्टा ही उपयोग मे लेने चाहिये, वनियान चड्डी, जर्सी, मौजे, रुमाल, पेंट, पाजामा इत्यादि नही एव स्त्रिया को केवल पेटीकोट, साडी, ब्लाउज और रुमाल उपयोग मे लेने चाहिये, फ्राक, सलवार-कुर्ता इत्यादि नही। द्रव्य पूजा एव भाव पूजा के वाद ही घट धीरे से बजाना चाहिए।

(20) जिण थूमण–जिनेश्वर भगवान की स्तुति करो—

हमको ऐसे चैत्यवदन, स्तवन, सुमधुर स्वर एव राग से, धीमी-धीमी आवाज से बोलने चाहिये जिनमे भगवान के गुणो का कीर्तन हो, दास-भाव हो, स्वनिन्दा हो, आत्मगुण के विकसित करने की माँग हो, अन्य नही। अन्य तो सज्झाय होती है जो प्रभु के सम्मुख नही बोली जाती।

(21) गुरु थुम्र–सद्‌गुरु की स्तुति करो—

इसके अन्तर्गत गुरु भगवन्तो को आवश्यकतानुसार भोजन, वस्त्र, पात्र, औषधि इत्यादि का दान देना चाहिये। आवश्यकता से अधिक वस्त्र, पात्र इत्यादि वोहराने से हम उनको परिग्रही बनाने के भागीदार बनते है, जो पापमय है।

(22) साहम्मिवच्छल–समान धर्म वालो की वात्सल्य भाव से सेवा करो—

उनकी आवश्यकता की पूर्ति करना हमारा परम कर्तव्य है। उनको सामुहिक रूप से भोजन कराना सच्चा स्वामि-वात्सल्य नही है, यह तो भोज है।

(23) ववहारस्स य सुद्धि—व्यवहार शुद्धि रखो—

प्रत्येक व्यक्ति के साथ अच्छा व्यवहार रखना चाहिये, किसी को ठगना नही चाहिये, अथवा किसी के साथ कपट नही करना चाहिये।

(24) रहजत्या–रथ यात्रा करो—

भली प्रकार श्रृंगारित रथ मे जिनेश्वर भगवान की प्रतिमा रख कर, वाजे-गाजे सहित, चतुर्विध सघ के साथ, नगर के मुख्य भागो मे जुलूस निकालना चाहिये जिससे शासन की प्रभावना हो और भक्ति-भाव मे वृद्धि हो।

(25) तित्थजत्या–तीर्थ यात्रा करो—

वर्ष मे कम से कम एक बार शत्रुजय, गिरनार, आवू, समेत शिखर इत्यादि तीर्थो की यात्रा, कम से कम कुटुम्ब के साथ करनी चाहिये जिससे धार्मिक सस्कारो मे वृद्धि हो, किन्तु ध्यान रखा जाय कि यह यात्रा चौमासे मे न हो एव पर्यटन के ख्याल मे न हो।

(26) उवसम–उवक्षम—

क्षमा, नम्रता, सरलता और सन्तोष रक्खो।

(27) विवेग–विवेक—

कर्तव्य-अकर्तव्य, हित-अहित, सत्य-असत्य को समझो।

(28) संवर—

ऐसा व्यवहार रक्खो जिससे नये कर्मों का बन्धन न हो। इसके लिये हमको अठारह पापों से बचना पड़ेगा।

(29) भासा समिइ—

बोलने में सावधानी रखो। कठोर एवं अहितकर तथा किसी को चुभती हुई भाषा नही बोलनी चाहिये।

(30) छः जीव करुणा—

छः काया के जीवों के प्रति दया रक्खो ताकि अहिंसा धर्म का पालन हो सके।

(31) धम्मिअजण संसग्गो—

धर्मनिष्ट व्यक्तियों का संग करो।

(32) करणदमो—

इन्द्रियों का दमन करो ताकि कषायों से जीता जा सके।

(33) चरण परिणामो—

चारित्र लेने की भावना रक्खो।

(34) धम्मोवरि बहुमाणो—

चतुर्विध संघ के प्रति बहुमान रखने के लिये उनकी आज्ञा का पालन करो।

(35) पुत्थय लिहणं—

पुस्तकें लिखवाओ। धार्मिक पुस्तकें लिखवाकर उनके द्वारा धर्म का प्रचार एवं प्रसार करो ताकि जैन धर्म को लोग जाने एवं उसकी उपयोगिता समझ कर जैन धर्मावलम्वी बनें। ये पुस्तकें मुफ्त अथवा अत्यन्त कम मूल्य में बाँटी जानी चाहिये। यह उत्तम प्रभावना है।

(36) पभावणं तित्थे—

तीर्थ की प्रभावना करो। दीन-दुखियों का उद्धार करना उत्तम प्रभावना है। केवल मात्र व्याख्यान के बाद अथवा पूजा के बाद आगन्तुकों को रुपये या मिठाई बाँट देना हीं प्रभावना नहीं है।

सड्ढाण किच्चमेअं, निच्चं सुगुरुवएसेणं—

ये श्रावक के नित्य करने योग्य कर्तव्य हैं जो सद्गुरु के उपदेश से जानने योग्य हैं। उपरोक्त 36 कर्त्तव्यों के करने से श्रावक अपना आत्मिक विकास कर सकता है एवं ज्ञान, दर्शन, चारित्र की आराधना के लिए योग्यता प्राप्त कर सकता है। हमको इस ओर सही रूप से ध्यान देने की आवश्यकता है ताकि हम सही रूप से धार्मिक आराधना कर सकें एवं अनन्त भवों तक दुःख पाने के पश्चात प्रबल पुण्योदय के कारण अत्यन्त दुर्लभ मनुष्य जन्म को सफल कर सकें एवं मोक्ष मार्ग की ओर अग्रसर हो सकें।

□ □ □

संखेश्वरम् बना तीर्थ स्थल

☐ प्रस्तोता—श्री हीराचन्द बैद

राजस्थान की राजधानी जयपुर देश का गुलाबी नगर है। शहर के बाहर कई कॉलोनियो के विकास से इसका रूप ही बदल गया है। अति सुन्दर मालवीय नगर शहर से करीब 10 किलोमीटर दूर एक विशिष्ट विकसित उपनगर है। जयपुर शहर से रामनिवास बाग, मेडिकल कॉलेज, यूनिवर्सिटी और मालवीय इन्जीनियरिंग कॉलेज के बाद इसकी सीमा प्रारम्भ होती है। भगवान महावीर कैंसर हॉस्पीटल, मरस सकुल के बाईं ओर भगवान महावीर विकलाग सहायता समिति का वृहद् भवन, प्राकृत भारती एकेडमी का कार्यालय तथा आँखो का सबसे बडा हॉस्पिटल केलगिरी हॉस्पिटल आता है। यह दिल्ली रेल पथ के इस ओर है। रेल पथ के दूसरी ओर स्टॉक एक्सचेंज की बिल्डिग, पाच सितारा क्लार्क आमेर होटल, जयपुर का वृहद् सर्किल और आगे हवाई अड्डा है।

मालवीय नगर मे जैन श्वेताम्बर देहरासर की कमी को पूरा किया सखेश्वरम् परिसर के सखेश्वर पार्श्वनाथ जैन श्वेताम्बर मन्दिर ने। जैसलमेर के सुनहरी पाषाण से बनी सखेश्वर पार्श्वनाथ, महावीर स्वामी एव सुमतिनाथ भगवान की भव्य प्रतिमाओ की अजन शलाका अध्यात्मयोगी विजय-कलापूर्ण सूरिश्वरजी महाराज साहब के द्वारा जयपुर मे सम्पन्न हुई। राजस्थान केसरी आचार्य भगवन विजय सुशील सूरिश्वरजी महाराज साहब द्वारा प्रदत्त मोहर्त मे इन प्रतिमाओ का प्रवेश शालीनता से सखेश्वरम् परिसर मे कराया गया। करीब तीन वर्ष पूर्व गच्छाधिपति विजय-इन्द्रदिन सूरिश्वरजी महाराज साहब के नेतृत्व मे प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न हुआ। 9 दिन तक अनेक साधु-साध्वियो द्वारा आयोजित यह समारोह यादगार बन गया। सेठ आनन्दजी कल्याणजी पेढी के प्रमुख श्री श्रेणिक भाई, कस्तूर भाई, सखेश्वर पेढी के सेठ अरविन्द भाई, पन्नालाल महावीर आराधना केन्द्र कोबा, के श्री हेमन्तभाई, श्री कुमारपालभाई शाह एव रिजर्व बैंक के डिप्टी गवर्नर श्री देवेन्द्रराजजी मेहता ने समारोह मे पधार कर गरिमा प्रदान की।

प्रतिष्ठा की प्रथम वर्षगांठ समारोह पर भाई मनोजकुमारजी हरण ने प्रेरणा दी कि मूल गम्भारे में दो काऊसगिया भगवान की मूर्तियां और विराजमान करने से शोभा निखर जायेगी तथा मन्दिरजी के ऊपर शिखर बनाने की भी प्रेरणा उन्होंने दी। एक वर्ष में ही दोनों कार्य सम्पन्न कराये गये।

मन्दिरजी के नीचे तलघर में श्री समेद्-शिखर पर्वत की रचना का काम कराने का निश्चय हुआ। पोरबंदर के पत्थर एवं मकराने के पत्थर से 1200 वर्गफीट में बम्बई के निष्णात् कारीगरों से पहाड़ का निर्माण करवाया गया। ऐसा मानना है कि कहीं भी अभी तक इस तरह के पहाड़ का निर्माण नहीं हुआ है।

दोनों काऊसगिया प्रतिमाओं की अन्जन शालाका मेड़ता सिटी में आचार्य भगवन्त विजय सुशीलसूरिश्वरजी महाराज साहब के हाथों सम्पन्न हुई तथा शान्तिनाथ भगवान की एक प्रतिमा की अंजनशालाका भीनमाल में राष्ट्रसंत आचार्य पद्मसागर सूरिश्वरजी महाराज साहब के हाथों सम्पन्न हुई।

प्रमुख जैनाचार्य साहित्य एवं कला निष्णात विद्वान विजय यशोदेव सूरिश्वरजी महाराज साहब ने मन्दिरजी में भगवती पद्मावती देवी की प्रतिमा विराजमान करने की प्रेरणा दी। इसी के अनुरूप मन्दिरजी में मकराने की सात सुन्दर देहरियों का निर्माण कराया गया, जिसमें पद्मावतीजी, सरस्वती जी, लक्ष्मी देवी, विजयहिरसूरिश्वरजी, जिनकुशल सूरिश्वरजी, मणिभद्रजी एवं नाकोड़ा भैरवजी की प्रतिमाएँ विराजमान करने का निश्चय किया गया। जयपुर के प्रमुख कारीगरों से इन मूर्तियों का निर्माण कराया गया। इनकी प्रतिष्ठा हेतु राष्ट्र संत आचार्य श्री पद्मसागर सूरिश्वरजी महाराज साहब से विनती की गई। बड़ी उदारता-पूर्वक उन्होंने स्वीकृति प्रदान की। आज से करीब तीन माह पूर्व आचार्य भगवन्त अपने 16 शिष्यों सहित मालवीय नगर पधारे। करीब 8 साध्वीजी महाराज साहब इस अवसर पर पधारे।

5 रोज के भव्य प्रतिष्ठा महोत्सव के बाद इन प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा आचार्य भगवन्तों के हाथों सम्पन्न हुई। महोत्सव में राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री भैरूसिंहजी शेखावत, गृहमंत्री श्री कैलाशजी मेघवाल, विधानसभा अध्यक्ष श्री हरिशंकरजी भाभड़ा, पूर्वमंत्री श्री शांतिलालजी चपलोत, मुख्य सचिव श्री मीठालालजी मेहता, सांसद श्री गुमानमलजी लोढ़ा, अहमदाबाद के श्री हेमन्त भाई, बम्बई से श्री सुमेरमलजी बाफना तो पधारे ही, मद्रास, अहमदाबाद, दिल्ली, अलवर, ब्यावर व अनेक स्थानों से भी काफी भाई-बहिन पधारे। जयपुर जैन समाज के सभी वर्गो के अध्यक्ष महोदयजी भी महोत्सव में पधारे।

5 रोज का यह महोत्सव खूब शालीनता को प्राप्त हुआ। रोजाना दो-ढाई हजार भाई-बहिन व्याख्यान का आनन्द लेते रहे। खूब धर्म जागृति हुई।

जयपुर से 10 किलोमीटर दूर संखेश्वरम् परिसर का यह देहरासर तीर्थ-स्थल बन चुका है। काफी अच्छी संख्या में भाई-बहिन पूजन, दर्शन का लाभ ले रहे हैं। एक सौ इक्कीस जगह के पार्श्वनाथ भगवान के सुन्दर चित्र, भगवान महावीर के जीवन-दर्शन के चित्र एवं ऐतिहासिक चित्रों से यह देहरासर काफी आकर्षक बना है।

आप जब भी इस ओर पधारे तो इस तीर्थ-स्थल के दर्शनों के लाभ से वंचित न रहें यही आग्रहपूर्ण विनती है। □

क्या विद्या विवादार्थ. . . ?

☐ साध्वी श्री सरस्वती श्रीजी म

विद्या मे अनोखी शक्ति है। विद्या की आदश उपासना जीवन का परम कल्याण करने वाली है, वह तरणतारिणी है, ससार सागर से पार कराने वाली है, सिद्धि की साधिका है। विद्या का परिपूर्ण प्रकप केवल-ज्ञान है जो हमारा लक्ष्य है। ऐसी अनूठी शक्ति विद्या का भी दुरुपयोग देखा जाता है, अनेको व्यक्ति थोडा-सा अक्षर-ज्ञान प्राप्त कर अपने आपको वडा भारी विद्वान समझने लगते हैं और अपनी विद्या का उपयोग विवाद वितण्डावाद मे करते हैं। अपनी मतिकल्पना से, सच्चे-झूठे, तर्क-वितर्क से भोले लोगो को प्रभावित करके मत-मतान्तर स्थापित करते है। वाद-विवाद वढाकर समाज मे अनैक्य और पृथकता का निर्माण करते हैं। स्वय उसके अगुआ वनकर पूजा-प्रतिष्ठा करते हैं और जनता को पथभ्रष्ट करते हैं। ऐसे लोगो की विद्या तरण-तारिणी न होकर डूवने-डुवाने वाली हो जाती है। विद्या का उपयोग विवाद के लिए नही अपितु आत्म-ज्ञान के लिए होना चाहिए। दुष्टजन विवाद के लिए विद्या का दुरुपयोग करते है। सज्जन आत्म ज्ञान करने-कराने के लिए विद्या का उपयोग करते हैं। शक्ति एक ही है परन्तु उपयोग की अपेक्षा से एक मे दुराधना है दूसरे मे आदश उपासना है।

विद्या का परिणाम विनय, विनम्रता, जिज्ञासा भाव होना चाहिए। किसी दूसरे का पराभव करके अपने अभिमान का पोषण करने मे विद्या की उपासना नही है। सच्चा विद्यावान् विनयी, विनम्र होता है, वह अपने आपको अपूण, ज्ञान महासागर के किनारे कक्र चुगने वाला छोटा-सा जिज्ञासु और प्रयोगशाला का विद्यार्थी समझता है। अल्प ज्ञानवाला तुच्छ अपने आपको महाज्ञानी समझकर अहकार से फूला नही समाता।

भर्तृहरि ने युक्तियुक्त कहा—

यदाकिंचितलोऽह द्विप इव मदान्ध समभवम्।

जब मैं थोडा सा ज्ञान रखता था तो मैं हाथी के समान मदान्ध था। परन्तु जब ज्ञानीजनो के पास से ज्ञान प्राप्त करने का क्रम चालु रहा तो मेरा सारा अभिमान ज्वर दूर हो गया। केवलज्ञान होने तक ज्ञान मे परिपूर्णता का कोई दावा नही कर सकता, परन्तु आज तो नक्शा ही पलट गया है—सम्पत्ति के विपय मे सन्तोप कर पूर्णता का अनुभव करना चाहिए वहाँ तो अपूणता का अनुभव करते हैं और ज्ञान के विपय मे अपूर्णता का अनुभव करना चाहिए वहाँ अपने आपको पूर्ण ज्ञानी समझ वैठते हैं, कितनी अज्ञानता, कितनी मूर्खता।

ज्ञानी का हृदय दर्पण की तरह स्वच्छ होना चाहिए। शिक्षा से सम्पन्न होने पर भी यदि व्यक्ति दगावाज है, कूट-कपट वाला है, वह व्यक्ति कभी ज्ञानी नही हो सकता।

ज्ञानी तो स्वच्छ, निर्मल, सहृदय और सुकोमल हुआ करता है।

वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि।

ज्ञानी व्यक्ति अपने कर्तव्य-पालन के प्रति वज्र से भी कठोर होते हैं, परन्तु दूसरो के प्रति वे फूल से भी ज्यादा कोमल होते हैं। अपने दु खो को सहन करने मे वे वज्र से भी ज्यादा कठोर होते हैं, परन्तु दूसरो के दु खो के प्रति उनका नवनीत-सा कोमल हृदय द्रवीभूत हो उठता है। ●

त्याग की निष्पत्ति

□ मुनि श्री विमलसागरजी म० सा०

वस्तु को
छोड़ देने मात्र से नहीं होता
त्याग निष्पन्न ।
असल त्याग तो है
वस्तु को हाथ से
छोड़ देने के साथ-साथ
मन से भी छोड़ देने में ।
मुट्ठी से छूटने के बाद भी
यदि वस्तु पर मन की पकड़ है
तो त्याग सिर्फ विडम्बना है ।
हाथ से छूट जाना वस्तु का
सरल है;
किन्तु
मन की पकड़ ढीली करना
और
अनासक्त भाव आना दुष्कर है ।
अनासक्ति निष्पत्ति है त्याग की ।
त्यागी पूजनीय है इसीलिए ।
आज होता है अक्सर यह कि
बाहरी टीम-टाम तो छूट जाती है
किन्तु मन में अग-जग/दुनियादारी
बनी रहती है ।
बन जाता है
जीवन-पाखण्ड
ऐसे में ।

☐ प्रतिवर्ष प्रकारान्तर से एकता के नाम पर लाखो के धन का धुआं किया जाता है किन्तु हासिल कुछ नहीं हो पाता और न ही हो पाएगा। हमारी उन्नति एकता से नहीं वरन् एकमेक होने पर होगी। अपना भिन्न स्वरूप सलामत रखकर निकटता की चेष्टा एकता है और अपने स्वरूप को समाप्त कर परस्पर ओतप्रोत हो जाने का नाम एकमेकता है।
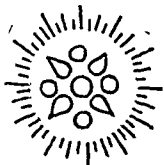
एकता चाहिए या एकमेकता— जरा सोचिए

☐ श्री आशीषकुमार जैन

मुझे कोई आवश्यकता नही थी कि मैं अपने समय का व्यय करता किन्तु हो रही समाज हानि की रोकथाम के लिए हाथो ने कलम पकडी और कलम कागज पर दौड पडी। अपनी व्यस्तता से समय निकालकर यदि हम देखें तो पायेंगे कि आजकल एक सारहीन प्रवृत्ति समाज मे सर्वत्र फैली है जो समाज को चिन्तनविहीन कर जडता की ओर धकेल रही है। जैन एकता के इस मिथ्या शोर का युवा पीढी को धर्म क्रियाओ के प्रति उदासीन करने मे बडा हाथ है।

श्वेताम्बर मूर्तिपूजक समाज की ओर से सर्वप्रथम एकता का शखनाद किया स्वर्गस्थ आचार्य देव पजाब केसरी विजयवल्लभ सूरीश्वर जी महाराज ने। वह दीघद्रष्टा महापुरुष समग्र जैन समाज को किस प्रकार देखना चाहते थे यह उनके निम्न उद्गार से प्रकट होता है—'होवे कि न होवे परन्तु मेरी आत्मा यही चाहती है कि साम्प्रदायिकता दूर होकर जैन समाज एकमात्र श्री महावीर स्वामी के झडे के नीचे एकत्रित होकर श्री महावीर की जय बोले।"

उद्देश्य स्पष्ट, भावना निर्मल एव सही दिशा मे प्रयत्न होने के कारण आचाय श्री जी को इच्छित सफलता मिली। उन्ही के सद्प्रयासो का परिणाम है कि प्राय सभी नगरो मे महावीर जयन्ती एक दिन आगे पीछे होने पर भी जुलूस सभी सम्प्रदायो का सम्मिलित निकलने लगा। रोटी-बेटी का व्यवहार परस्पर प्रारम्भ हुआ। आक्षेपो की बौछार व हैण्डबिलो का सिलसिला भी थमा।

स्वर्गीय आचार्य श्री जी को अनुभव एव ज्ञान के आधार पर स्पष्ट भान था कि

विपरीत मान्यताओं वाले सम्प्रदायों में एकता किस सीमा तक सफल रह सकती है। इसलिये उन्होंने व्यावहारिक एकता पर ही बल दिया, निजी मान्यताओं के प्रचार प्रसार को एकता के बन्धन से मुक्त रखकर वातावरण खुला बनाए रखा। यही कारण है कि उन्होंने जिस एकता का सूत्रपात किया वह सभी आम्नायों की साधु संस्था के सहकार से कायम है।

धर्म को जीवन में उतारने हेतु पहले धर्म में स्वयं उतरना पड़ता है। हम समझे या ना समझना चाहें कि सम्प्रदाय धर्म के द्वार है। सम्प्रदाय की मर्यादा में एक निश्चित पद्धति के अनुसार आचरण करते हुए व्यक्ति धीमे-धीमे धर्म का स्वरूप सुगमता से प्राप्त कर लेता है। यह हमारा दुर्भाग्य है कि 'धर्म के द्वार' को दीवार के रूप में प्रचारित किया जाता है। 'हमे सम्प्रदाय की दीवारों को तोड़ना होगा' ऐसा विलाप करते स्वयंभू बुद्धिजीवी नेता जैन समाज का अत्यधिक अहित कर रहे है किन्तु हमारी बुद्धि की विडम्बना है कि हमे उनकी लुभावनी बाते अनुकूल प्रतीत होती है।

'बिखरे हुए तिनके कचरे के रूप में होते है किन्तु यदि इन्हे एकत्र कर बाँध दिया जाए तो झाड़ू बनकर कचरा बुहार देते है। हमे भी इस प्रकार संगठित होकर अपने दिलों का मैल साफ कर देना है।' ऐसे उदाहरण देकर एकता प्रेमी नेतागण खूब वाहवाही प्राप्त करते है। यदि हम अपनी बुद्धि का थोड़ा प्रयोग कर सोचें कि झाड़ू सजावट या संग्रह की वस्तु नही है। निरन्तर उपयोग से उसके सौ डेढ़ सौ तिनकों के हजारों टुकड़े होकर एक दिन निश्चित बिखरेंगे। उनकी उपयोगिता तब सर्वथा समाप्त हो जाएगी। वे फिर से अपना पूर्व स्वरूप कभी प्राप्त नहीं कर सकते।

एकता का आह्वान सहज ही प्रश्न खड़ा करता है कि अनेकता कहाँ है? अन्य धर्मियों में, जनगणना में हमारी पहचान 'जैन' नाम से है। हमारा ध्वज एक है, हमारे मध्य सांसारिक व्यवहार बिना संकोच होते हैं। एकता का कोलाहल हमें यह मानने पर बाध्य करता है कि हम अनेक हैं। हमारे सामाजिक रूप से एक होने पर भी एकतावादी आखिर चाहते क्या है? परस्पर विपरीत सम्प्रदायों को सिद्धान्ततः एकमत करने की तिलस्मी शक्ति क्या इनके पास है? क्या यह संभव है कि मात्र नग्नता को मुक्ति की अनिवार्यता मानने वाले वस्त्र धारण कर ले अथवा वस्त्रो की मान्यता वाले उन्हें त्याग दें?

कतिपय एकतावादी इससे भी ऊँची छलांग लगाकर सम्पूर्ण जैन समाज में सम्वतसरी एकता हेतु भागीरथ तप कर रहे हैं। ब्रह्मचारी रहकर सन्तान प्राप्ति की कामना क्या कभी पूर्ण हो सकी है? ऐसी ही हास्यास्पद स्थिति इन लोगों की है जो सम्प्रदायों के पृथक स्वरूप को मिटाए बिना उनके प्राणपर्व को एक करना चाहते है जो कतई संभव नही।

मतभेदों में यथावत् रहते निकटता अधिक दूरी का कारण बनती है। हमारे समाज में सभी सम्प्रदायों की संयुक्त सस्था बनाने की नवीन रीति प्रारम्भ हुई है। प्रायः देखने व सुनने में आता है कि आकाक्षाओं एवं विचारों में द्वन्द के कारण प्रारम्भ से ही इनमें घुटन पैदा हो जाती है जो निश्चित विघटन में ही परिवर्तित होती है। एकता का प्रयास भयंकर फूट को पैदा कर

देता है। इस प्रकार पडी दरारें धरती मे पडी दरार के समान वहुत प्रयत्नो से ही भरती है।

प्रतिवर्ष प्रकारान्तर से एकता के नाम पर लाखो के धन का धुआँ किया जाता हैं किन्तु हासिल कुछ नही हो पाता और न ही हो पाएगा। हमारी उन्नति एकता से नही वरन एकमेक होने पर होगी। अपना भिन्न स्वरूप सलामत रखकर निकटता की चेष्टा एकता है और अपने स्वरूप को समाप्त कर परस्पर ओतप्रोत हो जाने का नाम एकमेकता है। उदाहरणार्थ सूइयो का एक ढेर है जिसमे सूइया परस्पर छुई हुई है। ये सूइयाँ हाथ लगाते ही बिखर जायेंगी यही स्थिति एकता की है। इन सूइयो को भट्टी मे तपाकर कूटकर गट्ठा बनाने का नाम एकमेकता है जिसमे किसी भी सूई का अलग होना अब शक्य नही। एकता या एकमेकता चुनाव हमे करना है। समाज एकमेक तभी हो सकेगा जब हम स्वाध्याय एव सद्गुरुओ से प्राप्त सम्यक् ज्ञान के आलोक मे सत्य के पक्षपाती बनकर आगम विरुद्ध उत्सूत्र प्ररूपणा के त्याग मे विलम्व नही करेगे। गत सौ वर्षो मे सैकडो मुनियो एव हजारो श्रावक श्राविकाओ ने सत्य को अपनाकर जिनशासन की मूल परम्परा मे एकमेक होने का श्रेय पाया है।

एकता आन्दोलन ही एकमेकता मे सवसे बडा बाधक है। इसने समाज की प्रज्ञा को कुद किया है। एकता प्रचार से पीडित व्यक्ति मे यह जिज्ञासा ही नही होती कि हम मदिरमार्गी हैं तो क्यो ? ढूढक या तेरापथी हैं तो क्यो ? 'हम मात्र जैन हैं' इस थोथी धारणा पर अवलम्बित व्यक्ति न तो सद्गुरु की पहचान कर पाते है और न ही ज्ञान के अभाव मे इतिहासवाद युक्तिवाद, आगमिक परम्परा एव आध्यात्मिक उपयोगिता के आधार पर सत्यासत्य का निर्णय। एकता के अत्यधिक विज्ञापन के कारण हमे एकमेक होने का ख्याल भी नही उपजता, लक्ष्य प्राप्ति हेतु पुरुषार्थ तो दूर की वात है।

एकता की तोतारट जहाँ हमे पग-पग पर अपनी भिन्नता की याद दिलाती है वहीं इसका सर्वाधिक घातक प्रभाव युवा पीढी पर पडा है। युवा पीढी सम्प्रदाय के बन्धनो को कभी स्वीकार नही करेगी। ऐसे कुप्रचार से एकता के खोखले विचारो मे उलझे रहने एव मुनि सस्था के प्रति पैदा की गई अश्रद्धा के कारण युवा वर्ग की मदिर, स्थानको के प्रति प्रीति निरन्तर कम हो रही है। युवाओ मे व्याप्त ज्ञान एव क्रिया के अभाव हेतु एकतावादियो को कभी क्षमा नही किया जा सकता।

जैन समाज मे आज सर्वाधिक ज्वलन्त प्रश्न है श्री सम्मेतशिखर जी महातीर्थ के अधिकार का। विहार सरकार इस तीर्थ के अधिग्रहण हेतु अध्यादेश पारित करना चाहती है। दिगम्बर समाज इसका समर्थन कर रहा है क्योकि इससे उसे वह अधिकार सहज ही प्राप्त हो जायेगे जो न्यायिक एव न्यायोचित रूप से उसके नही हैं। श्वेताम्वर समाज प्राणप्रण से इसका घोर विरोध कर रहा है क्योकि अधिग्रहण के पश्चात् सदियो से चला आ रहा स्वामित्व छिन जाएगा।

सत्य का पक्ष लेने की अपेक्षा हमारे परम प्रबुद्ध एकतावादी इस विपत्ति के समय भी चुप नही हैं। पूर्व परम्परा, ऐतिहासिक फरमान, विक्रय पत्र, अदालती निर्णयो का

अपमान कर दूसरे पक्ष को समान अधिकार देकर उदारता दिखाने का उपदेश दे रहे हैं।

श्वेताम्बर नेताओं के सुप्रयास से फिलहाल यह अध्यादेश फाइल हो गया है। इससे हमें निश्चिन्त एवं खुश नहीं होना है। दिगम्बर समाज इसे लागू करवाने की जी तोड़ कोशिश करेगा। तीर्थ की मर्यादा एवं पावनता की रक्षार्थ हमें हर प्रकार के बलिदान हेतु कटिबद्ध रहना है। एकता के निःसार विचारों से स्वयं को पंगु होने से बचाकर हर कीमत पर अपने पूर्वजों की भाँति तीर्थ की रक्षा करनी है। ❖

• • •

धर्म ध्वजा फहरायें

□ श्री विनीतकुमार सान्ड

जिनके दर्शन से हो जाता, पाप समूल शमन है,
संघ सहित आचार्य भगवतों को सौ बार नमन हैं।
जिनकी जय से गली गली, जयपुर की गूंज रही है,
श्री तपगच्छ के मन्दिर से, धर्म की धार बही है।
मोक्षमहल के घी से घी वालों का रास्ता महका,
जिनकी खुशबू से जयपुर के, जन-जन का मन चहका।
गुरु चरणों से हुआ सुशोभित, धरती और गगन है,
संघ सहित आचार्य भगवंतों को सौ बार नमन है।
श्री निर्मल सागर जी के तप से मन के मैल धुले हैं,
श्री पदमोदय सागर जी के तप से सिद्धि के द्वार खुले हैं।
श्री उदय सागर जी के तप से शीतलता फैली है,
साध्वी सरस्वती श्री के तप से विद्या के द्वार खुले है।
साध्वी श्री शासन रत्ना जी ने सुव्रत की बात बताई,
आचार्य भगवंतों सा नम्र बनने की इच्छा है।
तन मन धन से करनी हमें, साधु-साध्वी की रक्षा है,
साधु साध्वी द्वारा घर घर धर्म ध्वजा फहरावें।
जिनके दर्शन से खिल जाता, तत्क्षण हृदय सुमन है,
संघ सहित आचार्य भगवंतों को सौ सौ बार नमन है॥

श्री जैन श्वे. तपागच्छ संघ, जयपुर की महामहिम राष्ट्रपति से विनम्र अपील

श्री सम्मेतशिखरजी तीर्थ सम्बन्धी बिहार सरकार के अध्यादेश पर स्वीकृति नहीं दें।

तपागच्छ सघ जयपुर की महासमिति की दि 17-4-94 की बैठक मे पारित प्रस्ताव अविकल रूप से

श्री सम्मेतशिखरजी महातीर्थ जहा 24 तीर्थकरो मे से 20 ने मोक्ष प्राप्त किया, का स्वामित्व, प्रभुत्व एव व्यवस्था सैकडो वर्षो से श्वेताम्बर जैन मूर्तिपूजक आमनाय द्वारा की जाती रही है। जैन समाज के ही दूसरे अग दिगम्बर समुदाय द्वारा यहा की व्यवस्था के सम्बन्ध मे तथा अपना अधिकार एव स्वामित्व स्थापित कराने हेतु न्यायालयो मे निरन्तर वाद चलाए जाते रहे लेकिन उन्हे मात्र सेवा-पूजा करने के अधिकार के किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप करने का अधिकार प्रिवी कौंसिल से लेकर आजादी के 47 वर्षो के कार्यकाल मे भी किसी न्यायालय ने नही दिया।

अब इस आपसी विवाद की आड मे बिहार सरकार द्वारा जो राज्य सरकार के अन्तर्गत बोर्ड गठित करने का अध्यादेश जारी करने हेतु महामहिम राष्ट्रपति को स्वीकृति हेतु प्रेषित किया गया है, इस श्रीसघ की यह नव-निर्वाचित महासमिति घोर विरोध करती है तथा बिहार सरकार के इस अन्यायपूर्ण कुकृत्य की तीव्र शब्दो मे भर्त्सना करती है। ऐतिहासिक तथ्य, न्यायालयो द्वारा समय समय पर दिए गए निर्णयो एव बिहार सरकार द्वारा स्वय लिखित रिजोइण्डर मे इस तथ्य को स्वीकार करने के उपरान्त भी कि यह तीर्थ श्वेताम्बर तीर्थ है और इस तीर्थ की सेवा-पूजा विधि विधान, कार्य सचालन, व्यवस्था, विकास कार्य आदि आदि श्वेताम्बर मूर्ति पूजन आमनाय के अनुसार एव श्वेताम्बर समाज द्वारा ही सम्पन्न होगे, अब इस प्रकार एक शात प्रिय एव अहिंसक समाज के आध्यात्मिक एव धार्मिक कार्य कलाप मे हस्तक्षेप करने का प्रयास असहनीय है।

बिहार सरकार के इस घृणित एव कुकृत्य के प्रति घोर विरोध प्रगट करने एव अपने अधिकारो की प्राप्ति एव रक्षा करने मे श्वेताम्बर आमनाय का प्रत्येक व्यक्ति हर प्रकार का बलिदान करने मे पीछे नही रहेगा जिससे देश मे अनावश्यक रूप से अशान्ति का वातावरण बनेगा।

अत महासमिति भारत के राष्ट्रपति एव बिहार के राज्यपाल से विनम्र निवेदन करती है कि बिहार सरकार के श्री सम्मेतशिखरजी तीर्थ सम्बन्धी अध्यादेश पर स्वीकृति प्रदान नही करें, श्वेताम्बर समाज की वैधानिक स्थिति को यथावत कायम रखें तथा बोर्ड गठन के नाम पर जो निहित स्वार्थो की पूर्ति करने का प्रयास किया जा रहा है उसको फलीभूत नही होने दें। □
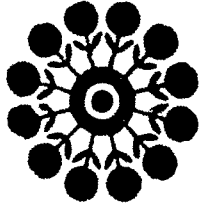
तीर्थ, तीर्थंकर केवलज्ञानी एवं अवधिज्ञानी

• श्री भगवानदास पल्लीवाल

तीर्थ की परिभाषा—

तीर्थ शब्द तृ धातु से निष्पन्न हुआ है। तृ धातु के साथ थक् प्रत्यय लगाकर तीर्थ शब्द की उत्पत्ति होती है। इसका अर्थ है, जिसके द्वारा अथवा जिसके आधार से तरा जावे। अर्थात जो अपार संसार से पार करे उसे तीर्थ कहते हैं। ऐसा तीर्थ जिनेन्द्र भगवान का चरित्र ही हो सकता है। अतः उनके कथन करने को तीर्थख्यान कहते हैं।

आवश्यक नियुक्ति में चातुवण अथवा साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका इस चतुर्विध संघ अथवा चतुवर्ण को तीर्थ माना है। इनमें भी गणधरों व उनमें भी मुख्य गणधर को मुख्य तीर्थ माना है। मुख्य गणधर ही तीर्थंकर के सूत्र रूप उपदेश को विस्तार देकर भक्तजनों को समझाते हैं, जिससे वे अपना कल्याण करते हैं। कल्पसूत्र में भी इसका समर्थन किया जाता है।

तीर्थो की संरचना का कारण—

तीर्थ शब्द क्षेत्र मंगल या क्षेत्र मंगल के अर्थ में बहु प्रचलित है। जिस स्थान पर तीर्थकरों के गर्भ, जन्म, दीक्षा, केवलज्ञान और निर्वाण कल्याणकों में से कोई कल्याणक हुआ है अथवा किसी निर्ग्रन्थ वीतराग तपस्वी मुनि को केवलज्ञान या निर्वाण प्राप्त हुआ हो वह स्थान महर्षियों के संसर्ग से पवित्र हो जाता है। इसलिए वह पूज्य भी बन जाता है।

तीर्थकरों के निर्वाण क्षेत्र कुल पाँच हैं। कैलाश, चम्पा, पावा, अर्जयन्त और सम्मेद-शिखर। पहले चार क्षेत्रों में क्रमशः ऋषभदेव, वासुपूज्य, महावीर और नेमिनाथ मुक्त हुए। शेष 20 तीर्थकरों ने सम्मेद-शिखर से मुक्ति प्राप्त की।

तीर्थंकर, केवलज्ञानी एवं अवधिज्ञानी—

तीर्थकर भगवान के लिए जरूरी है कि उनके पाँच कल्याणक होते हैं—गर्भ कल्याणक—माता के गर्भ धारण करने के साथ ही तीर्थंकर की माता को चौदह सपने आते हैं। तीर्थकर भगवान अवश्य ही चतुर्विध संघ की स्थापना करने वाले होते हैं। तीर्थकर भगवान माँ के गर्भ में आने से पूर्व तीन ज्ञान के ज्ञाता होते हैं—मति, श्रुति एवं अवधि। जन्म होते ही इन्द्र एवं अन्य देव तीर्थकर भगवान को मेरू पर्वत पर स्नान कराने ले जाते हैं। तीर्थकर भगवान का केवल ज्ञानी हो जाना जरूरी है।

केवलज्ञानी—

केवलज्ञान प्राप्त हो जाने के बाद तीनों कालों के समस्त भव के ज्ञाता हो जाना जरूरी है। केवलज्ञानी की माता को चौदह स्वपन आना जरूरी नहीं है। केवल-

ज्ञानी चराचर विश्व को जानता है । यहा तक कि मन के भाव को भी जान सकता है। केवलज्ञानी चतुर्विध सघ की स्थापना नही करते हैं।

ग्रवधिज्ञानी—

ग्रवधिज्ञानी को द्रव्य क्षेत्र, काल क्षेत्र एव भाव क्षेत्र की सीमा होती है।

महापुरुषो के ससर्ग से स्थान भी पवित्र हो जाता है और फिर जहा महापुरुष रह रहे हो, वह भूमि पूज्य होती है । जैसे रस अथवा पारस के स्पर्श मात्र से लोहा सोना बन जाता है।

पृथ्वी पूज्य नही होती उसमे पूज्यता महापुरुषो के ससर्ग के कारण ग्राती है। पूज्य तो वस्तुत महापुरुषो के गुणो जिनकी ग्रात्माग्रो मे विशुद्ध या शुभ भावो की सम्पुरणा होती है। उनमे से शुभ तरगें निकल कर ग्रास-पास के सम्पूर्ण वातावरण को व्याप्त कर लेती है और जब तपस्वी व रिद्धि धारी मुनियो का इतना प्रभाव होता है तो तीन लोको के स्वामी तीर्थंकर भगवान के प्रभाव का तो कहना ही क्या, उनका प्रभाव तो ग्रचिन्तय है, ग्रलौकिक है। तीर्थंकर की प्रकृति सम्पूर्ण पूज्य प्रवृतियो मे सर्वाधिक प्रभावशाली होती है और उसके कारण ग्रन्य प्रकृतियो का अनुभव सुखरूप परिपात हो जाता है। तीर्थंकर भगवान जिस नगरी मे जन्म लेते हैं, वह नगरी उनकी चरणधूलि से पवित्र हो जाती है । जहा वह दीक्षा लेते हैं वहा का कण-कण शुचिता को प्राप्त होना है। जिस स्थान पर केवलज्ञान होता है वहा देव समवशरण की रचना करते है। जहा तीर्थंकर का निर्वाण होता है, उस भूमि का तो कहना ही क्या ?

तीर्थ यात्रा का उद्देश्य—

तीर्थ यात्रा का उद्देश्य यदि एक शब्द मे प्रकट किया जावे तो वह है ग्रात्म-विशुद्धि । तीर्थ यात्रा का उद्देश्य बाह्य-विशुद्धि नही है । यह हमारा साध्य नही है। न हमारा लक्ष्य। ग्रात्मा की उन्नति उन्मुखता पर से निवृत्ति और आतम-प्रवृत्ति हमारा ध्येय है। पुण्य की प्रक्रिया सरल है ग्रात्म-शुद्धि की प्रक्रिया समझने एव करने मे कठिन है। तीर्थयात्रा से ग्रात्म-शुद्धि होती है।

तीर्थ यात्रा कैसे करें—

यात्रा सघो मे यात्रा करने के पक्ष-विपक्ष मे तर्क दिए जा सकते हैं। किन्तु एकाकी की ग्रपेक्षा सघो के साथ यात्रा करने का सबसे बडा लाभ यह है कि यात्रा के कष्ट कम अनुभव होते हैं। व्यय भी कम पडता है । यात्रा करने के निश्चय के साथ ही मन को भक्ति मे लगाना चाहिये । घर से रवाना होने के साथ ही घर-गृहस्थी का मोह छोड देना चाहिये, व्यापार की चिन्ता छोड देनी चाहिये तथा ग्रन्य सासारिक प्रपचो से मुक्त हो जाना चाहिये । यात्रा मे सामान यथा-सम्भव कम एव मौसम के ग्रनुसार रखना चाहिये । तीर्थो पर गन्दगी नही करनी चाहिये। ग्रर्थात बाहरी सफाई का विशेष ध्यान रखना चाहिये। स्त्रियो को एक बात का विशेष ध्यान रखना चाहिये कि मासिक धम के समय मे मन्दिर, धर्म सभा, शास्त्र प्रवचन, प्रतिष्ठा मण्डप मे नही जाना चाहिये। पूजन की सामग्री घर से ही ले जानी चाहिये, यदि मन्दिर की सामग्री ले तो उस पर न्योछावर ग्रवश्य दे देनी चाहिये। भगवान के समक्ष कोई मनौती नही मानना चाहिये। कोई कामना लेकर नही जाना चाहिये, निष्काम भक्ति सभी सकटो को दूर करती है।

राग का त्याग

□ **श्री संजीव खुराना**

नीले गगन में एक चील स्वतन्त्र रूप से उड़ान भर रही थी इतने में अन्य चीले और आई तथा इस एकाकी चील पर झपटने लगीं। परस्पर लड़ाई प्रारम्भ हो गई। चिन्तन चला, ये झगड़ा किस बात का। जब ऊपर अच्छी तरह दृष्टिपात किया तो देखता हूँ कि उस पहले वाली चील के मुह में (मांस) अभक्ष्य वस्तु है। उस टुकड़े को छीनने के लिये परस्पर लड़ाई चल रही है तो सोचा क्या ये इतना छोटा अभक्ष्य वस्तु का टुकड़ा लड़ाई का कारण है? चील ऐसे ही आपस में लड़ना चाहती है किन्तु कुछ समय पश्चात पुन: देखा तो वही पहले वाली चील आकाश में मस्ती से भ्रमण कर रही है। अब उससे कोई झगड़ा नहीं कर रहा, इसका क्या कारण है? जब देखा तो उसके मुख में कुछ नहीं था।

मांस के टुकड़े के लिये उस चील से झगड़ा था अपितु जब तक पहले वाली चील का उस मांस के टुकड़े के प्रति राग था, आसक्ति थी, लगाव था, ममत्व था तब तक झगड़ा था। जब उसने मांस के टुकड़े के प्रति राग भाव हटा दिया और उसे छोड़ दिया वह समुद्र में जा गिरा और झगड़ा शांत हो गया।

अत: इस दृष्टांत के कहने का तात्पर्य यह है कि जब तक हम राग भाव नहीं छोड़ेंगे तब तक संसार का झगड़ा चलता रहेगा और हम सुखी नहीं हो सकेंगे। अत: उस चील की भाँति हम भी इस संसार के भौतिक पदार्थों से राग भाव दूर कर सुखी बनें, समृद्धशील रहें।

□ □ □

श्री अक्कीपेट बैंगलोर में चातुर्मासिक युवा उत्कर्ष जैन शिविर का उद्घाटन

अपने प्रवचनो के माध्यम से युवा पीढी का उत्कर्ष करने वाले, सतत युवको के हित-चिंतक जाने-माने जैन शासन के विद्वान पू० पन्यासजी श्री अरुणविजयजी महाराज सा० आदि मुनि मण्डल का श्री वासुपूज्य स्वामी जैन श्वे० मू० सघ अक्की पेट—बैंगलोर की जनता ने पूज्य श्री का चातुर्मास प्रवेश कराया है।

श्री सघ ने पूज्य श्री की सान्निध्यता मे युवको के लाभार्थ चातुर्मासिक रविवारीय युवा उत्कर्ष जैन शिविर का आयोजन किया है। दि० 24 जुलाई के शुभ दिन पूज्य श्री की सान्निध्यता मे कर्नाटक राज्य के नगर विकास मत्री श्रीमान पेरिक्ल मल्लप्पा ने ज्ञानदीप प्रज्वलित करके शिविर का उद्घाटन किया।

शिविर के उद्घाटन समारोह मे समारम्भ की अध्यक्षता करते हुये जैन समाज के विद्वान पडितप्रवर श्रीमान शान्तिभाई व० शेठ ने युवको का आह्वान किया कि वे अपनी पहचान सम्प्रदाय के आधार पर नही लेकिन जैन के नाम पर दे। 84 वर्ष के वयोवृद्ध पडितजी ने बडा जोशीला वक्तव्य दिया। अतिथि महोदय के स्थान पर विराजे हुये डा० पी० सी० मानव ने अपने वक्तव्य मे युवको को अनेक दृष्टान्तो से नैतिकता का बोध दिया। श्रीमान ज्ञानराजजी मेहता ने अपने ओजस्वी वक्तव्य मे सम्यग् ज्ञान का, भगवान महावीर के तत्वो का स्वरूप समझा कर युवको को धर्म के ज्ञान की तरफ प्रेरित किया। श्री अक्कीपेट के ट्रस्टीगण ने आगन्तुक अतिथियो का माल्यार्पण व शालार्पण से स्वागत किया। चिकपेट सघ के अध्यक्ष श्रीमान लक्ष्मीचन्दजी कोठारी ने चिकपेट-अक्कीपेट दोनो सघो की एकता बताई। केवलचन्दजी ने मानव जन्म की श्रेष्ठता समझाई।

युवको का उत्थान करने की तमन्ना रखते हुये पूज्य पन्यास प्रवर श्री अरुणविजयजी म० ने अपने डेढ घण्टे के तेजस्वी और ओजस्वी प्रवचन मे युवको की सुषुप्त चेतना जगाई। युवकों को सावधान किया कि आधुनिक नेताओ और अभिनेताओ के पीछे वे अपना जीवन बरबाद न करें। चरम सत्य को पाने के लिये इस शिक्षा शिविर की व्याख्या की। 650 से 700 की सख्या मे प्रवेश पाये हुये उपस्थित युवक-युवती वृन्द एव बैंगलोरवासी जनता ने गद्गद् हृदय से पूज्य श्री का एव शिविर का स्वागत किया। प्रतिदिन प्रवचन मे जनता उमडती ही जा रही है। पूज्य श्री की एक विशेषता है कि वे ब्लेक बोर्ड पर चित्रो सहित समझाते हुये सचित्र प्रवचन देते हैं। प्रत्येक शनिवारीय बाल सस्कार शिविर का भी आयोजन किया गया है। पूज्य मुनि श्री हेमन्त विजयजी म० 550 बालक-बालिकाओ मे सस्कारो का सिंचन कर रहे हैं।

☐
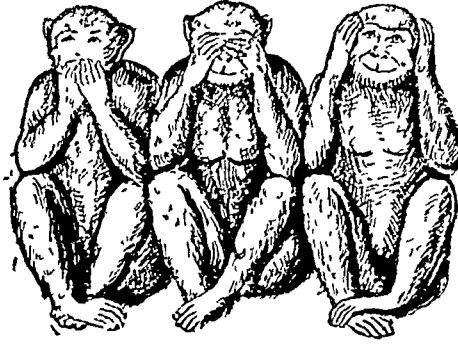
पर-निंदा प्रलयंकारी

☐ श्री अभयकुमार चौरड़िया

यावत परगुण दोष परिकीर्तने व्याप्ततं मनो भवनि
तावब्दरं विशुध्हे ध्याने व्यंग्र मनः कर्तु म ।।

महान श्रुतधर उमास्वामी वाचक ने प्रशयरीन में कहा है कि जब तक व्यक्ति का मन दूसरों के गुण दोष देखने और निंदा करने में प्रवृत्त रहेगा तब तक विशुद्ध ध्यान में मन व्यग्र ही बना रहेगा।

व्यक्ति की आत्मोन्नति तब तक सम्भव नहीं जब तक वह अपने मन को स्वच्छ एवं स्थिर न करले। जब तक मन में अशुद्ध प्रवृत्ति वनी रहेगी तव तक महान बनना सम्भव नहीं है।

मन को परनिंदा-अहंकार से मुक्त करने के लिये सतत् अभ्यास व जागृति की आवश्यकता है।

इसीलिए तुलसीदास ने कहा है :

कंचन तजवो सरल है,
सरल है त्रिया की नेह ।
निंदा स्तुति त्यागना,
तुलसी मुश्किल एह ।।

सोने का त्याग करना सरल है, सुन्दर स्त्री के नेत्रों का त्याग करना सरल है, लेकिन निंदा का त्याग करना वहुत कठिन है।

मन को शुद्ध वनाने के लिए तीन प्रकार से मौन रखना जरूरी है :

मन का मौन :
व्यक्ति चिंतनशील वनता है।

वचन का मौन :
व्यक्ति सद्‌गुणों का धारक वनता है।

काया का मौन :
व्यक्ति संयमशील वनता है।

जिस व्यक्ति में जितने ज्यादा दुर्गुण होंगे वह उतनी ही अधिक परनिदा करेगा।

एक वात हमेशा याद रखना कि जो व्यक्ति आज आपके सामने दूसरों की निंदा करता है वह कल आपके लिए भी दूसरों के

सामने खराब बोलेगा। निंदा श्रवण करना भी निंदा करने जैसा ही अपराध है।

जिस व्यक्ति की निंदा करने की आदत पड जाती है वह अपने परिवार की, मित्रो की और धर्म की भी निंदा करने मे हिचकिचाता नही है। निंदक सडी हुई गन्दगी जैसा होता है वह जहा भी जाता है गन्दगी और दुर्गन्ध ही फैलाता है। व्यक्ति को धार्मिक बनने के लिए स्वय की भूलो का ही सशोधन करना चाहिए।

परदोष देखने से क्या फल मिलता है, उस पर एक सुन्दर दृष्टात है एक नगर मे एक सत का आश्रम था—ठीक सामने एक वैश्या का निवास था, सयासी के आचार बहुत सुन्दर थे उस कारण से बहुत से लोग उनके दर्शनो के लिए आते थे, जब सत अपने भक्तो के साथ अपनी कुटिया के बाहर बैठते तब सामने वैश्या के वहाँ भी लोगो का आना-जाना रहता तब सत से देखा नही जाता और वह वैश्या की हमेशा निंदा करता रहता। वैश्या रोज सत का दर्शन करके मन मे विचार करती कि सत का जीवन कितना महान है और मैं कैसे नीच कर्म करके आई कि मुझे यह खराब कर्म करने पडते हैं। ऐसे विचारो से दोनो का समय बीतता गया। एक दिन सत का आयुष्य पूर्ण होने आया तो यमराज का दूत उसे लेने आया सत कहता है तुम कौन हो ? मुझे कहा ले जा रहे हो ?

यमराज का दूत कहता है, मैं यमलोक से आया हूँ, यमराज का दूत हूँ और तुम्हें नरक मे ले जाने के लिए आया हूँ। वह सत कहता है तुम गलत स्थान पर आ गये तुम्हें तो सामने वाले मकान मे जाना चाहिए। दूत कहता है—मैं गलत नही आया हूँ लेकिन तुमने अपने जीवन मे उस वैश्या की इतनी निंदा की है कि तुम्हारी गति नरक की होगी और वह वैश्या हमेशा तुम्हारे गुणो की प्रशसा करके अपने कार्य की निंदा करती रही इसलिए उसकी सद्गति होगी।

परनिंदा से व्यक्ति दूसरो के जघन्य पाप का भी भागी बनता है और पश्चाताप पूर्वक स्वय के खराब कर्मों की निंदा करके पापी से पापी व्यक्ति भी परमेश्वर बनता है।

हर व्यक्ति के जीवन मे पाप कार्य होते हैं लेकिन उससे मुक्त होना ही परमात्मा पद को प्राप्त करना है। जो व्यक्ति दूसरो के गुणो को देखता है एव अपने दोषो की निंदा करता है वह अपने मनुष्य जीवन को सफल बनाता है जब व्यक्ति अपने दोषो को देखेगा तो उसे सामने वाले का दोष नहीं दिखेगा।

कहा भी है कि

बुरा खोजन मैं चला,
बुरा न मिलिया कोई।
जो दिल खोजा आपना,
मुझसा बुरा न कोई॥

ज्ञान की कुन्जी

□ श्री दर्शन छुजलानी

इस परिवर्तनशील संसार में ज्ञान के समान पवित्र, वांछित बहुमूल्य फल की प्राप्ति कराने वाली अन्य कोई भी वस्तु नहीं है। ज्ञान का महात्म्य अनिवर्चनीय है।

लौकिक तथा अलौकिक सर्व प्रकार की निधियां ज्ञान के द्वारा ही प्राप्त की जा सकती हैं। जीव को कर्तव्य व अकर्तव्य की पहचान ज्ञान के द्वारा ही होती है। अविवेक का नाश भी इसी से होता है। ज्ञान के बिना समस्त क्रियायें निष्फल हैं।

यथा—"ज्ञान क्रियाभ्यां मोक्ष:" ज्ञान और क्रिया दोनों सहचर है। इसे दृष्टान्त द्वारा बता रहे हैं कि अंधा और पंगु ये दो व्यक्ति एक स्थान पर बैठे हुए थे। उस समय अचानक वहाँ पर आग लग गई। अंधा आग को नहीं देख सकता था और पंगु वहाँ से भाग नही सकता था। अत: अधे ने पंगु को अपने कन्धे पर बैठा दिया और पंगु ने सही मार्ग बता दिया। दोनों ही अपने-अपने निर्धारित स्थान पर पहुँच गये।

उसी प्रकार सम्यक् ज्ञान और शुद्ध क्रिया ही मोक्ष का कारण है। ज्ञान का अर्थ है जानना तथा क्रिया का अर्थ है करना। आज हम दान देते है अपनी मान प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए, तपश्चर्या करते हैं तपस्वी कहलाने के लिए, तीर्थ यात्रा करते हैं धर्मी कहलाने के लिए, परन्तु इन क्रियाओं के अन्दर जो छिपा हुआ ज्ञान है उसे समझने का प्रयत्न हम नही करते। अत: हमारी दशा उस शुक के तुल्य है जो विना समझे राम-राम की रट लगाता है। कहा भी है—

"जं अन्नाणी कम्मं खेवेइ,
वहुयाहिं वासकोड़िहि।
तं नाणी तिहिं गुत्तो,
खवेइ उसासमेत्तेण।।"

अज्ञानी मनुष्य भांति-भांति के कष्ट सहन करके, शत-शत वर्षो तक तपश्चर्या करके, जिन कर्मो को कोटि-कोटि जन्मो में नष्ट करता है, उन्ही कर्मो को ज्ञानी पुरुष तीन गुप्ति अर्थात् मन, वचन और काया के व्यापारों को रोक कर एक श्वास में क्षय कर डालता है।

संसार में दो प्रकार के प्राणी होते है— ज्ञानी और अज्ञानी। ज्ञानी पुरुष मन व इन्द्रियों का नियन्त्रण कर आत्म-विकास की ओर अग्रसर होते है। किसी प्रकार का उपसर्ग और परिसह क्यों न आये वे अपने विचारों का, वाणी का, तथा उस मार्ग का परित्याग नही करते है। सम्यक् ज्ञान व शुद्ध क्रिया ही उनके उत्थान का कारण होता है। इसके विपरीत मनुष्य कितना ही विद्वान् हो जाये, अनेक भाषाओं में पारंगत हो जाये, विविध शास्त्रों का ज्ञाता हो जाये, चाहे बड़ी-बड़ी पुस्तके कण्ठस्थ कर ले, तर्क करने में कुशल हो जाये, प्रवचनकर्ता वन जाये, फिर भी यदि उसे आत्मविश्वास नहीं है, तत्त्वों पर श्रद्धा नही है, हृदय में विवेक नहीं है तो वह अज्ञानी है।

अत: साधक को चाहिए कि वह दत्तचित्त होकर ज्ञान की आराधना करे। ज्ञान प्राप्ति में बाधाओं का आना स्वाभाविक है क्योंकि कसौटी पर कसे बिना सुवर्ण शुद्ध व निर्मल नहीं होता है। जिस प्रकार वरदत्त कुमार और गुणमंजरी कुमारी ने ज्ञान रूप दिव्य अग्नि से समस्त कर्मो को भस्मीभूत कर अक्षय सुख प्राप्त किया।●

अन्तर-खोज

□ श्री चिमनलाल मेहता

पर्युषण पर्व अपना महापर्व कहलाता है। यह पर्व एक ऐसा महापर्व है जिसमे हम लडाई, झगडा व हीनता को छोडकर एक-दूसरे से क्षमा-याचना करते हैं। एक-दूसरे के प्रति क्षमा भाव रखते हैं। इसे क्षमापना पर्व भी कहा जाता है और सम्वत्सरी को पर्वाधिराज कहा गया है।

इन दिनो मे सामान्यत लोग प्रतिदिन के व्यवहार मे कुछ निवृत्ति लेकर तप, जप, व्रत, नियम, ध्यान, दान आदि काय की ओर अग्रसर होते हैं लेकिन वास्तव मे ये दिन आत्म-निरीक्षण के लिए होते है। अन्तर खोज करते हुए बीते हुए जीवन का विचार, चिन्तन-मनन करके भविष्य के बारे मे सोच कर भविष्य की दिशा निश्चित करनी होती है। मानव हमेशा अधिकतर बाहर की प्रवृत्तियो मे घिरा रहता है। उस समय वह अपने आपको स्वय को भूल जाता है। भगवान महावीर व अन्य महापुरुषो ने पर्व दिन निश्चित करके हमे अन्तर्मुखी बनने का अवसर प्रदान किया है जिससे हम मन के मेल को साफ करके आध्यात्मिक आनन्द रूपी प्रकाश को प्राप्त कर सके। जीवन शुद्धि हतु अन्तर खोज परम आवश्यक है।

भगवान् महावीर के अहिंसा के सन्देश मे सभी जीवो से क्षमा मागते हुए मैत्रीभाव का उल्लेख है। क्षमा मागने के लिए पहले हमे अहम् को त्याग कर नम्रता को अपनाना पडता है। क्षमा देने मे भी उदारता का गुण प्रथम आवश्यकता है। इस प्रकार आदर्श मूल्यो की प्रतिष्ठा करके हम परस्पर क्षमा का लेन-देन कर सकते हैं। जिस प्रकार अग्नि को बुझाने के लिए जल की आवश्यकता है उसी प्रकार वैर को मिटाने के लिए क्षमा मागना जरूरी है। इसके लिए हमे महामन्त्र दिया गया है कि—

खामेमि सव्वे जीवा।
सव्वे जीवा खमन्तु मे॥
मित्ति मे सव्व भुएसु।
वर मज्झ न केणई॥

अर्थात् सब जीवो को मैं क्षमा करता हूँ। सर्व जीव मुझे क्षमा प्रदान करें। सर्व जीवो से मेरा मैत्रीभाव रहे, किसी से वैर भाव नही।

कषायो का त्याग करते हुए क्षमा भाव को अन्तर मे उतारते हुए किये गये अपराधो से पीछे हटने की अन्तर खोज करें तो हमारा जीवन उच्चत्तम मूल्यो से परिपूर्ण बन सकेगा। एक कवि ने कहा है कि

लाख खोया हजार पाया
ऐसे कमाने से क्या ?
दस बिखेरा एक जमाया
ऐसे जमाने से क्या ?

क्षमा पर्व के दिन मन शुद्ध नही हुआ और दिल के द्वेष से खमाया तो ऐसे खमाने से क्या ? ●
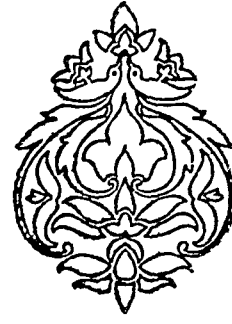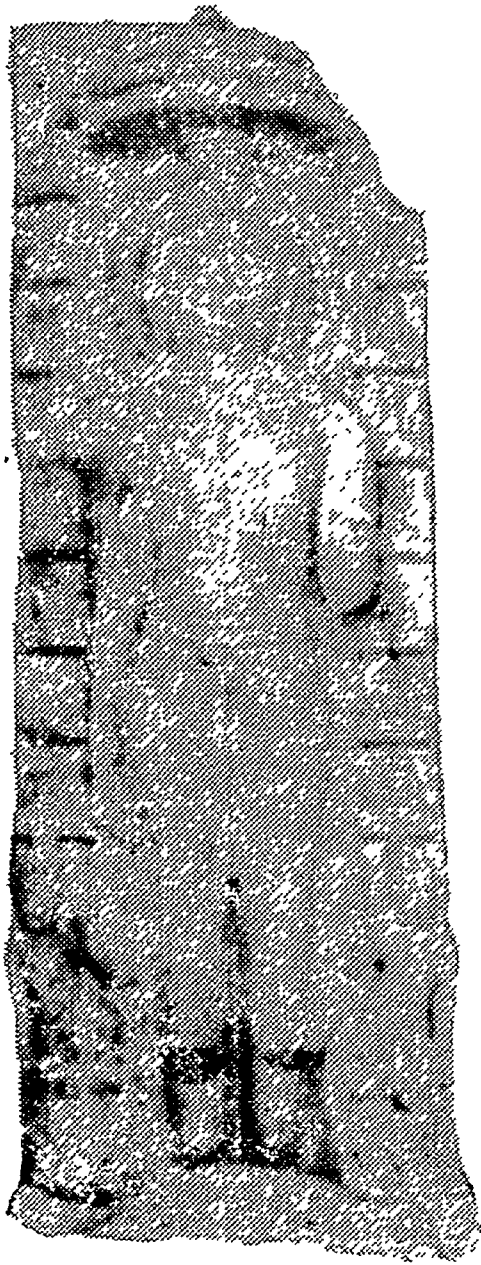
रोचक श्वेताम्बर चौबीसी

□ डॉ० शैलेन्द्रकुमार रस्तोगी
स० नि०, पुरातत्व

जैन सम्प्रदाय में विवस्त्र और सवस्त्र दोनों ही प्रकार की मूर्तियाँ उपलब्ध होती है। लखनऊ संग्रहालय में दोनों ही मतों से सम्बद्ध प्रतिमायें संकलन में हैं। इस सग्रहालय में दिगम्बर मूर्तियों की बहुलता है। कुछ श्वेताम्वर प्रतिमायें भी है। इन्हीं श्वेताम्वरी विम्बों में अति रोचक प्रस्तुत चौवीसी है। यह चतुर्विंशतपह श्वेत—पीत प्रस्तर पर तराशा गया है।[1] मूलनायक ऋषभदेव अपरनाम आदीश्वर अन्य तेईस तीर्थंकरो के मध्य विराजमान है। मूलनायक की भाव-भंगिमा लुभावनी है। इनके दोनों पैर और भुजाएं खण्डित है। ठोढ़ी भी जरा क्षतिग्रस्त है। पीछे पद्म-पत्रावलि से अलकृत प्रभामण्डल है। अर्हन्त के शीश पर त्रिछत्र जो कटावदार कंगूरों से सँवारा गया है। इसी त्रिछत्र पर देवदुदभि वादक, देवदुदभि निनादित कर रहा है। वक्ष स्थल पर

1. रा० संग्र० सख्यक जे९ 949, आकार 1 मी० 5 × 35 × 20 से० मी०।

श्रीवत्स है । कटि पर अधोवस्त्र के तीन सिलवटे या प्लेट्स हैं, सामने गाँठ तथा दोनो जघाश्रो के मध्य धोती की कोड झूल रही है । यह वस्त्रचिह्न ही इसे श्वेताम्बर मूर्ति सिद्ध करता है ।

ऋषभदेव के वायी ओर आठ जिन ध्यानलीन पद्मासीन उकेडे गये हैं । प्रत्येक का आसन आगे को निकला है । सभी के पीछे सादा प्रभामण्डल है । मूलनायक के दाँयी ओर भी वायी तरफ की भाँति ही सात तीर्थंकर विद्यमान हैं । ऋषभदेव के त्रिछत्र के दोनो ओर भी जिनो को दर्शाया गया था । वाँयी ओर दो अर्हन्त कायोत्सर्ग या खडगासन मे ध्यानमग्न थे । इनके आभासमात्र ही शेप हैं । मध्य में तीन तीर्थंकर ध्यानासीन थे इनमें एक अनुपलब्ध है । प्रतिमा का दाया कोना खण्डित है । इस वाँ भागय की तरह ही दो तीर्थंकर खड्गासन मे व एक नीचे ध्यानस्थ वनाये गये होगे । मूलनायक के प्रभामण्डल के ऊपर और त्रिछत्र के वाँये-दाँयें एक-एक विद्याधर हवा मे उडते मूलनायक की अभ्यर्थना मे विलेखित थे । इनमे वायी ओर का तो शेप है किन्तु दायी तरफ का लुप्त हो चुका है । प्रभामण्डल के प्रारम्भ को मकरमुख से सजोया गया था । सौभाग्य मे दोनो ओर के मकरमुख अलकरण सुरक्षित हैं । त्रिछत्र के नीचे कैवल्य वृक्ष भी वना होगा । अव इस वृक्ष के दाँयी ओर की पत्ती ही शेप है ।

ऋषभदेव के चरणो के वायें-दायें एक-एक स्त्री आकृतिया अर्द्धपर्यांकासन मे विराजमान है । वायी तरफ तीन सर्पफण के नीचे तेईसवें तीर्थंकर पाश्वनाथ की यक्षी पद्मावती वस्त्राभूपणो से समभूलकृत दोनो हाथों मे सनालपद्म लिये आसीन है । इनके नीचे का आसन यद्यपि टूट चुका है लेकिन सर्प की कुण्डली रहा प्रतीत होता है । दायी ओर चतुर्भुजी देवी वस्त्र, आभूपणो एव उठे हुये शिखण्डाभरणयुत चक्रेश्वरी हैं । ये मानवाकार गरुड की गदन मे वायी टाग फसाकर वैठी है । चक्रेश्वरी वायें हाथ मे गदा, शख, दायें अभय व चक्र धारण किये हुये हैं ।

यहा यह तथ्य विवेचनीय है कि ऋपभदेव की यक्षी चक्रेश्वरी के साथ पार्श्वनाथ की शासनयक्षी पद्मावती को क्यो वनाया गया ? यू तो यह खटकने वाली वात है लेकिन जव हम मध्यकालीन जैन प्रतिमाओ का गम्भीर अध्ययन करते है तो यह कोई नयी बात नही लगती जैसे अन्य चौवीसी पर चक्रेश्वरी के साथ ही अम्विका (श्रो-178) नेमिनाथ की यक्षी यह उरई, जालौन उ० प्र० की है ।

सग्रहालय की पजी के अनुसार इस मूर्ति का प्राप्त स्थान अज्ञात दिया हुआ है । लेकिन चँवरधारियो व यक्षियो के वस्त्राभूपण आकृतियो की शारीरिक देहयप्टि भावभगिमा, त्रिछत्र का अलकरण, मूलनायक की मुखाकृति, भौहो का अकन, गदन की चार वलय-रेखयें, हथेली के नीचे वने पद्म, प्रस्तर जिस पर मूर्ति गढी गई है आदि बिन्दुओ पर विचार करने पर देवगढ, खजुराहो अथवा ऐसे ही किसी जैन ऐतिहासिक स्थल से सम्बद्ध रही होगी । यह कलारत्न लगभग 12वी शती ई० का होना चाहिये ।

★ ★ ★

□ भगवान कहते हैं, पेड़ का पत्ता अस्थिर है, वैसे ही मानव जीवन भी अस्थिर है। हे गौतम ! यह जीवन कहीं व्यर्थ न चला जाए। समय अत्यन्त मूल्यवान है। समय सार्थक किया जाए तो जीवन भी मूल्यवान बन जाता है। जीवन का मूल्य समझने वाला, समय का मूल्य समझ लेता है। समय के महत्त्व को जानने वाला प्रमाद में नहीं गिरता। प्रभु की यह चेतावनी, प्रभु का यह बोध कितना महान है। मानव यदि जागृत हो जाय तो महान बन जाता है। आसक्ति से मुक्त होने वाला समता भाव को प्राप्त होता है। अनासक्ति में अपार आनंद है, परम शान्ति है, इच्छाएँ दु खों की जननी है।

सर्जन की कला

□ गणिवर्य श्री वीरेन्द्र विजयजी म० सा०

दुमपत्तए पंडुयए जहा,
निवडई राई गणाण अच्चए।
एवं मणुयाण जीवियं,
समयं गोयम मा पमायए।।

काल जब परिपक्व होता है तब कई घटनाएं घटती है। दिन के बाद रात एवं रात के बाद दिन, यह प्रकृति का नियम है। जो नियंत्रण से परे है। सीमा रहित है। ये दोनों काल के सूचक हैं। काल की गति अपरिवर्तनशील है। काल स्वयं अप्रभावित है। वह सभी को प्रभावित करता है। उसके लिए न कोई अपना है न पराया। स्वयं के कार्य में वह शिथिल नही है। वह थोड़ी भी ढील नहीं देता। प्रमादी काल से हार जाता है।

इसीलिए भगवान महावीर स्वामी कहते हैं—हे गौतम ! समय होने पर पेड़ का पत्ता पीला पड़ जाता है। पक जाता है, पक कर गिर जाता है। भगवान कहते हैं, पेड़ का पत्ता अस्थिर है, वैसे ही मानव का जीवन भी अस्थिर है। हे गौतम ! यह जीवन कहीं व्यर्थ न चला जाए। समय अत्यन्त मूल्यवान है। समय सार्थक किया जाए तो जीवन भी मूल्यवान बन जाता है। जीवन का मूल्य समझने वाला, समय का मूल्य समझ लेता है। समय के महत्त्व को जानने वाला प्रमाद में नहीं गिरता। प्रभु की यह चेतावनी, प्रभु का यह बोध कितना महान् है। मानव यदि जागृत हो जाय तो महान बन जाता है।

प्रमाद गिराता है। जागृति उठाती है। भगवान की वाणी हमें जगाती है, जागृत रहने वाला गिरता नहीं है, ऊपर उठता

चला जाता है। उठना ही जागृति है। गिरना प्रमाद है। गिरने वाले को उठाने वाले प्रभु के वचन हैं लेकिन सभलना हम स्वय को है। मानव ससार मे स्थिर होने की कोशिश करता है। बडे-बडे बगले, दुकान व मकान निर्माण करता है। स्वय को सुखी मानता है। भौतिक पदार्थो मे वह स्वय को भूल जाता है। सुविधा के लिए भौतिक साधन गृहस्थ के लिए आवश्यक हैं। उन्हे प्राप्त करना बुरा नही किन्तु उनमे आसक्त हो जाना बुरा है। साधनो के प्रति, पदार्थो के प्रति मेरेपन का भाव ही दुखदाई है। मैं और मेरेपन का भाव मानव को गिराता है। इससे मुक्त होने वाला ऊँचा उठता है।

जिन्होने भी महानता पाई, मैं एव मेरेपन से उठकर ही पाई। आसक्ति से मुक्त होने वाला समता भाव को प्राप्त होता है। अनासक्ति मे अपार आनन्द है। परम शाति है। इच्छायें दुखो की जननी है। इच्छाओ के कारण मानव शोक सताप से घिर जाता है। शोक, पीडा एव दुख ये मन मे समाहित है। सुख और दुख, अच्छा या बुरा मन पर निभर हैं अत क्या प्राप्त करना है और क्या नही, यह मानव की विचारधारा पर अवलम्बित है। सुख हमारे पास है। परम सुख को पाने का अधिकारी मानव है, अत वह अत्यन्त भाग्यशाली है। देव को यह सौभाग्य नही मिला। किन्तु मानव का दुर्भाग्य यह है कि वह कभी परम सुख के मार्ग पर नही जाता। सौभाग्य और दुर्भाग्य का निर्माता स्वय है। वह दुर्भाग्य को सौभाग्य मे पलट सकता है। किन्तु मानव अपनी शक्ति से अनजान है। अपरिचित है। यह उसकी कमजोरी है, अज्ञानता है।

जिज्ञासा और सद्गुरु के प्रसाद के बिना महामार्ग की प्राप्ति दुर्लभ है। जब तक आत्म-शक्ति प्रसुप्त है, मानव क्षुद्र है, निवल है। छोटे से बीज मे विराटता विद्यमान है। पानी, खाद और मिट्टी के सयोग से वह विशाल रूप धारण कर लेता है। छोटा सा वट वृक्ष का बीज बढने पर कितना महान बन जाता है। मानव मे महानता छिपी हुई है। आत्मा अनत शक्ति का स्वामी है। वह महानता और शक्ति प्रकट होती है, सद्गुरु के योग से। योग्यता सयोग करा देती है। सयोग का उपयोग न करने वाला कोरा ही रह जाता है। कुछ भी उपलब्ध नही कर पाता। जो बीज वृक्ष नही बनता, वह महत्त्वहीन बन जाता है, मिट्टी हो जाता है। वह मानव जीवन निरर्थक है जो स्वय की शक्ति को पहचान नही पाता, उजागर नही कर पाता।

जीवन अमरता और प्रभुता से सम्पन्न है, तो क्षुद्र से, तुच्छता से निकृष्ट भी है। जीवन का सर्जन भी हो सकता है और विसर्जन भी। सर्जन मे सम्पन्नता है, सुख है। विसर्जन मे दुख है, विनाश है। निरर्थक से निरर्थक पत्थर मे से शिल्पी भव्य प्रतिमा का सर्जन करता है। अनघड पत्थर जो पैरो तले ठोकरें खाता था, जो उपेक्षित था, जिसे कोई देखता तक नही था, किन्तु परमात्मा का रूप धारण करने पर वह पूजनीय बन जाता है। जन जन की श्रद्धा का केन्द्र बन जाता है। लोग उसे पूजते हैं। नमन करते हैं। सर्जन कला का वह चमत्कार है। कुशल शिल्पी पत्थर को पूजनीय बना देता है।

जीवन भी अनघड पत्थर जैसा है। उसे सजाना है, सँवारना है, ऊँचा उठाना है। यदि उसे उन्नत नही बनाया, मानवीय गुणो से ऊँचे नही उठाया, तो वह व्यर्थ पडा रह

जाएगा। फिर जीवन की कोई सार्थकता नहीं होगी। कोई मूल्य नहीं होगा। जीवन खाने के लिए, गँवाने के लिए नहीं है। यह सत्य को पाने के लिए, धर्म को प्राप्ति के लिए है। धर्म का मर्म जानने के लिए है। सिर्फ जानने के लिए नहीं अपितु धर्म के रहस्य को जानकर गहराई में जाने के लिए है। मोती सागर के किनारे नहीं मिलते। जो डुबकी लगाता है, भीतर जाता है उसे ही मोती प्राप्त होते है। मोती प्राप्त करने के लिए कितना साहस चाहिए। जो किनारे बैठा रहता है, सोचता रहता है, डुबकी लगाने से डरता है, वह खाली रह जाता है। जीवन में अखूट सम्पदा है। उसका स्वामी वही बन सकता है, जो जीवन के सागर में उतरता है, डूबता है, आत्मरूप मोती की प्राप्ति उसे होती है जो स्वयं में उतरने का साहस रखता है। पंजाब केसरी आचार्य श्री विजय वल्लभ सूरीश्वरजी ने परमात्मा के एक स्तवन में कहा है—

जिनवर को जिन बनकर ध्यावे,
ध्याता ध्यान से शिव पद पावे,
अजरामर पद धारी····शरणा धार लिया।

अरिहत परमात्मा के आलंबन से, उनके जाप से, ध्यान से भक्त भगवानमय बन जाता है। जिनवर को ध्याने वाला ध्याता शिवपद को, अजर अमर पद पाने का अधिकारी बन जाता है। पचपरमेष्टी की शरण हमारे लिए परम उपकारी है। उनका आलंबन हमें भव सागर से तिरा देता है। उनकी आराधना हमें निम्न रूप से फलदाई है।

अरिहंत भगवान की आराधना से, उनके ध्यान को मिथ्यात्व का विनाश होता है। सत्य तत्व की हमें प्राप्ति होती है। सिद्ध भगवान की आराधना से लोभ का, मन की कामनाओं का नाश होता है जिससे जीवात्मा परम सुख को, शांति को पाता है। तृष्णा के विस्तार से जीव दुःख पाता है। सिद्ध परमात्मा से अविनाशी सुख की प्रतीति होती है। अतः वे परम आलबन रूप है।

आचार्य भगवान की आराधना माया से मुक्त करती है। सरलता एवं ऋजुता प्राप्त होती है। सरलता सर्व गुणों की जननी है। सरल आत्मा शनैः शनैः सर्वगुण सम्पन्न बन जाता है। श्री आनंदधनजी ने प्रभु आदिनाथ के स्तवन में कहा है—

चित्त प्रसन्ने रे पूजन फल,
कह्युं रे पूजा अखडित एह।
कपट रहित थई आतम अपणी,
रे आनंदधन पद रेह ।।

माया व कपट रहित आत्मा ही आनंद-धन अर्थात् परम पद की भागी बनती है।

उपाध्याय पद की आराधना से मान गलता है। विनिष्ट होता है। सूत्र का पठन व पाठन करने वाले उपाध्याय जी विनय गुण सम्पन्न होते है। अतः उनके अवलम्बन से विनय की प्राप्ति और अहंकार का नाश होता है। आत्म विकास में अहंकार सबसे बड़ा अवरोध है। मान गलने पर ही ज्ञान प्राप्त होता है। जहाँ मान वहाँ ज्ञान नहीं, मान के शिखर से उतरकर ही ज्ञान को पाया जा सकता है। ज्ञान प्राप्ति का मूल विनय है, समर्पण भाव है।

पंचम पद पर विराजमान साधु महाराज की आराधना क्रोध से मुक्ति दिलाती है।

स्व पर विनाशकारी क्रोध अत्यन्त भयानक है। क्रोध की आग स्वय को भी जलाती है और दूसरों को भी।

क्षमाशील साधु मे हमें समता के दर्शन होते है। ममतामूर्ति के दर्शन से समता अवतरित होती है। समता मे परम शान्ति है। समता के विना शान्ति असभव है। समता ही स्वभाव है। समता ही धर्म है। समता ही परम योग है। पचपरमेष्ठि की आराधना एव उनके आलवन से जीवन मे गुणो का अर्जन करें। आत्म विकास मे उनका आलवन वरदान है। शाश्वत तत्व एव सत्य की प्राप्ति के ये स्रोत हैं। स्थिरता, अमरता एव शान्ति के लिए इनकी शरण अनिवाय है।

●●

"रत्न कणिका"

- जो गुणो की पूजा हे, वह भगवान वनता हे।
- जो पुण्य की पूजा करता है वह भाग्यवान वनता है।
- जीवन को सफल वनाने के लिए मन की इच्छा मारना जरूरी है।
- दौड लगाने से ससार की मजिल आती है।
- आवश्यकता अनुरूप चले वह साधु, कम पाप करे वह सुश्रावक।
- जैन शासन मिलने पर भी ज्ञान का वोध न हो, भगवान का सान्निध्य मिलने एव जिन आगम को श्रवण की इच्छा करने की शक्ति मिलने पर भी न करे तो जिन्दगी व्यर्थ है।
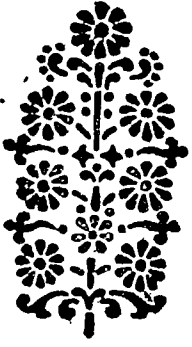
जहाँ तक इसकी वैधानिक स्थिति का सम्बन्ध है ऐतिहासिक प्रमाणों से प्रतिपादित होता आ रहा है कि विगत पाँच सौ सालों से इस गिरिराज और महातीर्थ पर श्वेताम्बर संघ का ही स्वामित्व एवं सर्वाधिकार रहा है। सन् 1593 में अकबर बादशाह ने पूज्य आचार्यदेव श्री हीरविजयसूरिजी महाराज साहब के उपदेश से शाही फरमान निकाला था कि शत्रुंजय, सम्मेतशिखर, वैभारगिरि एवं केसरियाजी आदि तीर्थ श्री जैन श्वेताम्बर संघ की मिल्कियत हैं और रहेगी।

श्री सम्मेतशिखर महातीर्थ एवं गिरिराज ऐतिहासिक एवं वर्तमान स्थिति

☐ **श्री मनोहरमल लुनावत**

जैन धर्मावलम्बियों का सर्वोच्च धार्मिक मान्यतावाला पवित्र तीर्थधाम बिहार प्रान्त के गीरडी जिले में स्थित श्री सम्मेतशिखर जी महातीर्थ है। जिस पहाड़ पर यह तीर्थ स्थित है उसके साथ भी असीम आस्थायें जुड़ी हुई हैं और इसीलिए इसे पहाड़ न कह कर गिरिराज के नाम से सम्बोधित करते हैं। यही पर 24 तीर्थंकरों में से 20 तीर्थंकरों ने मोक्ष प्राप्त किया था और इसीलिए बीस तीथकरों के मोक्ष-कल्याणक चरणों के अलावा शेष चार तीर्थंकरों के भी चरणों के साथ श्री गौतम स्वामी एवं पार्श्वनाथ भगवान के प्रथम गणधर श्री शुभ स्वामी के चरण हैं। पहाड़ के मध्य जल मन्दिर है जहां इसी पहाड़ पर मोक्ष सिधारे भगबान पार्श्वनाथ की श्याम वर्ण की प्रतिभा मूलनायक के रूप में विराजमान है। पहाड़ के ऊपर कई टूके हैं जिनमें पार्श्वनाथ की टूंक पर बना मन्दिर इतना ऊंचा है कि 30–40 मील की दूरी से दर्शकों को नजर आता है। इस गिरिराज पर विराजित भगवान की प्रतिमायें एवं चरणपादुकायें श्वेताम्बर आचार्यो द्वारा ही प्रतिष्ठित हैं। यह यहां पर अंकित प्राचीन शिला लेखों से स्पष्ट है।

इस पहाड़ का प्रबन्ध सैकड़ों वर्षो से अविछिन्न रूप से जैन श्वेताम्बर सम्प्रदाय का रहा है लेकिन पिछले सौ वर्षो से दिगम्बर सम्प्रदाय के भाई न केवल यहां की व्यवस्था में दखल देने अपितु अपना वर्चस्व एवं स्वामित्व स्थापित करने के लिए न्यायालयों में मुकदमे करते रहे है। लेकिन मात्र सेवा पूजा करने के अधिकार के अलावा किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप करने का अधिकार प्रिवि कौसिल से लेकर आज तक किसी न्यायालय तक ने उन्हें नहीं दिया। वर्षो तक अनाधिकार युक्त कुचेष्टा में निष्फल रहने पर भी वे विराम लेने को तैयार नहीं हैं। वैधानिक तौर पर असफल रहने पर अब भीड़ तंत्र का सहारा लेकर राजतंत्र का उपयोग कर रहे हैं। बिहार की वर्तमान सरकार एव मुख्यमंत्री को प्रभावित कर इस तीर्थ की व्यवस्था को सुचारू बनाने के नाम पर एक अध्यादेश जारी करा कर बोर्ड गठित करने का दुष्चक्र चलाने का प्रयत्न

किया गया है । वोर्ड का गठन भी इस प्रकार किया जावेगा कि जिसमे 6 सदस्य दिगम्वर सम्प्रदाय के तथा 6 सदस्य श्वेताम्वर सम्प्रदाय के होंगे तथा एक सदस्य राज्य सरकार का प्रतिनिधि रूप इस क्षेत्र का अधिकारी होगा । अध्यादेश को इस प्रकार का वनाया गया है कि जिसके फलस्वरूप विहार सरकार का ही वर्चस्व वोर्ड पर रहेगा और सरकार सभी सिद्धान्तो, मान्यताओ और आस्थाओ को ताक मे रख कर आधुनिकीकरण के नाम पर वोर्ड के माध्यम से मनमानी कर सकेगी । रक्षक ही किस प्रकार भक्षक वनते हैं यह इसका ज्वलन्त उदाहरण है । विहार सरकार द्वारा प्रस्थापित किये जाने वाले अध्यादेश को राष्ट्रपति महोदय के पास स्वीकृति हेतु प्रेषित किया गया और जव इसकी सूचना श्वेताम्वर सम्प्रदाय की प्रतिनिधि सस्था श्री आनन्दजी कल्याणजी और जैन श्वेताम्वर सघो को प्राप्त हुई तो इसकी तीव्र प्रतिक्रिया हुई और भीड तत्र का सहारा न लेकर वैधानिक तौर पर शालीनता से तीव्र विरोध किया गया। इसके विपरीत दिगम्वर सम्प्रदाय के भाई रैलिया आदि निकाल कर तथा दुष्प्रचार कर असत्य को सत्य मे परिणित करने का प्रयास कर रहे हैं ।

भारतीय सविधान ने हर एक व्यक्ति की धार्मिक स्वतन्त्रता को मान्यता प्रदान की है जिसके अन्तर्गत हर एक व्यक्ति को अपनी मान्यता, आस्था एव इच्छा के अनुसार धर्म क्रिया करने का मौलिक अधिकार प्राप्त है लेकिन अन्य किसी की मान्यता एव आस्था मे हस्तक्षेप किये विना । जिस प्रकार एक मकान मे रहने वाला किरायेदार मकान का उपयोग तो कर सकता है लेकिन मकान का स्वामी नही वन सकता, उसी प्रकार दिगम्वर सम्प्रदाय के भाई इस तीर्थ पर अपनी आस्थानुसार आराधना तो कर सकते है लेकिन उसके स्वामी नही वन सकते । आजादी के वाद जव भारत के विभिन्न धर्म स्थानो के वारे मे वाद-विवाद उत्पन्न होने लगे तो भारत सरकार ने कानून वना कर धार्मिक स्थलो की स्थिति 15 अगस्त, 1947 के दिन जिस प्रकार थी उसी प्रकार रखने का प्रावधान कर दिया है । उपासना स्थल (विशेष प्रावधान) अधिनियम 1991 की धारा 42 की उपधारा 3 व 4 मे यह स्पष्ट प्रावधान है कि 15 अगस्त, 1947 को किसी भी उपासना स्थल की जो स्थिति थी उसमे किसी प्रकार का फेरवदल नही किया जावेगा । उक्त तिथि को इस महातीर्थ एव गिरिराज पर श्री जैन श्वेताम्वर सघ की प्रतिनिधि सस्था श्री आनन्दजी कल्याणजी ट्रस्ट का स्वामित्व, कब्जा, प्रवन्ध एव नियत्रण था जिसमे अव किसी भी प्रकार का परिवर्तन परिवर्द्धन या सशोधन नही किया जा सकता । इस तरह प्रस्तावित अध्यादेश इस अधिनियम के प्रावधानो के भी विरुद्ध हैं ।

जहा तक इसकी वैधानिक स्थिति का सम्वन्ध है ऐतिहासिक प्रमाणो से प्रतिपादित होता आ रहा है कि विगत पाच सौ सालो से इस गिरिराज और महातीर्थ पर श्वेताम्वर सघ का ही स्वामित्व एव सर्वाधिकार रहा है । सन् 1593 मे अकवर वादशाह ने पूज्य आचार्य देव श्री हीरविजयसूरिजी महाराज साहव के उपदेश से शाही फरमान निकाला था कि शत्रुजय, सम्मेतशिखर, वैभारगिरि एव केसरियाजी आदि तीर्थ श्री जैन श्वेताम्वर सघ की मिल्कियत है और रहेगी ।

सन् 1760 मे वादशाह अहमदशाह ने

अकबर बादशाह के फरमान की पुष्टि करते हुए एक सनद मुर्शिदाबाद के जगत सेठ को दी थी। जगत सेठ ने इस पहाड़ की रक्षा के लिए पालगंज के ठाकुर को नियुक्त किया था जिनकी वंश परम्परा से श्री पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमाजी की पूजा होती थी। ठाकुर मात्र सेवक था स्वामी नहीं, फिर भी अंग्रेजों के भारत में आने के बाद उसने, जो टाकुर से राजा बन गया था, सभी को अंधेरे में रख कर इस गिरिराज की सारी मिल्कियत अपने नाम पर करा ली। यही नही यह भी दावा करने लगा कि पहाड़ पर जो मन्दिर व मूर्तियां हैं वे भी उसकी अपनी है और भेट आदि प्राप्त करने का भी उसी को अधिकार है। इस पर मामला न्यायालय में गया तथा अन्त में हाईकोर्ट ने पहाड़ पर श्वेताम्बर संघ का कब्जा मानते हुए राजा को चढ़ावे का कुछ हिस्सा देना तय किया। चढ़ावे को लेकर जब आए दिन झगड़े होने लगे तो फिर सन् 1872 में यह तय हुआ कि चढ़ावे के बदले 1500) रुपये प्रति वर्ष राजा को दिया जावेगा। यह भी तय हो गया कि भविष्य में राजा किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं करेगा और श्वेताम्बर संघ यहां पर मन्दिर धर्मशाला आदि जो भी बनाना चाहेंगे बना सकेंगे। सन् 1872 के उक्त निर्णय के पश्चात् भी राजा का दुष्चक्र बन्द नही हुआ और इस पहाड़ की दो हजार एकड़ भूमि कुत्तों का कत्लखाना खोलने के लिए एक अंग्रेज को उधार पट्टे पर दे दी। इस पर जैन श्वेताम्बर संघ की ओर से तीव्र विरोध किया गया और मामला पुनः न्यायालय में गया। सन् 1890 में कलकत्ता हाईकोर्ट ने फैसला दिया कि सारा पहाड़ ही पवित्र है इसलिए वहां पर जैनों की भावना को चोट पहुँचे ऐसा कोई कार्य राजा नहीं कर सकता। इसी फैसले के कारण खोला गया कत्लखाना बन्द करना पड़ा। राजा के मरने पर कोर्ट ऑफ वार्डस् में व्यवस्था चली गई तो फिर इसे हिल स्टेशन का रूप देने के लिए बंगले आदि बनाने की हलचल शुरू हुई जो न्यायालय के आदेश से पुनः रोक दी गई। इस प्रकार के आये दिन के दुष्चक्रों को दृष्टिगत रखते हुए बंगाल के तत्कालीन लेफ्टिनेण्ट गवर्नर द्वारा फरमान जारी किया गया जो शिलालेख के रूप में विद्यमान है :

> "जैन और उच्च वर्ण के हिन्दुओं के सिवा कोई भी पारसनाथ पहाड़ पर जैन श्वेताम्बरी समाज के बड़े मंदिर तथा 25 छोटे मंदिरों में प्रवेश नही कर सकता। यदि जैन या उच्च वर्ण के हिन्दू के सिवा कोई अन्य पुरुष उक्त मन्दिरों में प्रवेश करेगा तो बंगाल के लेफ्टिनेण्ट गवर्नर द्वारा छोटे नागपुर के कमिश्नर को 7 फरवरी सन् 1865 ई० को दिए हुए पत्र नं० 719 के मजमून के मुजिब उस पर ताजीरात हिन्द के 15वे अध्याय के अनुसार मुकदमा चलाया जायगा।"

यह शिलालेख 25 मार्च सन् 1870 ई० के पुराने शिलालेख के स्थान पर जनवरी सन् 1904 में स्थापित किया गया है।

जैन श्वेताम्बरी समाज की आज्ञा से महाराज बहादुरसिंह जनरल मैनेजर ता० 1 जनवरी सन् 1904 ई०

(श्री नथमल चण्डालिया, जयपुर की पुस्तक श्री सम्मेतशिखर तीर्थ चित्रावली के पृष्ठ 32 से साभार)

सन् 1918 में श्वेताम्बर समाज के ट्रस्ट श्री आनन्दजी कल्याणजी ने ढाई लाख रुपया

पालगज के राजा को देकर पूरा पहाड हमेशा के लिए खरीद लिया। मामला प्रिवि कौंसिल मे भी गया तथा प्रिवी काऊसिल ने अपने दि० 12–5–1933 के अन्तिम फैसले मे उक्त तीर्थ पर श्वेताम्वरो का स्वामित्व, प्रवन्धन, नियत्रण एव कब्जे की पुष्टि की। उन्होने यह भी स्पष्ट कर दिया कि यहा पर दिगम्वरो को मात्र उपासना करने का अधिकार है।

भारत के स्वतन्त्र होने पर दिगम्वर सम्प्रदाय के भाइयो ने फिर अपनी मुहिम को जीवित करने का प्रयास किया। देशी रियासतो को मिलाकर गठित किये गये राज्यो मे जब भूमि सुधारो एव जागीरदारी उन्मूलन के कानून बन रहे थे तो विहार सरकार द्वारा विहार भूमि सुधार अधिनियम, 1953 के अन्तगत एक घोषणा पत्र जारी कर इस तीर्थ पर कब्जा करने का प्रयास किया। इसका श्वेताम्वर समाज द्वारा तीव्र विरोध किया, गया। उस समय भी तीथ रक्षा समिति का गठन हुआ। आखिर श्वेताम्वर समाज के विरोध के आगे सरकार को झुकना पडा और अपनी भूल मान कर इस घोषणा को वापिस ले लिया। सन् 1965 मे विहार सरकार ने आनन्दजी कल्याणजी ट्रस्ट के प्रतिनिधियो के साथ करार करके जैन श्वेताम्वर सघ के मालिकाना, सचालन, नियत्रण, कब्जा आदि तमाम परम्परागत अधिकार मान्य रखे। यहा तक कि 7 जुलाई, 1993 को गिरडी की अदालत मे प्रस्तुत हलफनामे मे भी विहार सरकार ने उक्त समस्त स्थितियो को मान्य किया है।

इस प्रकार निरन्तर दुष्चक्र चलाने पर भी इस महातीर्थ एव गिरिराज पर श्वेताम्वर समाज का स्वामित्व, नियत्रण एव कब्जा कायम चला आ रहा है। आज तीथ यात्रियो की सुविधा एव विकास के नाम पर विहार सरकार से मिलकर जो प्रयास किया जा रहा है वह मात्र भ्रातिया पैदा करने के सिवाय कुछ नही है। असली उद्देश्य तो स्वामित्व प्राप्त करना है जो दुरा-स्वप्न ही रहेगा। श्वेताम्वर सम्प्रदाय के तीव्र विरोध के कारण यद्यपि भारत सरकार ने अभी तक अध्यादेश पर अपनी स्वीकृति नही दी है फिर भी जागरुक रहकर इसका तीव्र विरोध करते रहना आवश्यक है। यद्यपि आनन्दजी कल्याणजी ट्रस्ट तथा इस हेतु स्थान-स्थान पर गठित समितिया जागरुक एव प्रयत्नशील है फिर भी हर श्वेताम्वर अनुयायी का परम पुनीत कतव्य है कि वह अपने इस महान तीथ एव गिरिराज की रक्षा के लिए हर प्रकार का तन, मन, धन से वलिदान देने को तैयार रहे तभी हम अपनी इस ऐतिहासिक धरोहर की रक्षा कर सकेंगे।
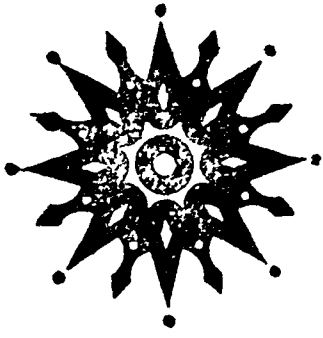
☐ सच्ची श्रद्धा जहाँ होती है सम्यक्दर्शन वहीं होता है। वही आत्मा अपने जीवन की सही दिशा को प्राप्त कर लेता है। वही भटकती आत्मा को मुक्ति की ओर अग्रसित करता है। इसीलिए सम्यक्दृष्टि आत्मा प्रत्येक बात को सीधी लेगा, प्रत्येक बात में शुभ तत्त्व निकालेगा जबकि मिथ्यादृष्टि सही और सीधी बात को भी उल्टे रूप में लेगी। सम्यक्दर्शन से ही भटकती आत्मा को मुक्ति का मार्ग प्राप्त हो सकता है।

भटकती आत्मा की मुक्ति

☐ श्री जयानन्द मुनिजी म. सा.

सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्राणि मोक्ष मार्ग :

तत्त्वार्थ सूत्र में उमास्वातिजी ने जीवन का क्रम बताते हुये लिखा है। यदि व्यक्ति का सम्यक्दर्शन अन्तर के भावों से होता है, तो व्यक्ति अपने जीवन में सच्चा ज्ञान व सच्चा चारित्र प्राप्त कर लेता है। सम्यक्दर्शन के अभाव मे ज्ञान व चारित्र भी अंधा हो जाता है। इसलिए सर्वप्रथम सम्यक्दर्शन होना बहुत जरूरी है।

सम्यक्दर्शन जहाँ पर विद्यमान है, वहाँ ज्ञान व चारित्र भी सम्यक् हो जाता है। तीनों के मिलने पर भटकती आत्मा का परिभ्रमण मिटने लगता है। वह आत्मा सम्यक्दर्शन, सम्यक्ज्ञान व सम्यक् चारित्र को जीवन व्यवहार में अपना कर अपनी आत्मा को मुक्त कर लेता है।

वीज के सही न होने पर जिस प्रकार उसके फल व सुवास व्यक्ति के भावों के अनुरूप नहीं होती है। उसी प्रकार सम्यक्-दर्शन के अभाव में व्यक्ति का ज्ञान व चारित्र भटकती आत्मा का अन्त नहीं कर सकती। संसार में सम्यक्दर्शन के अभाव के कारण चौरासी लाख जीवायोनियों में भटकता ही रहता है। जिस आत्मा में सम्यक् दर्शन हो जाता है वह आत्मा अपने संसार को अल्प कर देती है। उस आत्मा में सभी प्राणियों के प्रति करुणा का स्रोत अन्तर-तल से फूट पड़ता है। वह अपने जीवन को धन्य मानता है। अपने जीवन को आत्म-कल्याण के मार्ग में उत्तरोत्तर वृद्धि करता रहता है।

भस्मरोग से ग्रस्त व्यक्ति को कितना भी भोजन करायें या उदररोग से शिकार हुये व्यक्ति को कितना भी ,भोजन करायें, वह रोग से ग्रस्त होने के कारण शरीर को लाभ-प्रद सिद्ध नहीं होगा बल्कि वह रोगी के लिए अहितकर होगा। इसलिए जब तक मिथ्यात्व का रोग हो तब तक चाहे जितने ज्ञान का भोजन कराओ, वह उल्टा ही परिणाम लाता है। इसलिये सम्यक्दर्शन एक ऐसा अंजन है जिसे हृदय नेत्रों पर आंजने से अज्ञानान्धकार नष्ट हो जाता है, विवेक चक्षु खुल जाते है। यही ऐसी दवा है जो मिथ्यात्व रोग का नाश करके ज्ञान रूपी भोजन को सम्यक् प्रकार से पचा देती

है। आज सम्यक् दशन के अभाव मे आज की पीढी ज्ञान प्राप्त करके भी अज्ञानी होकर ससार मे भटकती जा रही है। इस भटकन को मिटाने के लिए सम्यक्दर्शन ही एक मात्र दवा है।

भगवान महावीर स्वामी जब देशना दे रहे थे। जिनकी वाणी पैंतीस गुणो से युक्त थी, ऐसी वाणी का सभी लोग पान कर रहे थे। देशना के पूर्ण होने पर अम्बद्र परिवाजक नाम के इन्द्रजालीया ने भगवान से कहा, भगवन मैं राजगृही जा रहा हूँ, कुछ कार्य सेवा हो तो फरमाइये। भगवन्त ने कहा! हे परिवाजक, मेरा धर्म-लाभ सुलसा नाम की श्राविका को कहना। परिवाजक वहाँ से चल कर राजगृही आया। वह सोचने लगा राजगृही मे और भी बहुत से श्रावक-श्राविकायें है। भगवान ने सुलसा नाम की श्राविका को ही धर्म-लाभ क्यो कहा? इसकी परीक्षा लेनी चाहिये। यह सोच कर इन्द्रजालीया ने ब्रह्मा का रूप बना कर गाँव के बाहर उपदेश देना चालू किया। लोगो ने सुलसा को बहुत कहा कि उन महात्मा का उपदेश बहुत ही सुन्दर है। वे तो साक्षात ब्रह्मा ही नजर आते हैं। तब भी सुलसा नही गई। तब उसने विष्णु का रूप बनाया। अब की वार भी लोगो ने सुलसा को बहुत कहा कि अपने यहाँ स्वय विष्णु भगवान पधारे है। दर्शन कर लो! लेकिन वह नही गई। तब इन्द्रजालीये ने सोचा कि यह सम्यक् भाव मे बहुत ही दृढ है। इसलिये यह जिस भगवान को मानती है, वैसा ही रूप बनाना चाहिये। यह सोच कर उसे विचलित करने के लिये उस इन्द्रजालीये ने भगवान महावीर स्वामी का रूप बनाया। अबकी बार तो लोगो ने सुलसा से बहुत कहा कि सुलसा अब तो तेरे ही भगवान आये हैं। अब तो चल? तब सुलसा ने पूछा, कौन से भगवान आये हैं? तब लोगो ने कहा, भगवान महावीर स्वय पधारे हैं। सुलसा ने कहा, भगवान तो अभी दूसरे क्षेत्र मे विचर रहे हैं। यह नये कौन से भगवान आये हैं? मेरे प्रभु ने तो कहा है, भगवान 24 ही होते हैं। वे चौइसवें भगवान तो दूसरे क्षेत्र मे विचर रहे हैं। हो सकता है यह कोई इन्द्रजालीया होगा। इसलिये मैं वहाँ नही जाऊगी।

सुलसा की इस दृढता को देखकर अम्बड परिवाजक को भी लगा कि वास्तव मे भगवान ने बहुत समझ कर ही सुलसा को धर्म-लाभ कहलाया है।

सच्ची श्रद्धा जहाँ होती है सम्यक्दशन वही होता है। वही आत्मा अपने जीवन की सही दिशा को प्राप्त कर लेता है। वही भटकती आत्मा को मुक्ति की ओर अग्रसित करता है।

इसीलिये सम्यक्दृष्टि आत्मा प्रत्येक बात को सीधी लेगी, प्रत्येक बात मे शुभ तत्त्व निकालेगी जबकि मिथ्यादृष्टि सही और सीधी बात को भी उल्टे रूप मे लेगी।

हमारे आचार्यों ने इसीलिये कहा कि सम्यक्दर्शन से ही भटकती आत्मा को मुक्ति का मार्ग प्राप्त हो सकता है।

●●●

श्री वर्द्धमान आयम्बिल शाला की स्थायी मितियाँ

वर्ष 1993–94

श्री प्रकाशचंदजी विमलकुमारजी जैन, (गाँधी)	501.00
श्री लखमीचंदजी सुपुत्र रूपचंदजी	501.00
,, ,, ,,	501.00
श्रीमती बिब्बनबाई	501.00
श्री मदनराजजी कमलराजजी सिंघी	501.00
स्व० कमला बहन की स्मृति में हस्ते गिरीशचंद शाह	501.00
श्रीमती लीलादेवी मेहता	501,00
श्री मोतीचंदजी बैद मेहता	501.00
श्री पतनमलजी कुशलचंदजी लूनावत	501.00
श्री संजयकुमारजी मालू	501 00
श्री विजयराजजी लल्लूजी	151 00
श्रीमती नर्मदादेवी पोरवाल	151.00
श्री केशरीमलजी मेहता	151.00
श्री बुद्धपालचंदजी भण्डारी	151.00
श्री फतेहचंदजी लोढ़ा	151.00
श्री रतनराजजी प्रकाशचंदजी सिंघी	151.00
श्री एल० सी० भण्डारी	151.00
श्री हीराचंदजी पालेचा	151.00
श्री नानालालजी बया	151.00
डॉ० मेहता	151.00
श्री कान्तीलालजी रानीवाले	151.00
श्री ज्ञानचंदजी सुभाषचंदजी छजलानी	151.00
,, ,, ,, ,,	151.00
श्री जयंतीभाई गगलभाई	151.00
श्री भँवरलालजी मुणोत	151.00
श्री पारसचंदजी मेहता	151.00
श्रीमती कंचन बहन रसिकलाल शाह	151.00
श्रीमती पुष्पा बहन शैलेश भाई	151,00
श्रीमती हेमलता बहन किर्तीभाई	151.00
श्री रतीलाल मोतीलाल	151.00

श्रीमती मनीषा बहन सुरेशकुमार शाह	151 00
श्री रमणकुमार हसमुखलाल शाह, बम्बई	151 00
श्री हसमुखलाल चुन्नीलाल शाह, बम्बई	151 00
श्री ताराचंदजी रतनचंदजी सिंघवी	151 00
श्रीमती ज्ञानकँवर रूपमलजी सिंघवी	151 00
श्रीमती मदनकँवर गौतमचंदजी मेहता	151 00
श्री राजेन्द्रकुमारजी सुरेन्द्रकुमारजी सिंघी	151 00
श्री मनसुखलाल मोडभाई भिवन्डी	251 00

आयम्बिल शाला परिसर जीर्णोद्धार में सहयोगकर्ता

(अप्रेल, 93 से मार्च, 94 तक)

फोटो	भेंटकर्ता
स्व० श्रीमती उमरावकँवर धर्मपत्नी स्व० श्री मिश्रीलालजी सिंघवी	श्री कुशलराजजी सिंघवी
स्व० श्री कुन्दनमलजी छाजेड़	श्रीमती सोनादेवी छाजेड़
स्व० श्रीमती कान्ता बहन नन्दलाल शाह	श्री एन० एन० शाह
श्री केसरीचंदजी सिंघी	शान्तिकुमार, कान्तिकुमार, अशोककुमार (पुत्र)
श्रीमती मन्नबाई सिंघी	शान्तिकुमार, कान्तिकुमार, अशोककुमार (पुत्र)
स्व० श्री सरदारमलजी लूणावत	श्री पन्नमलजी, कुशलचंदजी लूणावत
स्व० श्री फतेहचंदजी लोढा	श्री प्रकाशकुमार, राकेशकुमार, नरेन्द्रकुमार लोढा
स्व० श्री ज्ञानचंदजी वैद	मातुश्री भँवरबाई वैद
पी० एम० देवराज जी जैन	स्वयं
स्व० श्री मोतीलालजी चोरड़िया	श्री सुशीलकुमारजी चोरड़िया
स्व० श्री नाथमलजी चोरड़िया	" " "

श्री जैन श्वे० तपागच्छ संघ, जयपुर में सम्पन्न 27 छोड़ (चन्दरवा पूठिया) का उद्यापन

छोड़ एवं दर्शन ज्ञान चारित्र की सामग्री में भेंटकर्ताओं की शुभ नामावली

1. श्री आसानन्दजी लक्ष्मीचन्दजी भंसाली
2. श्री इन्दरचन्दजी गोपीचन्दजी चौरड़िया
3. श्रीमती उषा बहिन भारती बहिन शाह
4. श्रीमती कमला बहिन भोगीलाल शाह
5. श्री एक सद्गृहस्थ
6. श्री कन्हैयालालजी जैन
7. श्री कान्तिलालजी सिरोहीवाले
8. श्री कुशलराजजी विमलकुमारजी सिंघवी
9. श्री जवाहरलालजी सुनीलकुमारजी चौरड़िया
10. श्रीमती जीवनकुमारी हीराभाई चौधरी
11, श्री देवीचन्दजी हीराचन्दजी चौवहिया
12. श्री नरेन्द्रकुमारजी सुरेन्द्रकुमारजी सीपाणी
13. श्री पतनमलजी सरदारमलजी लूनावत
14. श्री प्रकाशनारायणजी कैलाशनारायणजी मोहनोत
15. श्रीमती पारसदेवी ज्ञानचन्दजी संचेती
16. श्री फतेहसिंहजीं दानसिंहजी कर्णावट
17. श्री बाबूलालजी तरसेमकुमारजी पारख
18. श्री बाबूलालजी तरसेमकुमारजी पारख
19. श्री महेन्द्र हीराभाई चौधरी
20. श्री भँवरलालजी मूथा
21. श्री रतनचन्दजी सिंघी
22. श्री रतनराजजी प्रकाशकुमारजी सिंघवी
23. श्री सौभाग्यचन्दजी राजेन्द्रकुमारजी बाफना
24. श्री सोहनराजजी निर्मलचन्दजी पोरवाल
25. श्री हीराचंदजी जतनचंदजी ढढ्ढा
26. श्री ज्ञानचन्दजी तिलकचन्दजी अरुणकुमारजी पालावत
27. श्री ज्ञानचंदजी सुभाषचंदजी छजलानी

उद्यापन (दर्शन-ज्ञान-चारित्र) की सामग्री में योगदानकर्त्ताओं की शुभ नामावली

1 श्री करणीसिंहजी कोचर हस्ते सुश्री सरोज कोचर
2 श्री कल्याणमलजी कस्तूरमलजी शाह
3 श्री केवलचन्दजी माणकचन्दजी टढ्ढा
4 श्री जसवन्तमलजी जगवन्तमलजी साण्ड
5 डॉ० श्री डूंगरसिंहजी पोखरना
6 श्री दुलीचन्दजी वोहरा
7 श्री वहादुरमलजी सुखसम्पतमलजी मेहता, ब्यावर वाले
8 श्रीमती विमलावाई मेहमवाल
9 श्री सुधीरकुमारजी विपिनकुमारजी सुराना
10 श्री शान्तीभाई शाह
11 श्री हीराचन्दजी कोठारी

श्री जैन श्वे० तपागच्छ सघ, जयपुर
भादवा सुदी 5 स० 2050 से भादवा सुदी 4 स० 2051 तक
श्री सुमतिनाथ जिनालय मे अष्ट प्रकारी पूजा सामग्री भेंटकर्ताओं की

शुभ नामावली

1 अखण्ड ज्योत —श्री खेतमलजी पनराजजी जैन
2 पक्षाल पूजा (दूध) —श्रीमती पदमा वहन विमलकान्त देसाई
3 वरास पूजा —एक सद्गृहस्थ ह० कुमारपाल देसाई
4 चन्दन पूजा —शाह कल्याणमलजी कस्तूरमलजी
5 केशर पूजा —श्री पूनमचन्दजी नगीनदासजी शाह
6 पुष्प पूजा —श्री वावूलालजी तरसेमकुमारजी पारख
7 अग रचना (वरक) —श्री प्रकाशनारायणजी मोहनोत
8 धूप पूजा —श्रीमती मोहनीदेवी पोरवाल

श्री सीमन्धर स्वामी जिनालय, जनता कॉलोनी, जयपुर में
दि० 27–2–94 को आयोजित प्रतिष्ठा महोत्सव में

देवी-देवताओं की (पूजनीय) प्रतिमाजी प्रतिष्ठित करने के लाभ प्राप्तकर्ता

श्री पद्मावती देवी	—	श्री महेन्द्रसिंहजी श्रीचन्दजी डागा
श्री घंटाकर्ण महावीर-चौधरी	—	श्री हीराभाई, महेन्द्र, श्रीपाल, महीपाल एवम् मंगलचंद ग्रुप
श्री नाकोड़ा भैरूंजी	—	श्री प्रकाशनारायणजी, नरेशजी, दिनेशजी, राकेशजी मोहनोत परिवार
श्री "चन्द्रायन" यक्ष	—	श्रीमती पदमा बहन तरसेमकुमारजी पारख
श्री "पंचागुनी" यक्षिणी	—	श्री बाबूलाल तरसेमकुमारजी जैन

16 विद्यादेवियों की (दर्शनीय) प्रतिमाजी विराजित करने के लाभ प्राप्तकर्ता

रोहणी	—	श्रीमती जीवनकुमारी हीराभाई चौधरी
पज्ञप्ति	—	श्रीमती अरुणाकुमारी कन्हैयालाल जैन
वज्र शृंखला	—	श्री प्रसन्नचन्द धारीवाल
वज्रांकुशी	—	डॉ० भागचन्द छाजेड़
चक्रेश्वरी	—	श्री बाबूलाल तरसेमकुमार जैन 'पारख'
नरदत्ता	—	श्रीमती उर्मिला महेन्द्र हीराभाई चौधरी
काली	—	स्व० श्री प्रेमराज के श्रेयार्थ संजीव सांड
महाकाली	—	श्रीमती अनुराधा श्रीपाल हीराभाई चौधरी
गौरी	—	डॉ० भागचन्द छाजेड़
गान्धारी	—	एक सद्गृहस्थ की ओर से
महाज्वाला	—	श्री महेन्द्रसिंह श्रीचन्द डागा
मानवी	—	श्री रतनलाल सोनी
वैरुट्या	—	श्री तरसेमकुमार, नरेन्द्र कोचर, राकेश मोहनोत
अच्छुप्ता	—	श्री ज्ञानचन्द सुभाषचन्द छजलानी
मानसी	—	श्री बाबूलाल तरसेमकुमार जैन
महामानसी	—	श्रीमती राजश्री, महीपाल, हीराभाई चौधरी

(समस्त प्रतिमाजी भराने का लाभ डॉ० भागचन्दजी छाजेड़ द्वारा लिया गया।)

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ, जयपुर

नव-निर्वाचित महासमिति (1994-96) के
पदाधिकारी एव सदस्यगण

क्र स	नाम एव पता	पद	फोन निवास	फोन कार्यालय
1	श्री हीराभाई चौधरी 6 डी, चाणक्यपुरी, बनीपार्क	अध्यक्ष	363611 372611	373495 372901
2	श्री तरसेमकुमार जैन अक्षयराज, महावीर भवन के सामने आदर्श नगर	उपाध्यक्ष	41342	46899
3	श्री मोतीलाल भडकतिया 2335, एम एस बी का रास्ता	सघ मत्री	560605	—
4	श्री दानसिह कर्णावट एफ-3, विजय पथ, तिलक नगर	अर्थ मत्री	48532	565695
5	श्री नरेन्द्रकुमार कोचर 4350, नथमलजी का चौक	मदिर व्यवस्था मत्री	564750	—
6	श्री जीतमल शाह शाह बिल्डिग, चौडा रास्ता	भडाराध्यक्ष	564476	—
7	श्री अभयकुमार चौरडिया जी मी इले, जौहरी बाजार	उपाश्रय मत्री	562860	565652
8	श्री राकेशकुमार मोहनोत 4459, के जी बी का रास्ता	आयम्बिल शाला-भोजनशाला मत्री	561038	54000[illegible]

क्र. सं.	नाम एवं पता	पद	फोन निवास	फोन कार्यालय
9.	श्री सुरेशकुमार मेहता 322, गोपालजी का रास्ता	शिक्षण मंत्री एवं संघ मंत्री के सहायक	563655 561792	310417
10.	श्री ग्रार. सी. शाह शाह एण्ड कम्पनी जौहरी बाजार	हिसाब निरीक्षक	541424 566955	565424
11.	श्री उमरावमल पालेचा पालेचा हाउस एम. एस. बी. का रास्ता	संयोजक—बरखेड़ा तीर्थ	564503	560783
12.	श्री मोतीचन्द वैद जोरावर भवन परतानियों का रास्ता	संयोजक—जनता कॉलोनी मंदिर	565896	561432
13.	श्री ज्ञानचन्द भण्डारी मारूजी का चौक घीवालों का रास्ता	संयोजक—चंदलाई मंदिर	561595 पी.पी.	—
14.	श्री महेन्द्रकुमार दोसी दोसी एण्ड कं. ग्रग्रसेन मार्केट जौहरी बाजार	संयोजक—उपकरण भण्डार	513730	566652
15.	श्री कपिल भाई शाह इंडियन वूलन कार्पेट फैक्ट्री पानों का दरीबा	सदस्य—महासमिति	49910	45033
16.	श्री कुशलराज सिंघवी 2-घ-7, जवाहर नगर	सदस्य	46183	—
17.	श्री गुणवन्तमल साण्ड चौबियों का चौक घीवालों का रास्ता	सदस्य	560792	565514

श्री सुमति जिन श्राविका सघ को समस्त जैन समाज से समय-समय पर धार्मिक कार्यों के लिए निमन्त्रण मिलते रहते हैं जिन्हे यथा शक्ति सघ पूर्ण करता है।

श्री हीराभाई चौधरी परिवार (मगलचद ग्रुप) व लुणावत परिवार द्वारा कराये गये अष्टाह्निका महोत्सव मे सघ द्वारा पूजायें बहुत ही सगीतमय तरीके से पढाई जिसको सभी ने बहुत सराहा। दोनो अवसरो पर छप्पन दिक् कुमारियो का कार्यक्रम पेश किया गया। जिसकी समस्त श्री सघ ने भूरि भूरि प्रशसा की।

इसी प्रकार सघ को महावीर जयन्ती पर रामलीला मैदान, जनता कॉलोनी मन्दिर, मालवीया नगर मन्दिर मे प्रतिष्ठा के अवसरो पर बुलाया गया, जिसमे समाज के सभी वर्गो ने इसके प्रदर्शन को श्रेष्ठ बतलाया।

पू० धरणेन्द्र सागरजी महाराज साहब के सान्निध्य मे जोबनेर मे महोत्सव हुआ। उसमे सघ को जोबनेर आने का आमन्त्रण मिला और सघ ने वहां पर जो पूजा पढाई उसे वहाँ वाले लोगो ने सराहा है।

इसी प्रकार बामनवास मे सा० श्री देवेन्द्र श्री जी म० सा० की निश्रा मे आयोजित महोत्सव मे श्राविका सघ को वहाँ बुलाया। श्री सुमति जिन श्राविका सघ की ओर से एक बस वहाँ गई। इसमे कई श्रावक-श्राविकाओ ने भी धर्म लाभ लिया। वहां पर भी सघ द्वारा पूजा पढाई गई, पूजा से सभी भक्त गण हर्ष विभोर हो गये।

अभी हाल ही मे पू० आचार्य पदमसागर सूरिजी महाराज साहब के आगमन पर श्राविका सघ द्वारा सभी कार्यक्रमो मे बढ चढकर हिस्सा लिया व आचार्य महाराज के अभिनन्दन समारोह पर अपनी भावना व्यक्त की।

इसी प्रकार पूज्य श्री जयानन्द जी म० सा० के आगमन पर भी सघ ने भाग लेकर शासन की शोभा बढाई।

समय-समय पर सघ को पूजाएँ आदि पढाने के लिए निमन्त्रण प्राप्त होते रहते है और सघ ने अभी तक कई पूजाएँ पढाई हैं।

इस चातुर्मास मे विराजित साध्वी श्री सरस्वतीश्री म० सा० एव सा० श्री शासन रत्ना श्री जी म० सा० का पूर्ण आशीर्वाद एव सम्बल प्राप्त है। प्रति रविवार को आयोजित महिला धार्मिक प्रशिक्षण शिविर में भी श्राविकाये विशद् ज्ञान प्राप्त कर रही है। हर माह की पहली तारीख को बैठक तथा 15 तारीख को सामूहिक स्नात्र पूजा सघ द्वारा पढाई जा रही है।

अन्त मे वे सभी महानुभाव धन्यवाद के पात्र हैं जो सघ के कार्यक्रमो मे तन-मन-धन से सहयोग प्रदान कर रहे है। आगे भी ऐसा ही सहयोग मिलता रहेगा, इसी आशा के साथ।

• □ •

ग्रा. श्री जनकचन्द्र सूरीजी म.सा. मुनि श्री धर्मकीर्ति विजयजी की वड़ी दीक्षा पर विराजित हैं।
(दि. 12-6-94)

श्री धर्मनाथ भगवान को प्रतिमाजी प्रतिष्ठित करते हुए लुनावत परिवार के सदस्यगण।
(दि. 24-2-94)

मूर्तियों की प्रतिष्ठा के ग्रवसर पर संघ के ग्रध्यक्ष इस जिनालय के प्रथम संयोजक श्री शान्तिकुमार जी सिंघी का स्वागत करते हुए। साथ में डॉ. भागचन्दजी छाजेड़ एवं शिक्षण मंत्री श्री सुरेश कुमार मेहता भी हैं।
(दि. 27-2-94)

श्री जैन श्वे० तपागच्छ संघ, जयपुर द्वारा आयोजित

महिला स्वरोजगार प्रशिक्षण शिविर

दिनांक 25-5-94 से 10-7-94 तक का विवरण

□ **सुश्री सरोज कोचर,** शिविर संयोजिका

मानव जीवन में बेरोजगारी आर्थिक एवं सामाजिक समस्या है। बेरोजगारी से जहाँ व्यक्ति का जीवन अस्त-व्यस्त होता है वहीं इसके पारिवारिक सम्बन्धों पर दुष्प्रभाव पड़ता है। व्यक्ति स्वयं को असहाय पराश्रित अनुभव करता है। उसमें आक्रामक प्रवृति एवं चिड़चिड़ापन बढ़ता है। परिणामस्वरूप व्यक्ति की व्यक्तिगत योग्यता एवं कार्यक्षमता घट जाती है। उसमें निराशा, कुंठा आदि उत्पन्न होती हैं। अत: आवश्यकता है इस समस्या का समाधान करके रोजगार सुविधा उपलब्ध कराने की।

सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण स्वरोजगार के इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए चारित्र चूड़ामणि, जैन दिवाकर, गच्छाधिपति परम श्रद्धेय आचार्य श्री विजयइन्द्रदिन्न सूरीश्वर जी म० सा० की पावन प्रेरणा एवं मार्गदर्शन से श्री जैन श्वे० तपागच्छ संघ, जयपुर में श्री समुद्रइन्द्रदिन्न साधर्मी सेवा कोष की स्थापना की गई है। कहा भी है—

Great thoughts reduced to practice become great acts.

अर्थात् महान् विचार कार्य रूप में परिणित होने पर महान् कर्म बन जाते हैं। इसी विचार के समर्थन में इस कोष की स्थापना का उद्देश्य सार्धमियों को स्वावलम्वी वनाना, वृद्धावस्था में भरण-पोषण, शिक्षा, चिकित्सा हेतु आर्थिक सहायता उपलब्ध कराना है।

गत वर्ष की भांति इस वर्ष ग्रीष्मावकाश में राष्ट्रसंत, परम श्रद्धेय आचार्य श्री पद्मसागर सूरीश्वरजी म० सा० के पावन आशीर्वचनों से प्रारम्भ दिनांक 25-5-94 का

डेढ माह का प्रशिक्षण शिविर श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन, घी वालो का रास्ता, जयपुर मे लगाया गया।

1725 शिविरार्थियो के नि शुल्क प्रशिक्षण शिविर मे कढाई, मोती के आभूषण, सिलाई, मेहन्दी रचना, पाक कला, पेंटिंग, सॉफ्ट टॉयज, पर्स बैग निर्माण, मोती के आभूषण, कॉमर्शियल डिजाईनिंग, पीको का प्रशिक्षण दिया गया। प्रतिदिन सामूहिक प्रार्थना के पश्चात् मार्गानुसारी जीवन के कतिपय गुणो पर प्रकाश डाला गया।

दिनाक 10-7-94 को शिविर का समापन समारोह श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ की अध्यक्षा श्रीमती जतनकँवर जी गोलेछा की अध्यक्षता एव गृहमत्री मा श्री कैलाश मेघवाल के मुख्य आतिथ्य मे सम्पन्न हुआ।

मुख्य अतिथि मा श्री कैलाश जी मेघवाल, गृहमत्री ने अपने भाषण मे कहा कि यह सघ विशाल कार्य कर रहा है। इस कार्य को हमे चारदीवारी तक ही नही करना है। अलग-अलग क्षेत्रो मे भी इस सघ के माध्यम से शिविर आयोजित किये जाने चाहिये।

सघ के अध्यक्ष श्री हीराभाई चौधरी ने स्वागत भाषण मे कहा कि हम अपनी गतिविधियो का पूर्णतया विकास एव विस्तार करना चाहते हैं जिससे अधिक से अधिक परिवार लाभान्वित हो। हमारे पास साधनो की कमी नही है पर स्थान सीमित है।

समारोह की अध्यक्षा श्रीमती जतन कँवर जी गोलेछा ने प्रशिक्षण देने वाली बहिनो को सम्मानित किया। साथ ही शिविर व्यवस्था मे सहयोग देने वाली बहिन श्रीमती अञ्जला जी श्रीश्रीमाल एव कुमारी आशा बसल को साडी ओढाकर भेंट देकर सम्मानित किया।

सघमत्री श्री मोतीलालजी भडकतिया ने साधर्मी सेवा कोष के उद्देश्यो पर प्रकाश डालते हुए प्रशिक्षण शिविर मे शिविरार्थियो एव नि शुल्क प्रशिक्षण देने वाली बहिनो की भूरि-भूरि प्रशसा की। सघ के शिक्षण मत्री श्री सुरेश जी मेहता ने धन्यवाद ज्ञापित किया। शिविर सयोजिका कु० सरोज कोचर ने शिविर की गतिविधियो का विवरण देते हुए कहा कि इस सघ के द्वारा सेवा का यह महान् कार्य किया जा रहा है। यह कार्य जाति, सम्प्रदाय से ऊपर उठकर मानव मात्र की सेवा के लिये है। प्रशिक्षण शिविरो मे श्री वीर बालिका महाविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई की छात्राओ ने जहाँ प्रशिक्षण प्राप्त किया वही पर इसी सघ के सौजन्य से रोजगार भी प्राप्त किया है। वर्तमान मे ये छात्राएँ केन्द्रीय कारागृह एव मुहाना गाँव मे प्रशिक्षण दे रही हैं। इस सघ के माध्यम से रोजगार के क्षेत्र मे 80 परिवार लाभान्वित हो रहे हैं।

वर्तमान मे सिलाई का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। वर्षा ऋतु के समाप्त होते ही बुक बाईन्डिग का प्रशिक्षण दिया जायेगा।

खाखरा, पर्स, बैग, चद्दर, हस्तकला की विविध सामग्री तैयार मिलती है अथवा अब आर्डर देने पर बनाई जाती है। मेहन्दी, केक का कार्य भी किया जाता है।

इस वर्ष 1725 बहिनों ने जो प्रशिक्षण प्राप्त किया उसमें निम्नलिखित बहिनों ने अपना निःशुल्क प्रशिक्षण दिया :

सुश्री ऋतु नाहर	—	पर्स, बैग
सुश्री कविता नाहर	—	सॉफ्ट टॉयज
सुश्री नीता जैन	—	सॉफ्ट टॉयज
सुश्री रेखा नवलखा	—	पाककला
सुश्री अनिता नाहर	—	कढ़ाई, पाककला
सुश्री मुन्नी सोनी	—	कढ़ाई
सुश्री संतोष सोनी	—	कढ़ाई
सुश्री स्वर्णलता चौरडिया	—	मोती के आभूषण
सुश्री विनीता जैन	—	मेहन्दी
सुश्री प्रिया सोनी	—	मेहन्दी
सुश्री रीना नवलखा	—	पेन्टिंग
	—	पीको एवं मशीन की कढ़ाई
सुश्री अनीला जैन	—	कॉमर्शियल डिजाइनिंग

इस प्रकार से लोक कल्याण की भावना से परिपूर्ण यह संघ अपने दायरों का विस्तार कर रहा है। आवश्यकता है महिलाओं एवं पुरुषों के स्वावलम्बी बनने की। यदि पारिवारिक विघटन को बचाना है तो रोजगार से अवश्य जुड़ना चाहिये। परिवार का भरण-पोषण, शिक्षा, विवाह आदि सभी सुव्यवस्थित रूप से हो सकेंगे। साथ ही व्यक्ति को अर्थ सम्बन्धी मानसिक संघर्षों से मुक्ति मिलेगी और तभी वह आत्म कल्याण के मार्ग की ओर भी अग्रसर हो सकेगा।

• ◆ •

श्री आत्मानन्द जैन सेवक मण्डल

प्रगति के चरण

श्री राकेशकुमार छजलानी, महामन्त्री

श्री आत्मानन्द जैन सेवक मण्डल श्री जैन श्वेताम्वर तपागच्छ सघ, जयपुर का अभिन्न अग है। सेवा के परम् ध्येय के लिए मण्डल धार्मिक एव सामाजिक स्तर पर सतत् क्रियाशील रहता है। गुरु भगवन्तो के आशीर्वाद, सघ के अनुभवीजनो के मार्ग-दर्शन से मण्डल ने आशातीत प्रगति की है।

गत वर्ष उपाध्याय श्री धरणेन्द्र सागरजी म० सा० एव मुनि प्रेम सागरजी म० सा० का चातुर्मास हुआ। आप दोनो का ही मण्डल पर वरद् हस्त रहा। पूज्य उपाध्याय श्री की निश्रा मे धर्म प्रभावना के तहत विविध आयोजनो को भूल पाना कतई सम्भव नही है। मुनि श्री प्रेम सागरजी म० की प्रेरणा से पर्वाधिराज पर्युषण के पावन प्रसग पर मण्डल के कार्यकर्ताओ द्वारा श्री शत्रुजय तीर्थ (पालीताणा) की रचना की गई, जिसका उदघाटन प्रमुख समाज सेवी श्री देवेन्द्रजी ओसवाल एव दीप प्रज्ज्वलन श्रीमान् तरसेमजी पारख के करकमलो द्वारा किया गया।

कई दिनो के अथक प्रयास से मण्डल के कार्यकर्ताओ द्वारा इस रचना को साकार रूप प्रदान किया गया। इस रचना मे अपना विशिष्ट योगदान करने वाले कार्यकर्ताओ को भेंट स्वरूप घडिया स्मृति चिह्न के रूप मे प्रदान की गई।

हजारो दर्शनार्थियो ने इस रचना के दर्शन का लाभ प्राप्त किया एव रचना की प्रशसा की। पर्युषण पर्व पर मण्डल परिवार की ओर से स्नात्र पूजा का कार्यक्रम भी रखा गया। पर्युषण पर्व पर हमेशा की भाँति मण्डल के कार्यकलापो मे अपना विशिष्ट योगदान देने वाले कार्यकर्ताओ का बहुमान चादी पर भगवान की फोटो फ्रेम से समाज के अध्यक्ष श्रीमान् हीराभाई चौधरी द्वारा किया गया।

इस श्रृखला के तहत् भक्ति का कार्यक्रम श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन मे श्री आत्मानन्द जैन सेवक मण्डल एव श्री ज्ञान विचक्षण महिला मण्डल के सयुक्त तत्वावधान मे रखा गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमान् हीराभाई चौधरी ने की। कार्यक्रम बडे ही सुन्दर ढग से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मण्डल के अध्यक्ष धनपत सिह छजलानी ने अध्यक्ष महोदय का साफा पहनाकर स्वागत किया। कार्यक्रम का सचालन सुश्री सरोजजी कोचर ने किया। इस कार्यक्रम के सफल सचालन मे श्री सुरेशभाई मेहता के योगदान को भी भुलाया नही जा सकता। अपने अध्यक्षीय भाषण मे श्रीमान हीराभाई चौधरी द्वारा श्री आत्मानन्द जैन सेवक मण्डल एव श्री ज्ञान विचक्षण महिला मण्डल के सदस्यो को चादी के बैच प्रदान करने की घोषणा भी की गई। दोनो मण्डल

(शेष पृष्ठ 78 पर)

श्रद्धांजलियाँ

काल चक्र कभी रुकता नहीं है। जो आये है वे जायेंगे ही, यह शाश्वत सत्य है फिर भी जो अपने जीवन काल में ऐसे कार्य कर जाते हैं कि न तो उनकी याद सहज ही भुलाई जा सकती है और न ही उनके चले जाने से हुई रिक्तता की पूर्ति सहज ही हो पाती है। तपागच्छ में ऐसे सैंकड़ों आचार्य है जो जिन शासन के दैदीप्यमान नक्षत्र रहे है उनमें से कतिपय विगत वर्ष में काल धर्म को प्राप्त हुए है। जिनके बारे में इस श्रीसंघ को सूचना प्राप्त हो सकी उनके प्रति तथा जिनके बारे में सूचना प्राप्त नहीं हुई उन सभी के प्रति श्री जैन श्वे० तपागच्छ संघ, जयपुर तथा इस अंक के सम्पादक मण्डल के सदस्यगण हार्दिक श्रद्धांजलि स्वरूप श्रद्धा सुमन समर्पित करते हैं।

आचार्यदेव श्रीमद् विजय घनेश्वरसूरीश्वरजी म. सा.

आचार्यदेव श्रीमद् विजय भुवनभानुसूरीश्वरजी म. सा. के समुदायवर्ती आचार्य श्री घनेश्वर सूरीश्वरजी म. सा. का दि. 6 जनवरी, 1994 को अहमदाबाद में कालधर्म हुआ। उस समय आपकी आयु 76 वर्ष थी। आपने अपने जीवनकाल में शासन प्रभावना के अनेक कार्य किए। आप दर्शन शास्त्र के अच्छे ज्ञाता थे।

आचार्य श्री प्रदोतन सूरीश्वरजी म. सा.

आपका दि० 29–1–94 को पोरवन्दर में 79 वर्ष की आयु में काल धर्म हुआ। आप परमपूज्य शासन प्रभावक आचार्यदेव श्रीमद् विजय रामचन्द्र सूरीश्वरजी म. सा. के समुदायवर्ती थे। आप महान तपस्वी एवं सरल स्वभावी थे। आपका जन्म राजस्थान के ही बीसलपुर ग्राम मे हुआ था।

आचार्य श्री प्रियंकरसूरीश्वरजी म. सा.

कई वर्षो की अस्वस्थता के पश्चात् दि० 15–3–94 को अहमदावाद मे आप काल धर्म को प्राप्त हुए। आप आचार्य श्रीमद् विजय नेमीसूरीश्वरजी म. सा. के समुदायवर्ती थे।

आचार्य श्री मेरुप्रभसूरीश्वरजी म. सा.

आपका भी दि. 20–6–94 को अहमदाबाद में ही काल धर्म हुआ। आप भी स्व. आचार्य सम्राट विजय नेमीसूरीश्वरजी म. सा. के समुदायवर्ती थे तथा इस समय गच्छाधिपति थे। आपने 89 वर्ष की आयु प्राप्त की। आप प्रकाण्ड विद्वान एवं निडर वक्ता थे।

आचार्य श्री धनपालसूरीजी म. सा.

आप भी दि० 28–7–94 को हुगली में काल धर्म को प्राप्त हुए। आप 69 वर्ष के थे। आप भी श्री भुवनभानु सूरीश्वरजी म. सा. के समुदायवर्ती आचार्य थे।

श्री जैन श्वे० तपागच्छ संघ, जयपुर के कतिपय ज्ञातव्य महानुभावों का भी देहावसान हुआ :

श्री सरदारमलजी लुनावत—आप वर्षो तक महासमिति के सदस्य तथा कोषाध्यक्ष

रहे तथा आप वर्षों तक वरखेडा मे स्थित तीर्थ की व्यवस्था सम्भालते रहे थे ।

श्री त्रिलोकचन्दजी कोचर—आप भी महासमिति के सदस्य रहे हैं तथा वरखेडा तीथ की व्यवस्था मे आपका उल्लेखनीय योगदान रहा था ।

श्री गोपीचन्दजी चौरडिया—आप भी महासमिति के सदस्य रहे हैं । सघ की गतिविधियो को सुचारु रुप से सचालित करने मे आपका हमेशा योगदान रहा था ।

साथ ही

श्री हेमकुमारजी नाहटा

श्री पदमचन्दजी लोढा

श्री फतेहचन्दजी लोटा

श्री प्रशान्तकुमारजी लुनावत

श्री वरदीचन्दजी कर्णावट

श्रीमती उगमकवरवाई भडकतिया

श्रीमती माणकवाई मेहता (दातडीवाले) का देहावसान हुआ ।

उपरोक्त सभी स्वर्गीय आत्माओ की शान्ति के लिए जिन शासन देव से प्रार्थना है ।

—सम्पादक मण्डल

(पृष्ठ 76 का शेष)

परिवार आपको हार्दिक धन्यवाद प्रेषित करते हैं । इस भक्ति कायक्रम मे समाज के कई विशिष्ट व्यक्ति मौजूद थे । दर्शको ने इस कार्यक्रम को वहुत सराहा । मण्डल परिवार उनका हार्दिक आभार व्यक्त करता है ।

सदैव की भांति गत वर्ष भी मण्डल परिवार की ओर से एक यात्रा का आयोजन रखा गया, जिमके अन्तर्गत अलवर स्थित रावण पार्श्वनाथ भगवान एव तिजारा मदिर के दर्शन का आयोजन रखा गया । मण्डल के मदस्यो के साथ-माथ समाज के व्यक्तियो ने भी इम यात्रा का लाभ लिया । जिन मन्दिरो के दर्शन के साथ-साथ भ्रमण स्थलो का कायक्रम भी रखा गया । इसके अन्तर्गत सिलीसेड, पाण्डूपोल, भर्तृहरी व सिरिस्का थे । इम यात्रा के सयोजक श्री चिमनलाल जी मेहता थे । आपका इम यात्रा मे मम्पूर्ण महयोग मिला ।

गत चातुर्माम के पश्चात् परम पूज्य आचार्य पद्म सागर सूरीश्वरजी म० अपने मुनि मण्डल के साथ जयपुर पधारे । आपके आगमन के पश्चात् जयपुर शहर में अनेक कार्यक्रम आयोजित किये गये । सभी कार्यक्रमो मे मण्डल कार्यकर्ताओ ने अपना विशिष्ट योगदान किया । आपश्री को मण्डल परिवार की ओर से मूर्ति वोहराई गई । आप श्री का आशीर्वाद मण्डल परिवार को सदैव मिलता रहता है ।

इस वर्ष परम पूज्य आचार्य श्री पद्म सागर सूरीश्वरजी मा० के शिष्य मुनि श्री निर्मल सागरजी मा० आदि ठाणा 3 का चातुर्मास प्रवेश के साथ ही मण्डल मे नई प्रवृत्तियो को वेग मिला ।

मण्डल की गतिविधिया अनुशासित ढग से चल रही हैं । इसके लिए मैं समस्त श्री सघ एव कार्यकर्ताओ के प्रति कृतज्ञ हूँ । आशा है मण्डल परिवार को समस्त श्रीसघ का पूर्ववत् मार्गदर्शन एव महयोग मिलता रहेगा ।

जय वीरम् ।

श्री जैन श्वे. तपागच्छ संघ, जयपुर

वार्षिक प्रतिवेदन, वर्ष १९९३–९४

(महासमिति द्वारा अनुमोदित)

—**मोतीलाल भड़कतिया**, संघ मंत्री

परमपूज्य राष्ट्र सन्त आचार्य श्री पद्मसागर सूरीजी म० सा० के शिष्य रत्न मुनिराज श्री निर्मलसागरजी म० सा०, मुनिराज श्री पद्मोदयसागरजी म० सा० एवं मुनिराज श्री उदयसागरजी म० सा० तथा

आचार्यदेव श्री अरिहन्तसूरीश्वरजी म०सा० की समुदायवर्ती साध्वी श्री आनन्द श्रीजी म० सा० की विदुषी शिष्य रत्ना साध्वी श्री सरस्वतीश्रीजी म० सा० एवं सा. श्री शासन रत्नाश्रीजी म०

एवं

सभी साधर्मी धर्म प्रेमी बन्धुओ,

नव निर्वाचित महासमिति वर्ष 1994–96 की ओर से यह वार्षिक प्रतिवेदन लेकर मै आपकी सेवा में उपस्थित हूँ।

विगत महासमिति (वर्ष 1991–93) का कार्यकाल पूर्ण होने से पूर्व ही नई महासमिति के निर्वाचन हेतु कार्यवाही प्रारम्भ कर दी गई। सर्व प्रथम मतदाता सूची में संशोधन हेतु आवेदन आमन्त्रित किये गये। मतदाता सूची का पुनरावलोकन करने तथा प्राप्त नये आवेदनों पर विचार करने हेतु श्री नरेन्द्रकुमारजी लुनावत के संयोजकत्व में पाँच सदस्यीय समिति का गठन किया गया। इस समिति की सिफारिशानुसार मतदाता सूची का प्रकाशन कर चुनाव प्रक्रिया प्रारम्भ की गई। श्री राजेन्द्रकुमारजी चतर, सी० ए०, को चुनाव अधिकारी नियुक्त किया गया। 49 उम्मीदवारों ने अपने नामांकन पत्र प्रस्तुत किये जिसमें से 16 ने अपने नाम वापिस ले लिये। चुनाव हेतु शेष रहे 33 उम्मीदवारों में से महासमिति के लिए 21 सदस्यों का चुनाव करने हेतु दि० 10 अप्रेल, 1994 को मतदान हुआ। मतदान का कार्य अत्यन्त शान्ति, शालीनता एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ तथा अर्द्धरात्रि पश्चात् मतगणना पूर्ण होने पर सफल

उम्मीदवारों की सूची प्रकाशित कर दी गई। दि० 17–4–94 को सहवरण एव तत्पश्चात् पदाधिकारियो के चुनाव का कार्य सम्पन्न हुआ। इसके साथ ही महासमिति ने अपना कार्यभार ग्रहण किया। महासमिति के गठन के तत्काल पश्चात् प्रथम बैठक हुई जिसमें प्रस्ताव पारित कर श्रीसघ, चुनाव अधिकारी तथा उनके सहयोगियो को धन्यवाद ज्ञापित करने के साथ ही श्रीसघ को विश्वास दिलाया गया कि नव-गठित महासमिति श्रीसघ की आशा एव भावनानुसार कार्य करने का प्रयत्न करती रहेगी।

इसी बैठक मे श्री सम्मेतशिखरजी तीर्थ के सम्बन्ध मे प्रस्ताव पारित कर राष्ट्रपति, बिहार के राज्यपाल, गृहमन्त्री भारत आदि से बिहार सरकार के अध्यादेश पर स्वीकृति प्रदान नही करने का अनुरोध किया गया। पारित प्रस्ताव पृथक से प्रकाशित किया जा रहा है।

चातुर्मास की स्वीकृति

चातुर्मास स्वीकृति हेतु पूर्व महासमिति द्वारा प्रयास जारी था और इसी उद्देश्य को दृष्टिगत रखते हुए तथा जैसलमेर मे राजस्थान जैन सघ सस्थान की बैठक मे भाग लेने की दृष्टि से छ दिवसीय यात्रा का आयोजन किया गया। दो बसो से यात्रीगण सवप्रथम नागौर मे आचार्य श्री नित्यानन्द सूरीजी म० सा०, जालौर मे आचार्य श्री गुणरत्नसूरीजी म०, भीनमाल मे आचार्य श्री पद्मसागर सूरीजी म० सा०, नाकोडा तीर्थ पर आचार्य श्री सुशीलसूरीजी म० तथा रानी मे आचार्य श्री आनन्दघन सूरीजी म० सा० की सेवा मे उपस्थित होकर उन्हें आगामी चातुर्मास जयपुर मे करने की विनती के साथ-साथ भविष्य मे जब अनुकूलता हो चातुर्मास जयपुर मे करने की विनती प्रस्तुत की गई। सभी आचार्य भगवन्तो ने यह चातुर्मास तो जयपुर मे करने की असमर्थता जाहिर की लेकिन भविष्य मे कभी सुयोग बनने पर जयपुर मे चातुर्मास करने की भावना जाहिर की।

इनके अतिरिक्त भी अनेक गुरु भगवन्तो को पत्र प्रेषित किये गये। साथ ही आचार्य श्री पद्मसागर सूरीजी म० सा० से सघ के अध्यक्ष श्री हीराभाई चौधरी ने निरन्तर सम्पर्क बनाए रखा तथा उनके शिष्य समुदाय मे से किन्ही मुनिवर का चातुर्मास जयपुर मे करने की स्वीकृति प्रदान करने हेतु आग्रह करते रहे। इसका सुफल प्राप्त हुआ एव पाली मे उपस्थित होने का निर्देश प्राप्त हुआ। यद्यपि चुनाव प्रक्रिया जारी थी लेकिन आचार्यश्री का सकेत प्राप्त होने से दि० 13–4–94 को एक बस से यात्रियो के साथ आपकी सेवा मे पाली मे उपस्थित हुए। आचार्य भगवन्त ने अत्यन्त कृपा पूर्वक अपने शिष्य समुदाय मे से ओजस्वी प्रवचनकार श्री निर्मलसागरजी म० सा० आदि ठाणा–3 को जयपुर मे चातुर्मास करने की स्वीकृति प्रदान की तथा दि० 15–4–94 को पाली मे आयोजित धर्म सभा मे जय बुलाई गई।

साध्वीजी म० सा० का भी चातुर्मास कराने हेतु यो तो कई प्रयास हुए लेकिन

अनायास ही पूज्य साध्वी श्री सरस्वतीश्रीजी म० सा० आदि ठाणा–2 का अपने आगे के अध्ययन हेतु जयपुर पधारना हुआ। आपसे भी साग्रह विनती की गई तथा पूज्य साध्वी जी आनन्दश्रीजी म० सा० से भी आज्ञा प्रदान करने हेतु विनती की जिन्होंने कृपा पूर्वक आपको भी यह चातुर्मास जयपुर में करने की आज्ञा प्रदान कर दी। जयपुर श्रीसंघ पर किये गये इन उपकारों के लिए हम सभी आपके इन उपकारों के लिए अपनी कृतज्ञता एवं आभार प्रगट करते हैं।

चातुर्मास काल

आषाढ़ शुक्ला 3, सं० 2051, सोमवार, दि० 11 जुलाई, 1994 को प्रातः 8 बजे शुभ मुहूर्त में आपके नगर प्रवेश का आयोजन रखा गया। चैम्बर भवन से बैंडबाजे, लवाजमे तथा साधर्मी भाई-बहिनों के साथ आप सभी ने चातुर्मास हेतु जयपुर नगर में प्रवेश किया। मार्ग में स्थान-स्थान पर गंवलिया कर गुरु भक्ति की गई तथा आत्मानन्द जैन सभा भवम पहुँचने पर धर्म सभा हुई जिसमें आप सभी का अभिनन्दन किया गया तथा आपके इस उपकार के लिए कृतज्ञता जाहिर की गई।

यहाँ शुभागमन के साथ ही मुनिराज श्री निर्मलसागरजी म० सा० का दैनिक प्रवचन प्रारम्भ हो गया। आषाढ़ सुदी 14 के दिन सूत्र बोहराने एवं ज्ञान पूजा की बोलियां हुई। उत्तराध्ययनजी सूत्र बोहराने का लाभ श्रीमान् दर्शनकुमारजी नवलखा अजीमगंज वालों ने लिया। अगले दिन सूत्र बोहराने का कार्य सम्पन्न होने के साथ ही आपके सूत्र पर आधारित ओजस्वी एवं तत्त्वपूर्ण प्रवचन प्रारम्भ हो गये। प्रवचनों में उपस्थित होने की जैसी तत्परता एवं उत्कण्ठा अभी देखने को मिल रही है वैसी पूर्व में यदा कदा ही दृष्टिगोचर हुई। प्रवचनोपरान्त प्रतिदिन संघ पूजायें हो रही हैं। क्रमिक अट्ठम की आराधनायें भी प्रारम्भ हो गई तथा चार माह तक निरन्तर चलने वाले अट्ठम में भाग लेने हेतु तपस्वियों ने अपने नाम अंकित करा लिए हैं।

मास क्षमण की तपस्या

पूज्य मुनिराज श्री उदयसागरजी म० सा० ने नगर प्रवेश से पूर्व ही तपस्या प्रारम्भ कर दी थी इस निश्चय के साथ कि उन्हें मास क्षमण करना है। वैसे तो आप पूर्व में भी दो मास क्षमण कर चुके हैं और यह इनका तीसरा मास क्षमण पूरा हुआ है। तपस्या में जिस प्रकार की ओजस्विता एवं आत्म-शक्ति आप में देखने को मिली वह यदाकदा ही देखने को मिलती है।

श्रीसंघ की ओर से पूज्य मुनिराज की तपस्या निमित्त तीन दिवसीय महोत्सव का आयोजन रखा गया। दि० 2–8–94 को प्रवचन पश्चात् भव्य वरघोडा (चैत्य परिपाटी) का आयोजन रखा गया। इस आयोजन के द्रव्य व्यय का लाभ लुनावत परिवार द्वारा लिया गया। हाथी, घोड़े लवाजमे, बैंडबाजे, भजन मण्डली सहित चतुर्विद

सघ के साथ सभी जिनालयो के दर्शनार्थ पधारे। पूज्य मुनिराज लगभग डेढ घटे के जुलूस मे पैदल ही चले जिसके कारण सभी सघो के सम्मिलित सैकडो नर-नारी भाव-विभोर थे। इस अवसर पर सिरोही, भावनगर, राजकोट, बम्बई आदि कई स्थानो से बडी सख्या मे भाई-बहिन बाहर से भी पधारे हुए थे। दिन मे श्राविकाओ द्वारा विविध गवलियो के साथ उनका बधावणा किया गया तथा शासन माता के गीत हुए। रात्रि को श्री महावीर युवक मण्डल, सिरोही द्वारा भक्ति का कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। दि० 3–8–94 को प्रवचन पश्चात् दो घण्टे तक सामायिक सहित नवकार महामत्र के जाप का आयोजन रखा गया। तत्पश्चात् उव्वसग्गहरम् महापूजन श्री ज्ञानचन्दजी सुभाषचन्दजी छजलानी परिवार द्वारा पढवाई गई तथा रात्रि मे भी भक्ति सध्या का कार्यक्रम हुआ। इसी दिन सामूहिक उपवास का आयोजन भी रखा गया जिसमे दो सौ से भी अधिक भाई-बहिनो ने उपवास रखे। उपवास करने वालो के पारणे भी मुनिराज के पारणे के साथ यही पर कराये गये। पारणे कराने का लाभ चटावा बुला कर दिया गया जिसे श्री हीराभाई चौधरी मगलचन्द ग्रुप द्वारा लिया गया।

श्री विचक्षण भवन मे विराजित पूज्य मुनिराज श्री जयानन्दजी म० एव श्री कुशलमुनिजी म० श्री सघ सहित वरघोडा, महापूजन तथा पारणे के अवसर पर निरन्तर साथ रहे।

समाचार पत्रो, दूरदर्शन मे तो इसके समाचार चित्र सहित प्रकाशित हुए ही, राज्य सरकार द्वारा भी दि० 4–8–94 को पारणे के उपलक्ष्य मे सारे राजस्थान मे बूचडखाने बन्द रखने के आदेश प्रसारित किये गये।

इस प्रकार तपस्या के उपलक्ष्य मे जीवो को अभयदान, जप, तप, साधर्मी भक्ति, प्रभु पूजा, साढे बारह हजार फूलो की भगवान की आगी सहित सभी प्रकार के भक्ति-कारक विविध आयोजन सम्पन्न हुए जो जयपुर श्रीसघ के लिए चिर-स्मरणीय हैं।

महिलाओं का धार्मिक प्रशिक्षण शिविर

एक ओर जहा पूज्य मुनिराजो की उपस्थिति मे विविध धर्म क्रियाओ के आयोजन हो रहे हैं वहा विराजित पूज्य साध्वी श्री सरस्वतीश्रीजी म० सा० की पावन निश्रा मे महिलाओ मे धम तत्वो की विशुद्ध जानकारी एव ज्ञानाभिवृद्धि हेतु प्रति रविवार दोपहर मे शिविर का आयोजन चल रहा है। श्रीमती मीना कटारिया को इसका सयोजक नियुक्त कर शिविर की व्यवस्था का दायित्व सौंपा गया है। श्री धनरूपमलजी नागौरी पठन-पाठन मे योगदान प्रदान कर रहे हैं। प्रति शिविर मे परीक्षा का आयोजन भी हो रहा है तथा विजेताओ को पुरस्कृत किया जा रहा है।

विगत चातुर्मास

जैसा कि आपको विदित है कि पिछले वर्ष भी यहां पर परम पूज्य आचाय

श्री पद्मसागर सूरीजी म० सा० के प्रथम पट्टधर उपाध्याय श्री धरणेन्द्रसागरजी म० सा० एवं मुनिराज श्री प्रेमसागरजी म० सा० का चातुर्मास था। पर्यूषण पर्व तक के क्रिया कलापों के बारे में विस्तृत विवरण पिछले प्रतिवेदन में प्रस्तुत किया गया था। पर्यूषण पर्व की भव्य आराधनायें आपकी निश्रा में सानन्द सम्पन्न हुई थीं। सपनोंजी की बोलियों सहित अन्य सभी सीगों में भी अच्छी आवक रही थी। आसोजी ओलीजी कराने का लाभ श्री प्रकाशचन्दजी मेहता परिवार द्वारा लिया गया। पर्यूषण तक अट्ठम एवं इससे ऊपर के तपस्वियों के पारणे का लाभ श्री मीठालालजी पारसमलजी खुवाड परिवार द्वारा लिया गया। मास क्षमण की तपस्या सहित अन्य विशिष्ट तपस्वियों का बहुमान तो महावीर जन्म वांचना दिवस को किया ही गया, क्रमिक अट्ठम की तपस्या में भाग लेने वाले 51 भाई-बहिनों का बहुमान भी चौमासी चौदस को किया गया।

चातुर्मास पलटवाने का लाभ श्री पतनमलजी नरेन्द्रकुमारजी लूनावत परिवार द्वारा लिया गया। पूज्य उपाध्याय एवं साध्वी श्री देवेन्द्रश्रीजी म० सा० आदि ठाणा संघ सहित आपके निवास स्थान पर पधारे जहां पर आपके प्रवचन हुए तथा लूनावत परिवार द्वारा संघ भक्ति की गई।

दि० 30 जनवरी, 94 को जोबनेर में स्थित जिन मन्दिर की वर्षगांठ थी। इस अवसर पर आप जोबनेर पधारे तथा श्रीसंघ की ओर से एक बस से यात्रीगण वहाँ उपस्थित हुये तथा संघ की ओर से पूजा पढ़ाई गई।

विभिन्न कॉलोनियों में विचरण करते हुये तथा अनेक परिवारों को लाभ देते हुये आपने जोधपुर के लिये विहार किया तथा आचार्य श्री पद्मसागर सूरिजी म० सा० के साथ आपका पुनरागमन हुआ।

27 छोड का उद्यापन

यह वर्ष जयपुर मण्डन चरम तीर्थंकर भगवान श्री महावीर स्वामी सहित विविध अति प्राचीन प्रतिमाओं की प्राण प्रतिष्ठा का रजत जयन्ती वर्ष भी था। 25 वर्ष पूर्व स्व० आचार्यदेव श्री विजयभुवनभानुसूरीश्वरजी म० सा० की पावन निश्रा में श्री सुमतिनाथ जिनालय के ऊपरी कक्ष में मिगसर बदी 4 सं० 2026 को प्रतिष्ठाएं हुई थीं।

विगत अनेक वर्षो में कभी उद्यापन का कार्यक्रम हुआ हो यह स्मृति में नहीं है। विराजित पूज्य उपाध्याय श्री एवं पूज्य साध्वी श्री देवेन्द्रश्रीजी म० सा० की सद्प्रेरणा हुई कि यहां पर उद्यापन का आयोजन किया जाय। कहते हैं कि जैसे जिनालय का शिखर कलश से सुशोभित होता है, जैसे जिनालय जिन बिम्ब से अद्भुत लगता है वैसे ही तपस्या उद्यापन रूपी कलश से ही सुशोभित होती है। गुरु भगवन्तों

की इस महान प्रेरणा से ही इस श्रीसघ को ऐसे ही अद्भुत भव्य 27 छोड का उद्यापन कराने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस अवसर पर दि० 18 से 22 नवम्बर, 93 तक श्री बृहद् शान्ति, श्री सिद्ध चक्र, श्री सर्वतोभद्र, श्री भक्तामर महापूजाओ सहित पन्चाह्निका महोत्सव का आयोजन किया गया। यो तो आयोजन को सफल बनाने मे सभी की भागीदारी रही है लेकिन छोड भेंटकर्ता एव योगदानकर्ताओ का विवरण पृथक से प्रकाशित किया जा रहा है।

श्री धर्मनाथ भगवान की प्रतिमाजी की प्रतिष्ठा

श्री सुमतिनाथ जिनालय के मूल गम्भारे मे पूर्व मे श्री धर्मनाथ स्वामी की प्रतिमाजी विराजमान थी। किसी कारणवश उक्त प्रतिमाजी खण्डित होने से यहा पर पुन श्री धर्मनाथ भगवान की प्रतिमाजी विराजमान कराने का कार्य पिछले कुछ वर्षो से लम्बित चला आ रहा था। इस चातुर्मास मे विराजित उपाध्याय श्री धरणेन्द्र-सागरजी म० सा० की निश्रा मे यह कार्य सम्पन्न कराने का श्रीसघ द्वारा निश्चय किया गया। श्री लूनावत परिवार की तीव्र भावना एव विषय की प्रासगिकता से जुडे हुये होने से उनकी भावना का आदर करते हुये श्रीसघ द्वारा प्रतिष्ठा एव महोत्सव कराने का पूरा लाभ लूनावत परिवार को दिया गया।

वि० स० 2050 माघ शुक्ला 13, गुरुवार, दि० 24 फरवरी, 1994 को शुभ मुहूर्त मे बडे ही हर्षोल्लास के साथ श्री हीराभाई चौधरी मगलचन्द ग्रुप द्वारा भेंट किए गए मारबल के कमल पर प्रतिमाजी विराजमान कराने का यह कार्य सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री पार्श्व पद्मावती, शत्रुजय महिमा गर्भित 99 प्रकारी पूजा, अट्ठारह अभिषेक, बृहद् शान्ति स्नात्र एव 56 दिगकुमारियो के सास्कृतिक रगारग कार्यक्रम सहित अष्टाह्निका महोत्सव हुआ और इस प्रकार प्रतिष्ठा महोत्सव का कार्य सम्पन्न हुआ। आचार्यश्री, उपाध्यायश्री, मुनिवर सभी को कामली वोहरा कर तथा सघ के अध्यक्ष श्री हीराभाई चौधरी को शाल ओढाकर लूनावत परिवार द्वारा बहुमान अभिनन्दन किया गया।

जनता कॉलोनी मे स्थित श्री सीमन्धर स्वामी जिनालय मे प्रतिष्ठा

जैसा कि आपको विदित है कि इस श्रीसघ द्वारा निर्मित कराये जा रहे श्री सीमन्धर स्वामी जिनालय का निर्माण कार्य कई वर्षो से चल रहा था वह लगभग पूर्ण हो गया। प्रतिष्ठा कराने का कार्य भी हो गया था।

इसी क्रम मे डा० भागचन्दजी छाजेड द्वारा भावना व्यक्त की गई कि यहा पर 16 विद्या देवियो की दर्शनीय प्रतिमाजी भी विराजित की जावे। महासमिति द्वारा इसको स्वीकार कर प्रतिमाजी आदि भराने का कार्य प्रारम्भ किया गया था वह भी पूर्ण हो गया और प्रतिमाए तैयार होकर प्राप्त हो गई। सभी प्रतिमाओ को भराने

का द्रव्य लाभ डा० भागचन्दजी छाजेड़ द्वारा ही वहन किया गया था । श्री तरसेम-कुमारजी जैन, संयोजक, जनता कॉलोनी द्वारा त्वरित गति से पूर्ण कराये जा रहे निर्माण कार्य के साथ उन्होंने देवियों को बिराजमान कराने की देहरियां भी तैयार करा दीं ।

इसी स्थिति को दृष्टि में रखते हुये महासमिति द्वारा निश्चय किया गया कि बिराजित पूज्य उपाध्याय श्री धरणेन्द्रसागरजी म० सा० की पावन निश्रा में यह कार्य भी पूर्ण कर लिया जावे । श्री धर्मनाथ स्वामी की प्रतिष्ठा महोत्सव के क्रम में ही तीन दिवसीय महोत्सव का आयोजन दि० 26 से 28 फरवरी, 94 तक रखा गया । दि० 26–2–94 को देवी देवताओं के आह्वान का विशिष्ट अनुष्ठान कराने का लाभ मंगलचन्द ग्रुप द्वारा लिया गया । दि० 27–2–94 फाल्गुन बदी 2 सं० 2050 रविवार को शुभ मुहूर्त मे श्री पद्मावती देवी, श्री घण्टाकर्ण महावीर, श्री नाकोड़ा भैरूजी, श्री चन्द्रायन यक्ष एवं श्री पंचागुनी यक्षिणी की पूजनीय प्रतिमाजी तथा 16 विद्या देवियों की दर्शनीय प्रतिमाजी बिराजमान कराने का महोत्सव सम्पन्न हुआ । पूजनीय प्रतिमाजी विराजमान कराने का लाभ चढ़ावा बुला कर तथा दर्शनीय प्रतिमाओं को बिराजमान कराने का लाभ निश्चित राशि का नखरा जमा कराने वाले भेंटकर्ताओं को दिया गया जिनका विवरण पृथक से प्रकाशित किया जा रहा है । मध्याह्न में श्री संघ की ओर से साधर्मी वात्सल्य का भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ । दि० 28-2-94 को प्रातः द्वारोद्घाटन का लाभ श्री ज्ञानचन्दजी सुभाषचन्दजी छजलानी परिवार को प्राप्त हुआ । तदनन्तर स्नात्र पूजा के साथ यह कार्यक्रम पूर्ण हुआ ।

साधु साध्वीवृन्द का शुभागमन

चातुर्मास समाप्ति के पश्चात् निम्नांकित साधु साध्वीवृन्द का जयपुर शुभागमन हुआ जिनकी भक्ति एवं वैय्यावच्च का सौभाग्य श्रीसंघ को प्राप्त हुआ—

(1) साध्वी श्री विरतीयशाश्रीजी ठाणा–5

(2) साध्वी श्री सरस्वतीश्रीजी ठाणा–2

(3) साध्वी श्री भव्यकलाश्रीजी ठाणा–3

(4) साध्वी श्री कमलप्रभाश्रीजी ठाणा–8

(5) साध्वी श्री राजप्रज्ञाश्रीजी ठाणा–3

(6) आचार्य श्री जनकचन्द्रसूरीजी म० सा० ठाणा–2

(7) आचार्य श्री पद्मसागरसूरीजी म० सा० आदि ठाणा–15

(8) मुनि श्री धरमधुरन्धर विजयजी आदि ठाणा–3

आचार्य श्री जनकचन्द्रसूरीजी म० सा० का शुभागमन

इस वर्ष मे दो महान आचार्यों का शुभागमन उल्लेखनीय घटनाए रही है। पूज्य आचार्य श्री जनकचन्द्रसूरीजी म० सा० का शुभागमन जयपुर मे विपपश्णा के अन्तर्गत ध्यान योग की साधना के निमित्त को लेकर हुआ । जयपुर शुभागमन पर दि० 22–2–94 को भव्य समैय्या के साथ आपका यहा पर शुभागमन हुआ । पूण लवाजमे सहित भव्य जुलूस के साथ आपका नगर प्रवेश हुआ । श्री धर्मनाथ स्वामी को प्रतिष्ठा पर भी आप यही पर विराजे एव वासक्षेप प्रदान किया । नव-दीक्षित मुनि श्री धर्मकीर्ति विजयजी म० सा० की वडी दीक्षा का आयोजन भी आपकी पावन निश्रा मे यही पर सम्पन्न हुआ ।

श्री धर्मकीर्ति विजयजी म० सा० की बडी दीक्षा

पूज्य मुनिराज श्री धरमधुरन्धर विजयजी म० सा० के शिष्य नव-दीक्षित मुनि श्री धर्मकीर्ति विजयजी म० सा० की वडी दीक्षा जयपुर मे ही कराने का निश्चय हुआ । मुनिराज के जयपुर पधारने पर आचार्य भगवन्त के साथ ही आप सभी का दिनाक 11 जून, 94 को प्रात यहा पर शुभागमन हुआ ।

ज्येष्ठ सुदी 3 रविवार दिनाक 12 जून, 94 को प्रात पूज्य आचार्य श्री जनक-चन्द्र सूरीश्वरजी म० सा० एव उपाध्याय श्री धरणेन्द्रसागरजी म० सा० आदि ठाणा की पावन निश्रा मे वडी दीक्षा का भव्य महोत्सव सम्पन्न हुआ । इस अवसर पर आचायश्री, उपाध्यायश्री एव मुनि श्री धरमधुरन्धर विजयजी एव मुनि श्री धर्मकीर्ति विजयजी म० सा० को कामलिया वोहरा कर श्रीसघ की ओर से वहुमान किया गया ।

ज्येष्ठ सुदी 6 बुधवार दिनाक 15 जून, 94 को सक्राति महोत्सव भी आपकी पावन निश्रा मे धूमधाम से मनाया गया ।

उक्त महोत्सव के पूर्ण होने पर आचार्यश्री ने बेडा के लिये, उपाध्यायश्री ने व्यावर के लिये तथा मुनि श्री धरमधुरन्धर विजयजी आदि ठाणा ने दिल्ली के लिये विहार किया ।

आचार्य श्री पद्मसागरसूरीजी म० सा० का शुभागमन

आचार्य श्री पद्मसागरसूरीजी म० सा० का शुभागमन जयपुर के लिये अवि स्मरणीय एव अभूतपूव घटना थी ।

परम श्रद्धेय, शासन प्रभावक, युगदृष्टा, ओजस्वी प्रवचनकार, राष्ट्रसन्त आचाय श्री पद्मसागर सूरीश्वरजी म० सा० के जयपुर आगमन के समाचार से ही जयपुर के जैन जगत् मे उल्लासमय वातावरण बना हुआ था तथा आपके आगमन की आतुरता से

प्रतीक्षा थी। श्री संखेश्वरम् मंदिर, मालवीय नगर में प्रभु प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा का कार्यक्रम आपकी ही प्रतीक्षा में लम्बित था जो अब पूरा होने जा रहा था। दिल्ली चातुर्मास स्वीकृत होने पर यह तो निश्चित था कि आप यहां पधारेंगे। मार्ग में हर क्षेत्र और स्थान की अधिक से अधिक समय तक रुकने की तीव्र विनंतियों के होते हुए आपकी मात्र पांच दिन जयपुर में रुकने की भावना थी, इसी को दृष्टिगत रखते हुए यहां तपागच्छ श्रीसंघ के आगेवानों ने आपसे भीनमाल, पाली आदि स्थानों पर निरन्तर सम्पर्क बनाये रखा तथा जयपुर जैसे विशाल नगर में अधिक से अधिक समय तक रुकने की विनती करते रहे। आपने भी अत्यन्त कृपापूर्वक 17 दिन तक जयपुर में रुकने की आज्ञा प्रदान कर दी। समय सीमा के होते हुए भी आपने सुबह शाम निरन्तर विहार कर अपने आश्वासन को पूर्ण किया तथा निर्धारित समय पर हर प्रकार की मौसमी एवं शारीरिक प्रतिकूलताओं को सहन करते हुए भी निश्चित समय पर जयपुर पधारे। आपके ब्यावर आगमन पर भी श्रीसंघ के आगेवान दो गाड़ियों से आपकी सेवा में उपस्थित हुए और तब से ही जयपुर पहुँचने तक मार्ग में प्रतिदिन आपकी सेवा में उपस्थित होते रहे। यों तो महासमिति के समस्त पदाधिकारियों एवं सदस्यों ने अपना अपना दायित्व पूर्ण किया ही, श्री महेन्द्रकुमारजी दोसी को संयोजक नियुक्त कर वृहद् रूप में प्रचार-प्रसार सहित अन्य सभी प्रकार की व्यवस्थाओं को सुचारु रूप से संचालित करने का दायित्व सौंपा गया जिसे सभी ने बखूबी पूरा किया। आपके बड़े भ्राता श्री चन्द्रसिंहजी दोसी तो अजमेर से ही अपने वाहन सहित आपके साथ पद विहार करते हुए साथ रहे।

किशनगढ़, पाटण, दांतड़ी, दूदू, पालू, गाडोता होते हुए दि. 8 मई, 94 को आप बगरू में स्थित डागा फैक्ट्री पधारे तथा दि० 9 मई को तालेडाजी की फैक्ट्री में रुक कर सायंकाल कोठारी फार्म पधारे। मंगलवार दि० 10 मई, 94 को प्रातः आप सोडाला श्यामनगर में स्थित श्री रतनचन्दजी कास्टिया के प्लाट पर पधारे। भव्य समैय्या के साथ सोडाला श्रीसंघ द्वारा आपका वहुमान किया गया तथा प्रवचन भी श्री कांस्टियाजी के प्लाट पर ही हुआ। श्री जैन श्वे० संघ, सोडाला के मंत्री श्री अमृतमलजी भाण्डावत ने संघ की ओर से आपका बहुमान किया तथा सभा में उपस्थित विधान सभा की महिला एवं बाल कल्याण समिति की सभापति एवं विधायक श्रीमती तारा भण्डारी ने आचार्य भगवन्त की महिमा का गुणगान करने के साथ-साथ जैन जगत् की एकता तथा श्री सम्मेतशिखरजी के सम्बन्ध में उत्पन्न विवाद के समाधान हेतु आचार्यश्री द्वारा किए जा रहे प्रयासों का विस्तार से विवेचन किया। जयपुर रेंज के उपमहानिरीक्षक श्री पी० एन रछोइया ने आचार्यश्री का अभिनन्दन करते हुए बताया कि जब वे पाली में पुलिस अधीक्षक के पद पर कार्यरत थे और आचार्य भगवन्त पाली पधारे हुए थे तब वे उनके सम्पर्क में आए और तभी से वे उन्हें अपना आराध्य देव मानते हैं।

आचार्यश्री ने अपने प्रवचन में श्री सम्मेतशिखरजी तीर्थ के सम्बन्ध में विस्तार से जानकारी देते हुए कहा कि इस समस्या का सही समाधान दिगम्बर एवं श्वेताम्बर समाज के आपस में मिलकर निराकरण करने से ही हितकर हो सकता है। यदि दो

स्मरण करते हैं तो उन्हे स्वत ही मार्ग मिल जाता है और समस्याओ का समाधान हो जाता है।

समारोह के अध्यक्ष श्री के० एल० जैन ने आचार्यश्री का स्वागत करते हुए कहा कि आपके अल्प प्रवास काल से भी जयपुर का जैन जगत बहुत अधिक लाभान्वित हो सकेगा।

आचार्य भगवन्त ने अपने प्रवचन मे फरमाया कि प्रेम के माध्यम से ही परमात्मा बना जाता है। भगवान महावीर ने प्रेम की व्यापकता का अहिंसा के द्वारा सुन्दर परिचय दिया है। अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकान्त साधना के परम साधन हैं। परमात्मा के विचारो को अपने आचार से प्रगट करना ही वास्तविक धर्म है।

इस अवसर पर साध्वी श्री राजप्रज्ञाश्रीजी आदि ठाणा–3, साध्वी श्री सरस्वती श्रीजी आदि ठाणा–2 एव साध्वी श्री हेमप्रभाश्रीजी म० सा० की शिष्याये भी सभा मे उपस्थित थी।

सभा का सचालन सघ मत्री श्री मोतीलाल भडकतिया ने किया।

दि 13 एव 14 मई, 94

श्रोताओ की बृहद् सख्या तथा स्थानाभाव को ध्यान मे रखते हुए प्रवचन का स्थान परिवर्तन करना पडा। श्री शिवजीराम भवन के विशाल सभागार मे दोनो ही दिन आपके प्रवचन वही पर हुए। अपने प्रवचनो मे आपने नैतिक शिक्षा, विचारो के साथ-साथ आचरण की शुद्धता, सम्यग् दर्शन, ज्ञान, चारित्र की महत्ता, भौतिकवाद की चकाचौंध मे भी आध्यात्मिकता की प्रभुता, विज्ञान के द्रुतगामी प्रसार पर आध्यात्म का अकुश लगा कर विनाश से बचने की आवश्यकता आदि अनेक विषयो पर अनेक प्रकार के रूपको को आधार बना कर तत्वपूर्ण एव सारगर्भित प्रवचन दिए। जिस ने एक बार भी आपका प्रवचन सुन लिया वह प्रवचन श्रवण से वचित रहने को तैयार नही था।

अभिनन्दन समारोह (दि 15 मई, 94)

पूर्व घोषित कार्यक्रमानुसार रविवार, दि 15 मई, 94 को न केवल श्री जैन श्वे० तपागच्छ सघ अपितु श्वेताम्बर समाज के विभिन्न सघो, समुदायो, शिक्षण सस्थाओ आदि लगभग 20 सस्थाओ की ओर से सामूहिक अभिनन्दन समारोह का आयोजन तपागच्छ सघ के तत्वावधान मे श्री शिवजीराम भवन के सभागार मे रखा गया।

समारोह के मुख्य अतिथि राजस्थान के मुख्यमत्री श्री भैरोंसिह शेखावत थे तथा अध्यक्षता मा श्री हरिशकर भाभडा, अध्यक्ष राजस्थान विधानसभा ने की। पूर्व शिक्षा मत्री श्री हरिकुमार औदिच्य, पूर्व उच्च शिक्षा राज्य मत्री श्री रतनलाल जाट, मजीमगज के श्री दर्शनजी नवलखा, स्टॉक एक्सचेंज के अध्यक्ष श्री के० एल० जैन

विभिन्न संघों के पदाधिकारियों, बाहर से पधारे हुए मेहमानों सहित गणमान्य नागरिक हजारों की संख्या में उपस्थित थे। आचार्य भगवन्त के मंगलाचरण, श्री सुमति जिन श्राविका संघ के स्वागत गीत एवं श्री लक्ष्मीचन्दजी भंसाली के भजन से प्रारम्भ हुए कार्यक्रम ने मुख्य अतिथियों के आगमन के साथ गति पकड़ी।

सर्वप्रथम श्री जैन श्वे० तपागच्छ संघ के अध्यक्ष श्री हीराभाई चौधरी, उपाध्यक्ष श्री तरसेमकुमार जैन, संघ मंत्री श्री मोतीलाल भड़कतिया एवं समारोह के संयोजक श्री महेन्द्रकुमार दोसी ने आचार्य भगवन्त सहित सभी साधु साध्वींवृन्द को कामलियाँ बोहरा कर बहुमान किया। तदनन्तर संघ के अध्यक्ष श्री हीराभाई चौधरी ने माल्यार्पण एवं साफा पहना कर मुख्य अतिथि श्री शेखावत सा. एवं अध्यक्ष श्री भाभड़ा सा. का स्वागत किया। अन्य उपस्थित अतिथियों का माल्यार्पण कर स्वागत किया गया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि पद से सभा को सम्बोधित करते हुये मुख्य मंत्री महोदय ने कहा कि वे कई वर्ष पूर्व जब आपका कर्णाटक राज्य में चातुर्मास था उनके सम्पर्क में आये थे और उनके बताए हुए मार्ग का अनुसरण करके ही वह अपने जीवन में आने वाली समस्याओं का समाधान पाते है। आचार्य श्री द्वारा गुजरात राज्य के कौवा में सात करोड़ की लागत से स्थापित श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र के समान ही जयपुर में भी केन्द्र स्थापित करने की आवश्यकता प्रतिपादित करते हुए मुख्य मंत्रीजी ने कहा कि आपका जयपुर पधारना तभी सार्थक होगा और राजस्थान के लिए एक महान उपलब्धि भी तभी होगी जब इस प्रकार का प्राच्य विद्या केन्द्र यहाँ पर स्थापित हो। उन्होंने राज्य सरकार की ओर से इस हेतु निःशुल्क भूमि उपलब्ध कराने का आश्वासन दिया। उन्होंने कहा कि भूमि सरकार की, धन जैन समाज का तथा कार्य आचार्य श्री का होगा। इस पर श्री हीराभाई चौधरी मंगलचन्द ग्रुप ने तत्काल पाँच लाख रुपया देने तथा दो अन्य महानुभावों ने एक-एक लाख रुपया देने का आश्वासन दिया। सभा द्वारा आश्वस्त किया गया कि इस कार्य हेतु धन की कोई कमी नहीं आने दी जायेगी। आचार्य भगवन्त ने भी अपनी ओर से आश्वासन दिया कि वे जयपुर से जाने से पूर्व इसकी रूपरेखा को अन्तिम रूप देंगे। इस कार्य का दायित्व उन्होंने श्री के. एल. जैन को सौंपा तथा समस्त रूपरेखा बना कर कार्यारम्भ करने का दायित्व उन्हें सम्भलाया। श्री पुखराजजी लूणिया ने इस शोध संस्थान को उनके पास उपलब्ध प्राचीन ग्रन्थ भेंट करने की घोषणा की।

समारोह के अध्यक्ष मा. श्री हरिशंकर भाभड़ा, अध्यक्ष, राज. विधान सभा ने कहा कि आज की ज्वलन्त समस्याओं का समाधान जैन सिद्धान्तों को जीवन में उतारने से ही सम्भव है। जब तक नैतिक शिक्षा नही दी जायेगी, पश्चिमी सभ्यता के बढ़ते हुये प्रभाव से हम नई पीढ़ी को नहीं रोक सकेंगे जो हमारे भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के लिये अत्यन्त घातक सिद्ध होगा और अनेक प्रकार की समस्याओं को जन्म देगी।

विभिन्न सघो एव सस्थाओ के पदाधिकारियो मे श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ सघ के सघ मन्त्री श्री उत्तमचन्दजी वढेर, स्थानकवासी सघ के मन्त्री श्री उमरावमलजी चौरडिया, तेरापथी सभा के उपाध्यक्ष श्री राजकुमारजी वरडिया, श्रीमाल सभा के अध्यक्ष श्री दुलीचन्दजी टाक, मुलतान जैन सभा के मन्त्री श्री नेमकुमारजी जैन, श्री जैन श्वेताम्बर सघ जवाहरनगर के अध्यक्ष श्री उमरावचन्दजी सचेती, मानसरोवर सघ के श्री सुरेन्द्रसिहजी चौधरी, सोडाला सघ के श्री अमृतमलजी भाडावत, मालवीयनगर के श्री एस के राज भण्डारी, एस एस जैन सभा आदर्शनगर के श्री सुनीलकुमार जैन, श्री जैन युवा परिषद के श्री अशोककुमारजी वोहरा, श्री जैन सेवा परिषद के अध्यक्ष श्री राजेन्द्रकुमारजी श्रीमाल, युवा महासघ के श्री विजयकुमारजी कोठारी, आत्मानन्द जैन सेवक मण्डल के उपाध्यक्ष श्री नरेश मेहता, सुमति जिन श्राविका सघ की मत्री श्रीमती ऊषा साण्ड, शिक्षा समिति के मत्री श्री गुलावचन्दजी गोलेछा, वीर वालिका शिक्षण सस्था के सदस्य श्री भडकतिया ने भी आचार्य भगवन्त के अभिनन्दन मे अपने विचार प्रगट किये । श्री विचक्षण ज्ञान महिला मण्डल की सदस्याओ ने भक्ति गीत से अभिनन्दन किया ।

खरतरगच्छ आमनाय की परम विदूषी साध्वी श्री हेमप्रभा श्रीजी म सा ने अत्यन्त मार्मिक शब्दो में गुरु भगवन्त के प्रति अपने श्रद्धा सुमन समर्पित किये । साथ ही आज के दिन महान साध्वी श्री विचक्षण श्रीजी म सा की भी पुण्य तिथि थी । उनके जीवन पर भी आपने प्रकाश डाला एव अपने श्रद्धा सुमन समर्पित किये । इस अवसर पर उपाध्याय श्री धरणेन्द्रसागरजी म , मुनि श्री निर्मलसागरजी म , गणिवर्य श्री विनयसागरजी म , गणिवर्य श्री देवेन्द्रसागरजी म ने भी सभा को सम्बोधित कर कृतार्थ किया ।

इस अवसर पर श्री अरिहन्त सूरीजी म की समुदायवर्ती साध्वी श्री सरस्वतीश्रीजी म सा आदि ठाणा-2 का आगामी चातुर्मास जयपुर मे करने की जय बुलाई गई ।

अन्त मे सभा को सम्बोधित करते हुए आचार्य भगवन्त ने फरमाया कि सहन करे, साधना करे और सहयोग दे, भगवान महावीर की भाषा मे वही साधु कहलाता है । अभिनन्दन सिद्धान्तो का किया जाता है न कि किसी व्यक्ति का । परम्परा मे अभिनन्दन परमात्मा महावीर के उस सिद्धान्त का है । जयपुर के सभी समुदायो एव वर्गो द्वारा मेरा जो अभिनन्दन किया गया है वह वास्तव मे भगवान महावीर के सिद्धान्तो का ही अभिनन्दन है । मेरे जयपुर प्रवास काल मे जो प्रेम और सद्भावना मिली है, मेरी स्मृति मे वह जुडी रहेगी । निकट भविष्य मे वगाल तक की यात्रा पूर्ण कर वापिस लौटते समय जयपुर मे चातुर्मास करने की भावना रखता हूँ । आचार्यश्री के इस आश्वासन से हर्ष की लहर दौड गई एव जयकारो से सभागार गुजायमान हो गया ।

लगभग चार घण्टे तक चली इस विशाल सभा का संचालन तपागच्छ संघ के मंत्री श्री मोतीलाल भड़कतिया ने किया। तदनन्तर तपागच्छ संघ के तत्वावधान में श्री हीराभाई चौधरी मंगलचन्द ग्रुप की ओर से साधर्मी वात्सल्य का आयोजन तो रखा ही गया जिसमें हजारों भाई बहिनों ने इसका लाभ लिया, साथ ही आचार्य भगवन्त के आगमन के उपलक्ष में आयोजित पंचाह्निका महोत्सव के अन्तर्गत दिन में श्री सुमतिनाथ स्वामी जिनालय में श्री सर्वतोभद्र महापूजा पढ़ाने का लाभ भी आपने ही प्राप्त किया।

दिनांक 16 मई, 94

हर क्षेत्र एवं हर परिवार की हार्दिक अभिलाषा को दृष्टि में रखते हुए कि उन्हें भी पूरा लाभ आचार्यश्री के जयपुर प्रवास का मिल सके तथा जैन श्वेताम्बर आमनाय के सभी संघों को भक्ति का लाभ प्राप्त हो इसलिए आचार्यश्री के प्रवचनों की व्यवस्था विभिन्न स्थानों पर करने का निश्चय किया गया।

सर्वप्रथम श्री जैन श्वेताम्बर श्रीमाल सभा के तत्वावधान में मोतीडूगरी रोड स्थित दादाबाड़ी में आपका प्रवचन रखा गया। हर जगह श्रोताओं की अपार संख्या को अपने प्रवचनों से लाभान्वित करने हेतु आचार्य भगवन्त ने भी इसकी सहर्ष स्वीकृति प्रदान करदी तथा स्वास्थ्य की प्रतिकूलता के उपरान्त भी आप वहाँ पर पधारे। श्रीमाल सभा की ओर से कामलियां बोहरा कर आपका अभिनन्दन किया गया तथा साधर्मी भक्ति का भी सुन्दर आयोजन किया गया।

दिनांक 17 मई, 94

इसी क्रम में 17 मई को प्रात: आप श्री मुलतान जैन श्वेताम्वर सभा के प्रांगण में पधारे। भगवान महावीर स्वामी के भव्य जिनालय के दर्शनों के पश्चात् आपने सभा को सम्बोधित किया। कामलियां बोहरा कर आपका अभिनन्दन किया गया। श्री कपिलभाई शाह इस समारोह के मुख्य अतिथि थे।

चूंकि आज के दिन श्री ऋषभदेव स्वामी जिनालय (प्रसिद्ध नाम आगरा वालों के मन्दिर) का वार्षिकोत्सव था अत: भीषण गर्मी में तपती भूमि की परवाह नहीं करते हुए भी आप वापिस शहर में पधारे तथा वार्षिकोत्सव में सम्मिलित हुए।

सायंकाल आपने श्री भागचन्दजी छाजेड़, ओसवाल अगरबत्ती वालों के यहाँ पर पधार कर रात्रि विश्राम वहीं किया।

दिनांक 18 मई, 94

प्रात: ही आपने यहाँ से विहार कर घाट मन्दिर पर पधार कर प्रभु दर्शन कर श्रीमती जनककंवर बाई गोलेछा, अध्यक्ष, श्री खरतरगच्छ संघ के निवास गोलेछा

गार्डन पधार कर पगलिए किए । तदुपरान्त आप जवाहरनगर स्थित श्री महावीर साधना केन्द्र पधारे । शोभा यात्रा के साथ आपका समैय्या जवाहरनगर सघ द्वारा किया गया । यहाँ पर भी आपका पावन प्रवचन हुआ । समारोह मे मुख्य अतिथि पूर्व न्यायाधिपति जस्टिस भगवतीप्रसाद बेरी तथा विशिष्ट अतिथि श्री उमरावमलजी चोरडिया, जवाहरात के प्रसिद्ध व्यवसायी तथा स्थानकवासी सघ के सघमत्री थे । तदनन्तर सघ द्वारा साधर्मी वात्सल्य का आयोजन सम्पन्न हुआ ।

सायकाल आप ओ० टी० एस० मे श्री वीरेन्द्रसिहजी मेहता के निवास स्थान पर पधारे । रात्रि विश्राम भी वही हुआ ।

दिनाक 19 से 23 मई, 94

अगले दिन प्रात आपका मालवीय नगर मे पदार्पण हुआ जहाँ भव्य जुलूस के साथ आपका शखेश्वरम् मे शुभागमन हुआ । पाँच दिन तक आपका प्रवास यही पर रहा और मन्दिरजी मे प्रतिष्ठा का कार्य सम्पन्न कराया ।

मालवीय नगर की प्रतिष्ठा का विस्तृत विवरण "शखेश्वरम् हुआ तीर्थ" नामक श्री हीराचन्दजी वैद के लेख मे दिया गया है । (पृष्ठ स 28-29 देखें)

दिनाक 24 मई, 94

प्रात द्वारोद्‌घाटन के पश्चात् आपने मालवीय नगर से विहार किया तथा प्रात श्री पूनमचन्दजी पुष्पकुमारजी बुरड के निवास स्थान पर तथा साय श्री चन्द्रसिहजी दोसी के यहाँ पधारे जहाँ पर आपके प्रवचन हुए तथा साधर्मी वात्सल्य के आयोजन कर सघ भक्ति की गई ।

दिनांक 25 मई, 94

वसुन्धरा कालोनी और बरकत नगर से विहार कर आप प्रात इस श्रीसघ के नवनिर्मित श्री सीमन्धर स्वामी जिनालय, जनता कालोनी मे पधारे, तत्पश्चात आप श्री बाबूलाल तरसेमकुमार जैन के निवास स्थान अक्षयराज पर पधारे । यहाँ पर भी आपका प्रवचन हुआ तथा साधर्मी वात्सल्य का आयोजन सम्पन्न हुआ ।

सायकाल आप श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन पधारे जहाँ पर सघ द्वारा आयोजित स्वरोजगार महिला प्रशिक्षण शिविर का आपने अपनी अमृत वाणी से शुभारम्भ कर शिविरार्थियो को आशीवचन प्रदान किया ।

दिनांक 26 मई, 94

दिनांक 26 मई, 94 को प्रातः 5.30 बजे आपने दिल्ली के लिए विहार प्रारम्भ किया। आपको विदाई देने के लिए सैकड़ों की संख्या में भाई वहिन उपस्थित थे।

प्रथम विश्राम में आप चतुर्विध संघ के सैकड़ों भाई बहिनों के साथ आमेर पधारे। यहाँ पर श्री पतनमलजी मनोहरमलजी आदि लुनावत परिवार की ओर से नन्दीश्वर द्वीप की पूजा पढ़ाई गई तथा साधर्मी वात्सल्य किया गया।

सायंकाल आप कूकस पधारे जहाँ पर श्री ज्ञानचन्दजी सुभाषचन्दजी छजलानी परिवार की ओर से संघ भक्ति सहित आपकी वैय्यावच्च की व्यवस्था थी।

दिनांक 27 से 29 मई, 94

27 तारीख को प्रातः आप बोहरा फार्म पधारे जहाँ पर श्री जीवणलालजी बोहरा ज्वैलर्स एम्पोरियम वालों की तरफ से संघ भक्ति एवं वैय्यावच्छ की व्यवस्था थी। सायं श्री ज्ञानचन्दजी कर्णावट ने अचरोल में वैय्यावच्च किया।

दिनांक 28 को लखेरा एवं मनोहरपुरा में श्री इन्दरचन्दजी राजकुमारजी चौरड़िया की ओर से तथा दिनांक 29 को शाहपुरा में श्री हीराचन्दजी मोतीचन्दजी वैद परिवार की ओर से संघ भक्ति एवं वैय्यावच्च की व्यवस्था थी।

इस प्रकार आचार्य भगवन्त के जयपुर प्रबास काल की चिरस्मरणीय दिनचर्या ने पूर्णता प्राप्त की।

महिला स्वरोजगार प्रशिक्षण शिविर

जैसा कि आपको विदित है कि वर्ष 1991 के चातुर्मास में विराजित गच्छाधिपति आचार्यदेव श्रीमद् विजय इन्द्रदिन्न सूरीश्वरजी म० सा० की सद्प्रेरणा से साधर्मी सेवा कोष की स्थापना की गई थी। इसमें प्राप्त कुल रकम स्थायी कोप मे जमा है तथा उससे प्राप्त ब्याज की राशि से साधर्मी भाई वहिनों की जरूरतों की पूर्ति की जा रही है।

इसी क्रम में यह निश्चय किया गया था कि प्रति वर्ष शिविर के माध्यम से इस प्रकार का प्रशिक्षण दिया जाय कि व्यक्ति स्वावलम्वी वन सके। इसी के अन्तर्गत पिछले तीन वर्षो से शिविरों का आयोजन कर सैंकडों महिलाओं को प्रशिक्षित किया गया।

इस वर्ष भी ग्रीष्मावकाश को दृष्टिगत रखते हुए 25 मई, 94 को महिला स्वरोजगार प्रशिक्षण शिविर का शुभारम्भ किया गया। आचार्य श्री पद्मसागर सूरीजी

म० सा० के आशीर्वाद से इसका श्रीगणेश हुआ । सुश्री सरोज कोचर को शिविर सयोजिका नियुक्त किया गया । इस शिविर मे लगभग 1700 से अधिक बालिकाओ एव महिलाओ ने प्रशिक्षण प्राप्त किया । शिविर सम्बन्धी विस्तृत विवरण पृथक से प्रकाशित किया जा रहा है ।

शिविर का समापन दिनाक 10 जुलाई, 94 को हुआ । इस समारोह के मुख्य अतिथि मा० श्री कैलाश मेघवाल, गृह मत्री, राजस्थान, थे तथा समारोह की अध्यक्षता श्रीमती जतनबाई गोलेछा, अध्यक्ष, श्री खरतरगच्छ सघ, ने की । समारोह मे विजेताओ को तो पुरस्कृत किया ही गया, शिविर मे प्रशिक्षण देने हेतु नि स्वार्थ भाव से किए गए अथक प्रयत्नो के लिए सभी प्रशिक्षिकाओ को सम्मानित किया गया । शिविर के कुशल सचालन, सयोजन एव साकार रूप देने मे की गई सेवाओ के लिए सुश्री सरोज कोचर की जितनी प्रशसा की जाय उतनी ही कम है ।

स्थायी गतिविधियाँ

गत वर्ष की कतिपय उल्लेखनीय घटनाओ का सक्षिप्त दिग्दर्शन प्रस्तुत करने के पश्चात् अब मैं श्रीसघ की स्थायी गतिविधियो का विवरण प्रस्तुत कर रहा हूँ ।

श्री सुमतिनाथ स्वामी जिनालय

श्रीसघ के इस मूल जिनालय का कार्य वर्ष भर सुचारू रूप से सचालित होता रहा । पूर्व की भाति इस वर्ष भी पूजन सामग्री भक्तिकर्ताओ द्वारा उपलब्ध कराई गई । आठ भेटकर्ताओ को विविध प्रकार की पूजा सामग्री वर्ष भर उपलब्ध कराने का लाभ आपसी सहमति से दिया गया ।

इस वर्ष देव द्रव्य खाते मे 4,94,315)03 रु० की आय तथा 68,200)39 रु० का व्यय हुआ । इसी कोष से जनता कालोनी मन्दिर निर्माण मे 4,50,992)60 रु० व्यय किए गए ।

जिनालय का वार्षिकोत्सव ज्येष्ठ सुदी 10, स० 2051 दिनाक 19-6 94 को धूमधाम मे मनाया गया । पहले सत्तरह भेदी पूजा पढाई गई जिसमे ध्वजा चढाने का लाभ चढावे से श्री भँवरलालजी मूथा परिवार ने प्राप्त किया । तदनन्तर साधर्मी वात्सल्य श्रीसघ की ओर से हुआ ।

ज्येष्ठ सुदी 8, स० 2051 दिनाक 17-6 94 को परम पूज्य आचार्य श्री विजयानन्द सूरीश्वरजी म० सा० की पुण्य तिथि भी मनाई गई ।

भगवान श्री धर्मनाथ स्वामी की प्रतिमाजी विराजमान कराने का कार्य भी पूर्ण हो गया जिसका विवरण ऊपर दिया गया है । मूल गम्भारे मे सोने का काम क्षीण

एवं क्षतिग्रस्त होने से इसका जीर्णोद्धार भी कराया गया है तथा ऊपर चढ़ने के लिए सीढ़ियाँ बन जाने से पूजा करने वालों को काफी सुविधा हो गई है। पूजा करने वालों की संख्या में भी आशातीत अभिवृद्धि हुई है।

श्री सीमन्धर स्वामी मन्दिर, जनता कॉलोनी

इस जिनालय के निर्माण का कार्य भी पूरा हो गया है। विगत विवरण में तोरण द्वार युक्त दरवाजा लगाने का उल्लेख किया गया था। यह कार्य भी पूर्ण हो गया है तथा मारबल का भव्य तोरण द्वार बन गया है, प्लास्टिक शीट्स की छांवन भी लगा दी गई है। पूजनीय एवं दर्शनीय देवी देवताओं की प्रतिमाजी की प्रतिष्ठा भी हो गई है। महासमिति के निर्वाचन के पश्चात् अब श्री मोतीचन्दजी वैद को इस जिनालय का संयोजक नियुक्त किया गया है जिनकी देखरेख में इस जिनालय की व्यवस्था सुचारू रूप से सम्पन्न हो रही है।

सेवा पूजा का कार्य वर्ष भर सुचारू रूप से सम्पन्न होता रहा है। वार्षिकोत्सव मगसर बदी 12, दिनांक 10-12-93 को पूज्य उपाध्याय श्री धरणेन्द्रसागरजी म० सा० एवं साध्वी श्री देवेन्द्रश्रीजी म० सा० की निश्रा में धूमधाम से मनाया गया। साधर्मी वात्सल्य भी सुचारू रूप से सम्पन्न हुआ।

इस जिनालय के अन्तर्गत 9,813)00 रु० की आय तथा 25,676)40 रु० का व्यय हुआ। जीर्णोद्धार खाते में 57,383)00 रु० की आय तथा 4,50,992)69 रु० का व्यय हुआ है।

श्री ऋषभदेव स्वामी का मन्दिर, बरखेड़ा

इस जिनालय की पूजा का कार्य भी वर्ष भर सुचारू रूप से होता रहा है। निर्वाचन के पश्चात् श्री उमरावमलजी पालेचा ही पुनः संयोजक एवं श्री ज्ञानचन्दजी टुकलिया स्थानीय व्यवस्थापक नियुक्त किए गए हैं।

मन्दिरजी के बाहर आई हुई जमीन इस श्रीसंघ को प्राप्त नहीं होना इसकी प्रगति में सबसे बड़ी बाधा बनी हुई थी। इस जमीन को प्राप्त करने के लिए वर्षो से प्रयास जारी थे जो इस वर्ष फलीभूत हो गए। 37,000) रु० में उक्त भूमि को क्रय कर रजिस्ट्री करा ली गई है तथा खण्डित झोंपड़ी को गिरा कर भूमि को समतल करा दिया गया है। शिवदासपुरा से बरखेड़ा ग्राम तक पहुंचने के लिए सड़क निर्माण का कार्य भी हो गया है तथा नव-निर्मित सड़क से आवागमन प्रारम्भ हो गया है।

यहाँ से 7,414)25 रु० की आय तथा 11,183) रु० का व्यय हुआ है। तीर्थ का वार्षिकोत्सव फाल्गुन सुदी 8, सं० 2050 रविवार दिनांक 20 मार्च, 1994 को

धूमधाम से मनाया गया। श्रीसंघ की ओर से आयोजित साधर्मी वात्सल्य का आयोजन भी सुचारू रूप से सम्पन्न हुआ।

श्री शान्तिनाथ स्वामी जिनालय, चन्दलाई

इस जिनालय का कार्य भी वर्ष भर सुचारू रूप से सम्पन्न होता रहा। यहाँ पर कराए गए जीर्णोद्धार कार्यों का उल्लेख विगत विवरण मे दिया गया था। शेष कार्य को पूर्ण कराने हेतु इस वर्ष के बजट मे चालीस हजार रु० का और प्रावधान किया गया है।

जिनालय का वार्षिकोत्सव मगसर बुदी 5, स० 2050 शनिवार, दि० 4-12-93 को मनाया गया।

निर्वाचन के पश्चात् श्री ज्ञानचन्दजी भण्डारी को इस जिनालय का सयोजक नियुक्त किया गया है।

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ उपाश्रय

श्री आत्मानन्द जैन सभा भवन एव श्री ऋषभदेव स्वामी जिनालय, मारूजी के चौक के परिसर मे स्थित तपागच्छ उपाश्रय की व्यवस्था भी सुचारू रूप से सम्पन्न होती रही है।

सभा भवन के बाहर स्थित बॉलकोनी पर प्लास्टिक शीट्स की छावन एव रेलिंग लगा कर पूर्ण रूपेण सुरक्षित बना दिया गया है। आवश्यक रन-रोगन सफेदी आदि का कार्य भी कराया गया है।

श्री वधमान आयम्बिल शाला

श्री वधमान आयम्बिल शाला की व्यवस्था भी वर्ष भर सुचारू रूप से सचालित होती रही है। इस सीगे मे 60,011)90 रु० की आय तथा 40,151)15 रु० का व्यय हुआ है। आसोजी एव चैत्री ओलीजी की आराधनायें भी सम्पन्न हुई। आसोजी ओली कराने का लाभ श्री प्रकाशचन्दजी मेहता परिवार ने तथा चैत्री ओलीजी कराने का लाभ एक सद्गृहस्थ ने प्राप्त किया।

श्री जैन श्वेताम्बर भोजनशाला

आचार्य श्रीमद् विजय कलापूर्ण सूरीश्वरजी म० सा० की सद्प्रेरणा से स्थापित इस भोजनशाला की व्यवस्था भी सुचारू रूप से सचालित होती रही है। आय-व्यय मे भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। 1,00,421) रु० की आय के मुकाबले 85,991)30 रु का व्यय हुआ है। इसका उपयोग करने वालो मे भी अभिवृद्धि हुई है। स्थायी कोष मे 4,006) रु० प्राप्त हुए है।

श्री समुद्र इन्द्रदिन्न साधर्मी सेवा कोष

इस कोष एवं इसके अन्तर्गत आयोजित शिविर आदि के बारे में ऊपर उल्लेख किया जा चुका है । वर्ष भर तक साधर्मी भाइयों को भरण पोषण, बच्चों की पढ़ाई, चिकित्सा आदि कार्यों के लिए राशि उपलब्ध कराई गई है । इस खाते में ब्याज एवं गोलख से 43,367)37 रु० की आय तथा 17,338)55 रु० का व्यय हुआ है । वास्तविक जरूरतमंदों के बारे में सूचना प्राप्ति की अपेक्षा रहती है ।

श्री साधारण खाता

सबसे अधिक व्यय भार युक्त यह सीगा निरन्तर टूट से मुक्त चला आ रहा है । इस वर्ष भी 2,97,416)35 रु० के खर्चे के मुकाबले 3,63,457)10 रु० की आय हुई है । गुरु भगवन्तों का निरन्तर आवागमन रहता है जिनके वैय्यावच्च का पूरा लाभ संघ को प्राप्त होता है । विगत वर्षों के मुकाबले यद्यपि साधु-साध्वीवृन्द का आवागमन कम रहा फिर भी 30,283)48 रु० का व्यय हुआ है लेकिन श्री अतुलभाई, दलपत-भाई शाह दीक्षा महोत्सव धार्मिक ट्रस्ट, अहमदाबाद से 51,000) रु० की राशि श्री बाबूलाल कीर्तिलाल शाह के मार्फत तथा 11,000) रु० उनके स्वयं के योगदान से इस खाते में प्राप्त हो जाने से इस वर्ष की आय 63,910)30 रु० हो गई । ट्रस्ट के इस योगदान के लिए उन्हें हार्दिक धन्यवाद ।

पुस्तकालय, वाचनालय एवं धार्मिक पाठशाला

उपरोक्त तीनों ही व्यवस्थाओं का कार्य संचालन सुचारू रूप से होता रहा है । नई पुस्तकों एवं ग्रंथों की खरीद भी की गई है । धार्मिक पाठशाला की सार्थकता अभिभावकों द्वारा अपने बच्चों को अधिक से अधिक संख्या में भेज कर धार्मिक शिक्षा दिलाने पर ही अवलम्बित है ।

उद्योगशाला एवं सिलाईशाला

उद्योग शाला एवं सिलाई शाला का कार्य भी वर्ष भर सुचारू रूप से संचालित होता रहा है । प्रशिक्षित शिक्षिका के कारण अब काफी अधिक संख्या में महिलायें इसका लाभ उठा रही हैं । नियमित उद्योग शाला प्रारम्भ कराने का विचार स्थानाभाव के कारण मूर्त रूप नहीं ले सका है ।

'मणिभद्र' के 35वें अंक का प्रकाशन

यह बहुत सन्तोष का विषय है कि इस संघ की मुख्य स्मारिका निरन्तर 35 वर्षों से सुचारू रूप से प्रकाशित हो रही है । 35वां अंक भी यथा समय प्रकाशित हुआ । इस अंक के लिए भी अनेक आचार्य भगवन्त, साधु साध्वी एवं विद्वानों के

प्रशसा पत्र प्राप्त हुए । इस अक के प्रकाशन मे 26,252) रु० की आय एव 27,144) रु० का व्यय हुआ । इस अक के लिए विज्ञापन द्वारा आर्थिक सहयोग एकत्रित करने मे श्री चन्द्रसिहजी दोसी एव श्री राजकुमारजी चोरडिया का उल्लेखनीय योगदान रहा था ।

श्री सुमति जिन श्राविका सघ

पूज्य साध्वी श्री देवेन्द्रश्रीजी म० सा० के चातुर्मास की इस श्रीसघ को उल्लेखनीय देन श्राविकाओ मे जागृति पैदा करना रहा है । यो तो श्राविका सघ पूर्व मे भी यहाँ पर था लेकिन इसे और अधिक गतिमान एव सक्रिय बनाने के लिए पूज्य साध्वीजी म० सा० ने प्रेरणा प्रदान की तथा विधिवत् रूप से सघ का गठन किया । श्रीमती लाडबाई शाह को इसका सरक्षक, श्रीमती सुशीलादेवी छजलानी को अध्यक्ष एव श्रीमती ऊषा साण्ड को मत्री नियुक्त किया गया । महिलाओ को पूजा पढाने का प्रशिक्षण देने का महत्वपूर्ण कार्य श्रीमान धनरूपमलजी सा० नागौरी ने सम्पन्न किया है । पूजा पढाने से लेकर विविध सामाजिक गतिविधियो मे श्राविकाओ का अच्छा योगदान प्राप्त होता है । साध्वी श्री सरस्वतीश्रीजी म० सा० की उपस्थिति ने इसको और अधिक सम्बल प्रदान किया है ।

श्री आत्मानन्द जैन सेवक मण्डल

मण्डल की गतिविधिया भी वर्ष भर सचालित होती रही है । इसका विवरण पृथक से प्रकाशित किया जा रहा है ।

सघ की आर्थिक स्थिति

सघ की आर्थिक स्थिति उत्तरोत्तर सुदृढ एव गतिमान है । श्रीसघ की समग्र आय 13,63 664)90 रु० हुई है । खर्च मे निरन्तर वृद्धि होने पर भी शुद्ध बचत 2,82 544)18 रु० सामान्य कोष मे हस्तान्तरित की गई है । सामान्य कोष 21,59,083)55 रु० हो गया है जिसका विस्तृत विवरण तथा वर्ष भर का अकेक्षित आय व्यय विवरण पृथक से प्रकाशित किया जा रहा है । उक्त सामान्य कोष मे स्थायी कोष की राशि भी सम्मिलित है जिसका अन्यत्र उपयोग नही किया जा सकता ।

कर्मचारीवर्ग को भी पर्याप्त वेतन वृद्धि दी गई है तथा विविध सीगो मे व्यय भार भी बढ रहा है फिर भी महासमिति को आशा है कि भक्तिकर्ताओ, दानदाताओ का उदारमना सहयोग इसी प्रकार प्राप्त होता रहेगा तथा श्रीसघ उत्तरोत्तर उन्नति की ओर अग्रसर रहेगा ।

धन्यवाद ज्ञापन

विगत वर्ष के कार्यकलापों में प्राप्त सहयोग के लिए महासमिति श्रीसंघ के समस्त महानुभावों के प्रति हार्दिक आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित करती है जिनके सहयोग से ही श्रीसंघ की समस्त प्रकार की गतिविधियों का संचालन सुचारू रूप से संचालित ही नहीं होता रहा अपितु कई मामलों में तो कीर्तिमान स्थापित हुए। महासमिति ने तो उसे सौंपे हुए दायित्व का निर्वहन किया है जिसमें हुई भूलों के लिए वह क्षमाप्रार्थी है एवं उपलब्धियों के लिए श्रीसंघ को ही श्रेय प्रदान करती है।

प्रसंगवश आए हुए कतिपय भक्तिकर्ताओं, दानदाताओं, पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं आदि का नामोल्लेख ही हो सका है लेकिन योगदानकर्ताओं की शृंखला विस्तृत है। ज्ञात-अज्ञात सभी के प्रति महासमिति अपना आभार प्रगट करती है। कर्मचारी वर्ग का सहयोग भी उल्लेखनीय है ही जिन्होंने पूर्ण निष्ठा, लगन एवं परिश्रम से अपने-अपने कार्यो को पूरा किया है।

श्री राजेन्द्रकुमारजी चतर, सी० ए० की सेवाओं के प्रति विशेष रूप से आभार व्यक्त करना महासमिति अपना दायित्व समझती है जो निरन्तर श्रीसंघ के अंकेक्षण, आय-कर आदि कार्यो को सम्पादित कर रहे हैं तथा अपने मार्ग-दर्शन से लेखा विवरणों को सुव्यबस्थित एवं नियमानुकूल बनाए रखने में सहयोग प्रदान कर रहे है। श्री जी० सी० इलेक्ट्रिक वालों का सहयोग पूर्ववत् रहा है जिसके लिए उन्हें भी हार्दिक धन्यवाद।

समापन

वर्ष 1993-94 का संक्षिप्त कार्य विवरण एवं अंकेक्षित आय-व्यय विवरण तथा चिट्ठे के साथ यह विवरण आपकी सेवा में प्रस्तुत करते हुए मैं अपना स्थान ग्रहण कर रहा हूँ।

जय वीरम्!

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ सघ,

आय-व्यय खाता

कर निर्धारण

गत वर्ष का खर्च	व्यय		इस वर्ष का खर्च
85,670 85	श्री मन्दिर खर्च खाते नामे		68,200 39
	श्री आवश्यक खर्च	42,009 20	
	श्री विशेष खर्च	26,191 19	
6,495 00	श्री साधर्मी सेवा कोष खाते नामे		17,338 55
28,815 50	श्री जनता कालोनी मन्दिर खर्च खाते नामे		25,676 40
4,19,022 25	श्री जनता कॉलोनी मन्दिर जीर्णोद्धार खाते नामे		4,50,992 60
5,999 85	श्री बरखेडा मन्दिर खर्च खाते नामे		11,183 00
1,170 50	श्री बरखेडा मन्दिर जीर्णोद्धार खाते नामे		—
4,410 00	श्री बरखेडा जोत खाते खर्च खाते नामे		4,785 00
111 00	श्री माणिभद्र भण्डार खर्च खाते नामे		30 00
150 00	श्री गुरुदेव खर्च खाते नामे		—
—	श्री शासन देवी खर्च खाते नामे		—
—	श्री सात क्षेत्र खर्च खाते नामे		—

घीवालों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर

1-4-93 से 31-3-94 तक

वर्ष 1994-95

गत वर्ष की आय	आय		इस वर्ष की आय
5,95,328.21	**श्री मन्दिर खाते जमा**	3,86,760.73	4,94,315.03
	श्री भण्डार खाता	4,693.25	
	श्री पूजन खाता	1,800.00	
	श्री किराया खाता	97,533.80	
	श्री ब्याज खाता	2,484.25	
	श्री चंदलाई मन्दिर	1,043.00	
	श्री जोत खाता		
39,698.30	**श्री साधर्मी सेवा कोष खाते जमा**	42,451.20	43,367.37
	ब्याज	916.17	
	गोलख		
23,793.60	श्री जनता कॉलोनी मन्दिर खाते जमा		9,813 00
27,247 00	श्री जनता कॉलोनी मन्दिर जीर्णोद्धार खाते जमा		57,383.00
13,957.25	श्री बरखेड़ा मन्दिर खाते जमा		7,414 25
154.00	श्री बरखेड़ा मन्दिर जीर्णोद्धार खाते जमा		—
2,121.00	श्री बरखेड़ा जोत खाते जमा		—
53,442.65	श्री माणिभद्र भण्डार खाते जमा		41,438 60
2,923.40	श्री गुरुदेव खाते जमा		2,010 00
3,873.70	श्री शासन देवी खाते जमा		3,491.60
2,245.90	श्री सात क्षेत्र खाते जमा		7.00

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ संघ,

आय-व्यय खाता

कर निर्धारण

गत वर्ष का खर्च	व्यय		इस वर्ष का खर्च
45,511 26	श्री ज्ञान खर्च खाते नामे		31,187 00
	श्री आवश्यक खर्च	24,702 50	
	श्री विशेष खर्च	6,484 50	
1,97,585 33	श्री साधारण खर्च खाते नामे		2,97,416 35
	श्री आवश्यक खर्च	97,026 10	
	श्री विशेष खर्च	2,00,390 25	
15,047 75	श्री शिविर खाते नामे		1,455 00
45,591 86	श्री वैयावच्च खाते नामे		30,283 48
3,600 00	श्री जनता कॉलोनी साधारण खाते नामे		—
67,483 19	श्री भोजनशाला खर्च खाते नामे		85,991 30
7,225 00	श्री जीव दया खर्च खाते नामे		15,165 50
32,293 75	श्री आयम्बिल खर्च खाते नामे		40,151 15
	श्री आवश्यक खर्च खाते नामे	40,151 15	

घीवालों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर

1-4-93 से 31-3-94 तक

वर्ष 1994-95

गत वर्ष की आय	आय		इस वर्ष की आय
70,816.05	**श्री ज्ञान खाते जमा**		83,763.05
	श्री भेंट खाता	73,234.35	
	श्री ब्याज खाता	10,528.70	
2,53,083.50	**श्री साधारण खाते जमा**		3,63,457.10
	श्री भेंट खाता	1,76,057.75	
	श्री किराया खाता	8,849.00	
	श्री माणिभद्र प्रकाशन	26,252.00	
	श्री ब्याज खाता	34,907.85	
	श्री जनता कॉलोनी साधारण	34,102.00	
	श्री साधर्मी वात्सल्य	83,288.50	
5,242.00	**श्री शिविर खाते जमा**		—
20,307.00	**श्री वैयावच्च खाते जमा**		63,910.30
—	**श्री जनता कॉलोनी साधारण खाते जमा**		—
64,647.50	**श्री भोजनशाला खाते जमा**		1,00,421.00
9,122.45	**श्री जीव दया खाते जमा**		20,640.70
48,706.10	**श्री आयम्बिल खाते जमा**		60,011.90
	श्री भेंट खाता	10,601.90	
	श्री ब्याज खाता	29,510.00	
	श्री किराया खाता	19,900.00	

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ सघ,

आय-व्यय खाता

कर निर्धारण

गत वर्ष का खच	व्यय	इस वप का खच
967 50	श्री आयम्बिल फोटो खाते नामे	1,265 00
2,79,533 93	श्री शुद्ध बचत सामान्य कोष में हस्तान्तरित की गई	2,82,544 18
12,45,486 61		13,63,664 90

वास्ते जैन श्वेताम्बर

स्थान जयपुर
दिनाक 1 8 94

हीरा भाई चौधरी
अध्यक्ष

मोतीलाल भडकतिया
सघ मत्री

दानसिंह कर्णावट
अथ मत्री

घीवालों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर

1-4-93 से 31-3-94 तक

वर्ष 1994-95

गत वर्ष की आय	आय	इस वर्ष की आय
8,777.00	श्री आयम्बिल फोटो खाते जमा	12,221.00
12,45,486.61		13,63,664.90

तपागच्छ संघ, जयपुर

वास्ते चतर एण्ड कं०
चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट
(आर० के० चतर)
प्रोप्राइटर

आर० सी० शाह
हिसाब निरीक्षक

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ सघ,

चिट्ठा

गत वर्ष की रकम	दायित्व		चालू वर्ष की रकम
13,22,003 08	श्री सामान्य कोष		16,04,547 26
	गत वर्ष की जमा रकम	13,22,003 08	
	इस वर्ष की रकम ग्राय-व्यय खाते से लायी गयी	2,82,544 18	
13,654 00	श्री जोत खाते		13,805 00
	गत वर्ष की रकम	13,654 00	
	इस वर्ष की ग्रावक	151 00	
19,231 00	श्री ज्ञान स्थाई		19,231 00
1,19,802 00	श्री ग्रायम्बिल स्थाई मिति खाते जमा		1,29,138 00
	गत वर्ष की रकम	1,19,802 00	
	इस वर्ष की ग्रावक	9,336 00	
22,171 05	श्री श्राविका सघ खाते जमा		22,171 05
1,860 00	श्री सम्वत्सरी पारना कोष खाते जमा		1,860 00
3,844 30	श्री नवपद पारना		3,844 30
51,000 00	श्री ग्रायम्बिल जीर्णोद्धार खाते जमा		51,000 00
678 94	श्री रमेशचन्द भाटिया का जमा		678 94
2,74,233 00	श्री साधर्मी सेवा कोष		2,74,233 00

घीवालों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर

1-4-93 से 31-3-94 तक

गत वर्ष की रकम	सम्पत्ति		चालू वर्ष की रकम
	श्री स्थाई सम्पत्तियां		
26,748.45	लागत पिछले वर्ष के अनुसार		26,748.45
74,373.26	**श्री विभिन्न लेनदारियां**		42,195 25
	श्री उगाई	618.25	
	श्री अग्रिम खाता	40,850.00	
	राजस्थान इलैक्ट्रिसिटी बोर्ड	727.00	
	श्री बैंकों में जमा		
16,00,499.95	(क) **स्थायी जमा**		17,92,346 50
	स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर	14,03,541.50	
	देना बैंक	3,88,805.00	
	(ख) **चालू खाता**		
1,435.04	स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर		1,435 04
1,48,427.83	(ग) **बचत खाता**		2,93,266 08
	बैंक ऑफ बड़ौदा	295 17	
	स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर	2,90,534.55	
	दी बैंक ऑफ राजस्थान लि.	2,436.36	

श्री जैन श्वेताम्बर तपागच्छ सघ,

चिट्ठा

गत वप की रकम	दायित्व		चालू वर्ष की रकम
34,569 00	श्री भोजनशाला स्थाई खाते जमा		38,575 00
	गत वप का जमा	34,569 00	
	इस वप की ग्रावक	4,006 00	
18,63,046 37			21,59,083 55

वास्ते जैन श्वेताम्बर

स्थान जयपुर
दिनाक 1-8 94

हीरा भाई चौधरी
अध्यक्ष

मोतीलाल भडकतिया
सघ मत्री

दानसिंह कर्णावट
अथ मत्री

घीवालों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर

1-4-93 से 31-3-94 तक

गत वर्ष की रकम	सम्पत्ति	चालू वर्ष की रकम
11,561.85	श्री रोकड़ बाकी	3,092.23
18,63,046.37		21,59,083 55

तपागच्छ संघ, जयपुर

वास्ते चतर एण्ड कं०
चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट
(आर० के० चतर)
प्रोप्राइटर

आर० सी० शाह
हिसाब निरीक्षक

Auditors' Report

I (FORM NO 10 B)

(See Rule 17 b)

AUDIT REPORT UNDER SECTION 12A(b) OF THE INCOME TAX ACT 1961 IN THE CASE OF CHARITABLE OR RELIGIOUS TRUSTS OR INSTITUTIONS

We have examined the Balance Sheet of SHRI JAIN SHWETAMBER TAPAGACH SANGH Gheewalon Ka Rasta, Jaipur as at 31st March 1994 and the Income and Expenditure Account for the year ended on that date which are in agreement with the books of account maintained by the said Trust or Institutions

We have obtained all the information and explanations which to the best of our knowledge and belief were necessary for the purpose of audit In our opinion proper books of accounts have been kept by the said Sangh subject to the comments that old immovable properties Jewellery have not been valued and included in the Balance Sheet and Income and Expenditures are accounted for on receipt basis as usual

In our opinion and to the best of our information and according to information given to us the said accounts subject to above give a true and fair view —

(1) In the case of the Balance Sheet of the state of affairs of the above named trust/institutions as at 31st March 1994 and

(2) In the case of the Income and Expenditure account of the profit or loss of its accounting year ended on 31st March 1994

The prescribed particulars are annexed hereto

Jaipur
Date 1 8 94

For CHATTER & COMPANY
Chartered Accountants

(R K CHATTER)
Proprietor
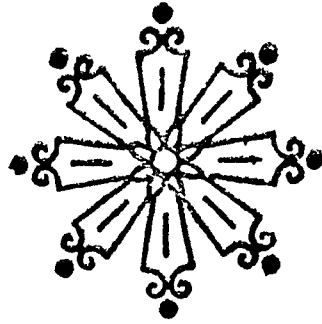
हार्दिक शुभ कामनाओं सहित :

क्रोध पाशविक बल है, क्षमा दैविक ।
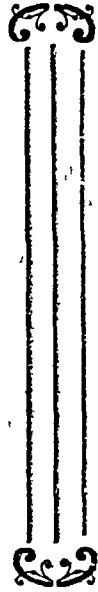
THAKUR DASS KEWAL RAM JAIN

JEWELLERS

HANUMAN KA RASTA

JAIPUR - 302 003

Phone : Office 563071, 45292
Resi. 48686, 48504, 45412, 40706

Gram : 'CHATONS'

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित :

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित :
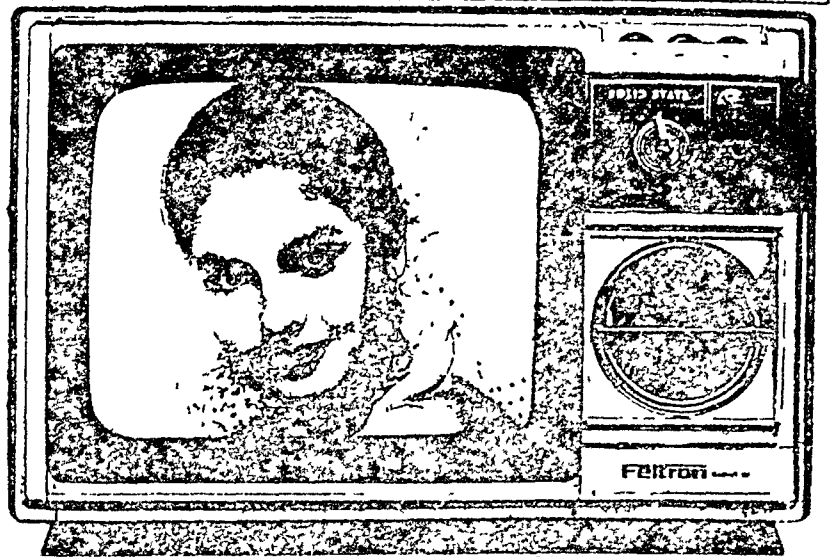
With best compliments

from :

Rajasthan Chamber
of
Commerce & Industry

JAIPUR

Phone : 561419, 565163
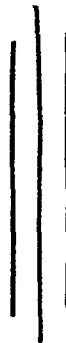
S. K. Mansinghka
President

K. L. Jain
Hony. Secy.